भाषातत्त्वदीपिका

अर्थात्

हिन्दी भाषा का व्याकरण

जिसको

मध्य देश के साहब डैरेक्टर कोरेश की आज्ञानुसार

हरिगोपालोपाध्याय बी० ए० मध्य देशीय असिस्टंट इन्स्पैक्टर ने बनाया

और

अब उक्त महाराज की आज्ञा से देवीप्रसाद हेडमास्टर

माडलस्कूल अमीनाबाद ने यथोचित रूपान्तर

किया

———000———

स्थान लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर के यन्त्रालय में छपा

सेपटेम्बर सन् १८७३ ईसवी

———o———

Bháshá Tatwa Dípiká

OR

A HINDÍ GRAMMAR

FOR

THE USE OF NATIVE STUDENTS

BY

Hari Gopálopádhyáya, B. A.

Assistant Inspector of Schools Central Provinces

Revised by

PANDIT DEVÍ PRASÁDA

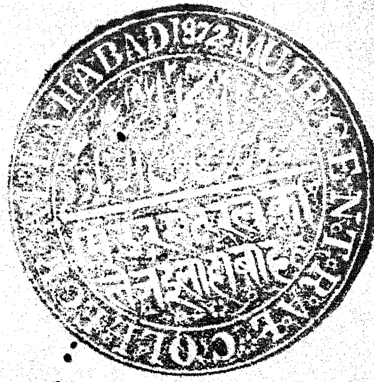
Head Master Model School Amínábád

———o———

LUCKNOW:

PRINTED AT THE NAVALA KISORA—PRESS.

September. 1873.



भूमिका

प्रकट होय कि हिन्दी भाषा के व्याकरण पर कई एक ग्रन्थ बने हैं, एक आदम साहब कृत व्याकरण, दूसरा भाषाचन्द्रोदय, तीसरा भाषा तत्वबोधिनी, यद्यपि इन ग्रन्थों में सामान्यत: विवेचन अच्छी प्रकार किया है तथापि कई एक स्थलों में अशुद्धता, न्यूनता, अप्रयोजनता देखकर, बहुविद्या निपुण, गुणग्राहक, दयानिधान, परोपकारक, मध्य देश के पौरजानपदीय शालोपदेशक श्रीयुत कालिन् ब्रौनिङ्ग साहब एम० ए० इन्स्पैक्टर जनरल वीरेशने निर्दोष, उत्तम, व्याकरण की रचना के निमित्त, सागर हैस्कूल के संस्कृत प्रोफ़ेसर पण्डित हरिगोपालोपाध्याय, बी० ए० को यथा विधि अपने इस रचना के सङ्कल्प से प्रबुद्ध कर साधन भूत दो तीन पुस्तकें कृपा कीं ; और पूर्वोक्त उपाध्यायजी ने उनकी गुण ग्राहकता से आनन्दित होय, बहु परिश्रम से फार्बस साहब कृत व्याकरण, दादो साहब कृत मरहटी व्याकरण, हावर्ड कृत, अर्नाल्ड कृत ग्रन्थ, मोरेल कृत वाक्य पृथक्करण और एथरिङ्गटन साहब कृत व्याकरण आदि ग्रन्थों के सविचारावलोकन रूप मथन से सारांश भूत नवनीत निकाल यथामति भाषातत्वदीपिका रचना कर गत तीन वर्ष के अवसर में कि उक्त श्री युत, कालिन् ब्रौनिङ्ग साहब एम० ए० अवध देशीय पाठशालाध्यक्ष वीरेश हैं नीराजन किया ; और श्रीमहाराज ने अति आनन्दित होय, अवध देश, पश्चिमोत्तर देश और मध्यदेशादि में इसको प्रकाशित और प्रचार कराय ग्रन्थ कार का पारितोषिकादि प्रतिष्ठा से परिश्रम सफल कराया; परन्तु महाशय वीरेश को अवध देशीय यात्रा में विद्यार्थियों की परीक्षा और विद्वज्जनों के परिभाषण, समागम से इस ग्रन्थ के किसी २ स्थल में काठिन्यतादि विदित हुई और व्याकरण के चतुर्थ भाग छन्दोबोधका भी अति अनुराग हुवा तो ग्रन्थकार से इसकी संक्षेप रचना का अभिप्राय प्रकट किया; जोकि उनको कार्य्यान्तरासक्त होने से इस अवसर में सावकाश न था महाशय से प्रार्थना की कि आपही कृपा करें ॥

इस कारण महाशय की अनुमति से पण्डित देवीप्रसाद हेडमास्टर माडल स्कूल अमीनाबाद की द्वारा अब यह ग्रन्थ अगम्य कठिन स्थलों से निर्द्वन्द्व और छन्दोबोध से अलङ्कृत होय विद्यार्थियों के श्रृङ्गार के लिये पुन: मुद्रित होता है, निश्चय है कि विद्वज्जन अङ्गीकार करें ॥

आज्ञा ॥

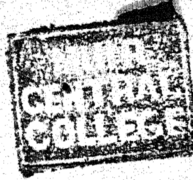
जो कि यह पुस्तक सर्व साधारण है अर्थात् नार्मल तहसीली और देहाती सब पाठशालाओं में व्याकरण का बोधक है इसलिये महाशय वीरेश की आज्ञा है कि देहाती और तहसीली शाला के पाठक विद्यार्थियों का अधिकार देखकर सन्धि, समास, आदि प्रकरणों को ग्रन्थ की परि समाप्ति में पढ़ावें और छन्दो बोध की देहाती में आवश्यकता नहीं ॥

इति

——000——

सूचीपत्र ॥

इति



श्री सच्चिदानन्द मूर्त्तये नमः ॥

भाषा तत्त्वदीपिका

अर्थात्

हिन्दी भाषा का व्याकरण ॥



व्याकरण का लक्षण और उसके भाग ॥

प्रश्न व्याकरण क्या है और उससे क्या लाभ होताहै ?

उत्तर व्याकरण एक शास्त्र है कि जिससे शुद्ध बोलने और लिखने का ज्ञान होताहै ॥

प्र० इस शास्त्र के मुख्य भाग कौन २ हैं ?

उ० वर्ण विचार, शब्द विचार, वाक्य रचना और छंदो रचना ये चार भाग हैं ॥

---

१ पाठ

वर्ण विचार और वर्णों की गणना ॥

प्र० वर्ण विचार में किसका वर्णन कियाजाताहै ?

उ० वर्ण विचार में वर्णों का लक्षण, संयोग, उच्चारणस्थान, और सन्धि इनका वर्णन कियाजाताहै ॥

प्र० वर्णों के कितने भेद हैं ?

उ० स्वर और व्यञ्जन ये दो भेद हैं ॥

प्र० स्वर किन वर्णों को कहतेहैं ?

उ० स्वर उन वर्णों को कहतेहैं कि जो केवल आपही बोले जाँय, और उनको संस्कृत में अच् कहतेहैं; जैसा अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ *ऌ, ए, ऐ, ओ, औ, इन तेरह अक्षरों को स्वर कहतेहैं ॥

---

* ॡ यह अक्षर देवनागरी वर्णमाला का नहीं है, संस्कृत शब्द में भी यह अक्षर कभी नहीं आता, फिर हिन्दी में कहां से आवेगा ? इसलिये ॡ वर्ण को यहां नहीं लिखा ॥

प्र० व्यञ्जन किनको कहतेहैं ?

उ० व्यञ्जन उनको कहतेहैं कि जिनका उच्चारण स्वरों की सहाय बिना न होसके, और उनको संस्कृत में हल् कहतेहैं ॥

	व्यञ्जन	संज्ञा.		व्यञ्जन	संज्ञा.
१	क् ख् ग् घ् ङ्	कवर्ग.	२	च् छ् ज् झ् ञ्	चवर्ग.
३	ट् ठ् ड् ढ् ण्	टवर्ग.	४	त् थ् द् ध् न्	तवर्ग.
५	प् फ् ब् भ् म्	पवर्ग.	६	य् र् ल् व्	अन्तस्थवर्ण.
७	श् ष् स् ह्	ऊष्मवर्ण.			

इन ३३ अक्षरोंको व्यञ्जन कहते हैं और इनका स्पष्ट उच्चारण स्वरके योग से, होता है; जैसा, क् + अ = क, अ + क् = अक् इत्यादि ॥

इन व्यञ्जनों में (अ) मिलाकर शिक्षक लोग व्यञ्जन बतलाते हैं, जैसे क, ख, ग, घ, ङ, इत्यादि ॥ इस तरह से व्यञ्जन बताने में कुछ हानि नहीं, पर व्यञ्जनों के मूल रूप में अ केवल स्पष्ट उच्चारण के लिये जोड़ा जाता है, यह ध्यान में रखना चाहिये+ ॥

---

२ पाठ

स्वरों के भेद ॥

प्र० स्वरों में कौन २ ह्रस्व, कौन २ दीर्घ, वा संयुक्त हैं ?

उ० अ इ उ ऋ ऌ — ये पाँच ह्रस्व हैं,

आ ई ऊ ॠ — ये चार दीर्घ हैं,

ए ऐ ओ औ — ये चार संयुक्त हैं और दीर्घ भी कहाते हैं, इनको संयुक्त कहने का कारण सन्धि प्रकरण में स्पष्ट किया जायगा ॥

इनमें से अ इ उ ऋ ऌ ए ऐ ओ औ ये मूल स्वर अथवा प्रधान स्वर कहातेहैं ॥

प्र० स्वरों का और कोई भेद है ?

उ० स्वरों का तीसरा भेद प्लुत है; ह्रस्व दीर्घ और प्लुत ये भेद मात्रा से होते हैं, और मात्रा का अर्थ परिमाण अर्थात् उच्चारण काल का मापना जाना जाता है ॥

\+ किसी अक्षर के आगे कार जोड़ने से वह अक्षर समझा जाताहै जैसा अकार कहने से अ समझते हैं ॥

प्र० मात्रा किसको कहतेहैं ?

उ० ह्रस्व स्वरके उच्चारण में जो काल लगता है उसे एक मात्रा कहतेहैं, और दीर्घ स्वर के उच्चारण में ह्रस्व से दूना काल लगता है और प्लुत के उच्चारण में तिगुना काल लगता है, इसी से ह्रस्व को एक मात्रिक दीर्घ को द्विमात्रिक और प्लुतको त्रिमात्रिक कहतेहैं ॥

प्र० प्लुतका उच्चारण किस जगह होता है ?

उ० जहाँ किसी को दूर से पुकारते हैं वहाँ प्लुत बोला जाता है; जैसा अय कृष्णा ३ कृष्णारे ३, यहाँ कृष्ण शब्दके अंत्य स्वरको और अरे के अंत्य एकार को प्लुत बोलतेहैं और उसकी पहचान के लिये ३ का अंक लिख देते हैं ॥

प्र० स्वर निरनुनासिक वा सानुनासिक हैं या नहीं ?

उ० सब स्वर निरनुनासिक और सानुनासिक के भेद से दो प्रकार के होते हैं ॥ जिनका उच्चारण केवल मुखसे होवे वे निरनुनासिक, जैसा अ आ, और जो नासिका सहित मुखसे बोले जांय, वे सानुनासिक, जैसा अँ आँ, इ० ॥ सानुनासिक का चिन्ह ँ यह है ॥

प्र० अनुस्वार और विसर्ग किनको कहते हैं ?

उ० नासिका से जिसका उच्चारण होता है और जिसको बताने के लिये स्वर के सिर पर (ं) ऐसा चिन्ह करते हैं उसे अनुस्वार जानो, अनुस्वार का उच्चारण स्वरके उच्चारण के पश्चात् होता है स्वर के आगे जो (:) ऐसा दो बिन्दुओं का चिन्ह लिखा जाता है, उसे विसर्ग कहते हैं, और कंठ से वह बोला जाता है; इस से स्पष्ट है कि इन दोनों चिन्हों का उच्चारण स्वरके साथ होने से दो प्रकार के रूप हुए ॥ जैसा अ अं अः, इ इं इः ॥

प्र० हिन्दी भाषामें कौन स्वर आतेहैं ?

उ० ऋ ॠ ऌ इन तीनों को छोड़ शेष दश स्वर हिन्दी भाषा में आतेहैं और ये तीन केवल संस्कृत में आतेहैं ॥

---

३ पाठ

वर्ण माला ॥

प्र० व्यञ्जन के साथ स्वर मिलने से कैसा रूप बनताहै ?

उ० व्यञ्जन के साथ स्वर मिलने से वर्णमाला बनती है, पर इस मेल में अ को छोड़ शेष स्वरों के रूप बदल जातेहैं ॥ स्वरके (ा) इस रूपान्तर को मात्रा कहतेहैं, ये मात्रा रूप व्यञ्जन को जोड़ने से वर्णमाला बनजातीहै;

जैसा व्यञ्जन को स्वर की मात्रा मिलने से सिद्ध अक्षर हुआहै॥

क्	अ	-	क
क्	आ	ा	का
क्	इ	ि	कि
क्	ई	ी	की
क्	उ	ु	कु
क्	ऊ	ू	कू
क्	ऋ	ृ	कृ
क्	ॠ	ॄ	कॄ
क्	ऌ	ॢ	कॢ
क्	ए	े	के
क्	ऐ	ै	कै
क्	ओ	ो	को
क्	औ	ौ	कौ
क्	अं	ं	कं
क्	अः	:	कः

प्र० व्यञ्जनों में से कौन २ व्यञ्जन हिन्दी में नहीं आतेहैं ?

उ० ङ् ञ् ण् ष् ये चार नहीं आते केवल संस्कृत में आतेहैं, परन्तु हिन्दी भाषा में संस्कृत शब्द बहुत मिले हैं इस लिये इनका जानना अवश्य है ॥

४ पाठ

संयुक्ताक्षर

प्र० संयोग किसे कहतेहैं ?

उ० दो अथवा तीन आदि व्यञ्जनों के मिलने को संयोग कहते हैं जैसा, शब्द, माहात्म्य, यहाँ ब् द् का संयोग और त्म्य का संयोग जाना, ऐसे अक्षरोंको संयुक्ताक्षर कहते हैं ॥

प्र० संयुक्ताक्षर कैसे लिखा जाताहै ? +

उ० संयुक्ताक्षर सामान्यत: ऐसा लिखा जाताहै कि पहिले व्यञ्जन में काना न होवे तो उसका आधा रूप लिखकर उसके नीचे वा कभी २ आगे जैसा द् + य, = द्य, ड् + य = ड्य, और काना होवे तो गिराकर उस वर्णके आगे दूसरा स्वर युक्त अक्षर पूरा लिखा जाता है ङ् + ग = ङ्ग, ग् + म = ग्म, इत्यादि ॥ दूसरे वर्णमें स्वर न होवे तो उसका भी पूर्वोक्त रीतिसे आधा रूप लिख कर तीसरा स्वर युक्त वर्ण लिखते हैं जैसा त् + म् + य = त्म्य ल् + प् + य = ल्प्य इत्यादि; ङ छ ट ठ ड ढ ये अक्षर संयोगकी आदिमें संपूर्ण लिखे जाते हैं ॥ जैसा ट्म, ङ्क, ठ्र इ० ॥ क्ष और ज्ञ को मूल व्यञ्जनों में गिनते हैं, पर ये अक्षर संयुक्त हैं, क्योंकि क् और ष मिलकर क्ष, ज् + ञ ज्ञ बने हैं, इसलिये इनको संयुक्ताक्षर कहना चाहिये ॥

प्र० र् का संयोग कैसे होताहै ?

उ० जिस व्यञ्जन में काना नहीं है उसके नीचे (्र) ऐसा चिन्ह लगाते हैं जैसा ड्र ढ्र इत्यादि; और काना वाले व्यञ्जन को (⁄) ऐसा चिन्ह जोड़ते हैं जैसा प् + र = प्र, और कभी दूसरे अक्षर की आदिमें मिले तो उसके सिर पर र्‍ ऐसा चिन्ह करतेहैं और उसे रेफ बोलते हैं जैसा गर्व वर्ण सर्व इत्यादि ॥

+ वर्ण माला के अक्षर दो स्वरूप से लिखे जाते हैं (१) खड़ी पाई समेत यथा क, ख, ग, घ, च, ज, झ, ण, त, थ, ध, न, प, फ, ब, भ, म, य, ल, व, ष, स, और (२) बिना खड़ी पाई के जैसा ङ, छ, ट, ठ, ड, ढ, द, र, ह, खड़ी पाई के अक्षर जब किसी अक्षर में मिलतेहैं तो वे अपने आधे स्वरूप से मिलतेहैं परन्तु अन्त के अक्षर का स्वरूप पूराही बना रहताहै जैसे स्पष्ट शब्द में दोनों रूप दिखाई देतेहैं, और बिना खड़ी पाई के र को छोड़ सब अक्षर जब किसी अक्षर में मिलते हैं तो वे अपने पूरेही रूप से लिखे जाते हैं, जैसे भुट्टा परन्तु र सदैव आधेरूप से लिखा जाताहै जैसे कर्म्म आदि, निरक्षर अक्षर अगले वर्ण में मिलताहै ॥

प्र० (श) को व्यञ्जन में जोड़ना होवे तो कैसा लिखतेहैं ?

उ० (ॠ) श, इन दोनों रूपों से मिलातेहैं जैसा प्रश्न प्रश्न ॥

---

५ पाठ

स्थान विचार ॥

प्र० वर्णोंका उच्चारण स्थान किसे कहतेहैं ?

उ० मुख के जिस भाग से जिन वर्णोंका उच्चारण होवेगा, उसी भागको उन वर्णोंका स्थान कहतेहैं ॥

प्र० किन २ अक्षरों के कौन २ स्थान हैं ?

उ० अ आ क ख ग घ ङ ह और विसर्ग इनका कंठ स्थान है और कंठ्य कहलातेहैं ॥

इ ई च छ ज झ ञ य श ये तालु से बोले जाते हैं और तालव्य कहातेहैं ॥

ऋ ॠ टवर्ग र ष ये मूर्द्धा अर्थात् तालु से कुछ ऊपर जीभ लगाने से बोले जातेहैं और मूर्द्धन्य कहाते हैं ॥

लृ तवर्ग ल स इन का दंत स्थान है और दंत्य कहलातेहैं ॥

उ ऊ पवर्ग इनका ओष्ठ स्थान है और ओष्ठ्य कहातेहैं ॥

ए ऐ कंठ और तालुसे बोले जातेहैं और उनको कंठ तालव्य कहतेहैं ॥

ओ औ कंठ और ओठ से बोले जातेहैं और कंठौष्ठ्य कहातेहैं ॥

व दांत और ओष्ठ से बोला जाताहै और दंतोष्ठ्य कहाताहै ॥

ङ ञ ण न म ये स्ववर्गोक्त स्थान और नासिका से बोले जातेहैं और अनुनासिक कहातेहैं ॥

---

६ पाठ

सन्धि विचार

स्वर सन्धि ॥

*यह सन्धि प्रकरण संस्कृत भाषा के व्याकरण का भाग है; शुद्ध हिन्दी में सन्धि नहीं होतीहै; पर हिन्दी में संस्कृत शब्द बहुत हैं और तुलसी दास कृत रामायणादि ग्रन्थोंमें सन्धियाँ बहुतसी आतीहैं, इस लिये मुख्य मुख्य नियम जानना अवश्य है ॥

प्र० सन्धि किसे कहतेहैं ?

उ० दो वर्ण परस्पर निकट आकर एक रूप से वा रूपान्तर से मिलें तो उस मेल को सन्धि कहतेहैं ॥

प्र० सन्धि कितने प्रकार की है ?

उ० स्वरसन्धि और व्यञ्जन सन्धि ये दो प्रकार हैं ॥

प्र० स्वरसन्धि और व्यञ्जन सन्धि किनको कहतेहैं ?

उ० दो स्वरोंकी सन्धि स्वरसन्धि कहातीहै; व्यञ्जन और स्वरकी सन्धि, वा दो व्यञ्जनों की व्यञ्जन सन्धि कहातीहै ॥

प्र० स्वरसन्धि किस प्रकार से होतीहै ?

उ० अ इ उ ऋ ह्रस्व अथवा दीर्घ इनके परे सजातीय ह्रस्व वा दीर्घ स्वरयथा क्रमसे आवें तो दोनों मिलकर दीर्घ आदेश होताहै; ॥ जैसा

अ वा आ + अ वा आ=आ	इ वा ई + इ वा ई=ई
उ वा ऊ + उ वा ऊ=ऊ	ऋ वा ॠ + ऋ वा ॠ=ॠ

उदाहरण

मूलस्थिति	सिद्धरूप	मूलस्थिति	सिद्धरूप
ज्ञान + अभाव	=ज्ञानाभाव	धर्म+आज्ञा	=धर्माज्ञा
गंगा + अर्पण	=गंगार्पण	सीता+आश्रय	=सीताश्रय
हरि + इच्छा	=हरीच्छा	करी+इन्द्र	=करीन्द्र
भानु + उदय	=भानूदय	भू + ऊर्ध्व	=भूर्ध्व
पितृ + ऋण	=पितॄण इत्यादि		

* पाठक को उचित है कि इस प्रकरण को पुस्तकके अन्त में विचार पूर्वक सिखा करे ॥

प्र० विजातीय स्वरोंकी सन्धि कैसी होतीहै ?

उ० अ अथवा आ इनके आगे इ अथवा ई आवे तो दोनों मिलकर आदेश होता है; इसी तरह उ वा ऊ आवे तो ओ; ऋ वा ॠ आवे तो अ ऌ होवे तो अल्; ए वा ऐ आवे तो ऐ; ओ वा औ होवे तो औ; आदे होतेहैं ॥ जैसा

अ वा आ + इ वा ई = ए	अ वा आ + उ वा ऊ = ओ
अ वा आ + ऋ वा ॠ = अर्	अ वा आ + ऌ = अल्
अ वा आ + ए वा ऐ = ऐ	अ वा आ + ओ वा औ = औ

उदाहरण

देव + इन्द्र = देवेन्द्र	रमा + ईश = रमेश
सूर्य + उदय = सूर्योदय	महा + ऊर्मिला = महोर्मिला
महा + ऋषि: = महर्षि:	तव + ऌकार = तवल्कार
एक + एक = एकैक	महा + ऐश्वर्य = महैश्वर्य
चित्त + औदार्य्य = चित्तौदार्य्य	गंगा + ओघ = गंगौघ इत्यादि

प्र० स्वरोंमें से अ आ को छोड़ कर बाक़ी स्वरों के परस्पर आगे पी होने से कैसी सन्धि होती है ?

उ० इ वा ई, उ वा ऊ, ऋ वा ॠ, ऌ, इनके परे विजातीय स्व होवे तो य् व् र् ल् ये आदेश पूर्व इकारादिकों के स्थान में क्रम से होते है

इ वा ई +	अ वा आ = य वा या	उ वा ऊ +	अ वा आ = व ० वा
	उ वा ऊ = यु वा यू		इ ० ई = वि० वी
	ऋ वा ॠ = यृ वा यॄ		ऋ ० ॠ = वृ ० व
	ए वा ऐ = ये वा यै		ए ० ऐ = वे ० वै
	ओ वा औ = यो वा यौ		ओ ० औ = वो० वौ
ऋ वा ॠ +	अ वा आ = र वा रा	ऌ० +	अ ० आ = ल ० ला
	इ ० ई = रि ० री		इ ० ई = लि० ली
	उ ० ऊ = रु ० रू		उ ० ऊ = लु ० लू
	ए ० ऐ = रे ० रै		ए ० ऐ = ले ० लै
	ओ ० औ = रो ० रौ		ओ ० औ = लो० लौ

उदाहरण

प्रति + उत्तर = प्रत्युत्तर　　सु + आगत = स्वागत
देवी + आश्रय = देव्याश्रय　　मनु + अन्तर = मन्वन्तर
पितृ + आज्ञा = पित्राज्ञा　　लृ + आकृति = लाकृति

ए, ऐ, ओ, औ, से परे कोई स्वर आवे तो उनके स्थान में क्रम से अय्, आय्, अव्, आव्, आदेश होते हैं, इन आदेशों का पहिला स्वर पीछे के व्यञ्जन के साथ मिलता है; जैसा

ए + अ, आ, इ० = अय, अया इ० ॥ ओ + अ, आ इ० = अव, अवा इ० ॥
ऐ + अ, आ, इ० = आय, आया इ० ॥ औ + अ, आ इ० = आव, आवा इ० ॥

उदाहरण

शे + अन = शयन,　　नै + अक = नायक
गो + उत्साह = गवुत्साह,　　पौ + अक = पावक

---

८ पाठ

व्यञ्जन सन्धि ॥

प्र० व्यञ्जनों की सन्धि के नियम और उदाहरण अलग २ कहिये ?

उ० सुनो ॥ १ ॥ प्रथम नियम (क्, च्, ट्, प्,) इनके परे कोई स्वर अथवा वर्ग का तीसरा वा चौथा वर्ण वा य् र् ल् व् ह् इनमें से कोई आवे तो क्रम से अपने २ वर्ग के तीसरे ग्, ज्, ड्, ब्, वर्णमें बदल जाते हैं; जैसा वाक् + ईश = वागीश, दिक् + भाग = दिग्भाग, अप्, + ज = अब्ज षट्, + रिपु = षड्रिपु, अच् + आदि = अजादि, अच् + वत् = अज्वत् इ० ॥

॥ २ ॥ त्, द्, के आगे च्, छ्, आवे, तो त् और द् के स्थानमें च् आदेश; ज्, झ्, होवे तो ज्; ट्, ठ्, आवे तो ट्; ड्, ढ्, हों तो ड् आदेश होते हैं; जैसा एतत् + चन्द्र मण्डल = एतच्चन्द्र मण्डल, महत् + चक्र = महच्चक्र, महद् + छत्र = महच्छत्र, तत् + टीका = तट्टीका, उद् + डान = उड्डान, सत् + जन = सज्जन इ० ॥

॥ ३ ॥ न् के परे ज् वा झ् आवे तो ञ्; और ट् वा ठ् आवे तो ण् आदेश होते हैं; जैसा महान् + जय = महाञ्जय, महान् + डमरु = महाण्डमरु इ० ॥

॥ ४ ॥ न् के पीछे च् वा ज् होवे तो न को ञ् आदेश होता है; जैसा याच् + ना = याञ्चा यज् + न = यज्ञ इ० ॥

॥ ५ ॥ त्, थ्, के पूर्वमें ष होवे तो ट्, ठ्; आदेश क्रम से होते हैं जैसा आकृष् + त = आकृष्ट, ष ष् + थ = षष्ठ इ० ॥

॥ ६ ॥ त्, द्, वा न्, के परे ल्, आवे तो उनके स्थान में ल आदेश होता है, और न के पूर्वाक्षर के सिर पर ँ ऐसा चन्द्र विन्दु लिखते हैं; जैसा तत् + लीला = तल्लीला, महान् + लाभः = महाँल्लाभः इ० ॥

॥ ७ ॥ त्, द्, वा न्, इनके आगे श् होवे तो श् की जगह में छ् और त् वा द् के स्थान में च, और न् के स्थान में ञ् आदेश होते है; जैसा सत् + शास्त्र = सच्छास्त्र, तद् + शरीर = तच्छरीर, धावन् + शशः = धावञ्छशः इ० ॥

॥ ८ ॥ वर्गों के अंत्य वर्ण को छोड़ कर बाकी जो वर्ण हैं, उनसे आगे ह् आवे तो पूर्व वर्ण के वर्ग का चौथा वर्ण विकल्प से ह् कार के स्थान में होता है; जैसा ॥

वाक् + हरि ग् घ् = वाग्घरि अथवा वाग्हरि
अच् + हल् ज् झ = अज्झल् वा अज्हल्
षट् + हृदय ड् ढ् = षड्ढृदय वा षड्हृदय
तत् + हवि द् ध् = तद्धवि वा तद्हवि
अप् + हरण ब् भ् = अब्भरण वा अब्हरण

॥ ९ ॥ म् के परे अंतस्थ वर्ण वा ऊष्म वर्ण आवे तो म् अनुस्वार में बदल जाता है; जैसा सम् + योग = संयोग इ० ॥

॥ १० ॥ म् के आगे स्पर्श वर्ण होवे तो म् विकल्प से अनुस्वार अथवा उत्तर व्यञ्जन के वर्ग के अनुनासिक वर्ण में बदल जाता है; जैसा सम् + कल्प = संकल्प वा सङ्कल्प - मृत्यु म् + जय = मृत्युंजय वा मृत्युञ्जय इत्यादि ।

॥ ११ ॥ अनुस्वार के आगे कवर्गादि वर्ण होवे तो उसी वर्ण के वर्ग का अंत्य वर्ण विकल्प से आदेश होता है; जैसा सं + गत = सङ्गत, सं + ग्राम = सङ्ग्राम, सं + धि = सन्धि सं + पात = सम्पात इ० ॥ कभी २ संगत, संग्राम, संधि, संपात ऐसा भी लिखते हैं ॥

१२ ॥ त् के आगे कोई स्वर अथवा ग्, घ्, द्, ध्, ब्, भ्, य्, र्, व्, ह्, इनमें से कोई आवे तो द् में बदल जाता है; जैसा जगत् + आदि = जगदादि; भवत् + दर्शन = भवद्दर्शन, तत् + भय = तद्भय, महत् + भाग्य = महद्भाग्य, तत् + गत=तद्गत, इत्यादि ॥

॥ १३ ॥ वर्गों के प्रथम वर्णों के आगे न्, म् इनमें से कोई वर्ण होवे तो पूर्व वर्ण को अपने वर्ग का तीसरा या अन्त्यवर्ण आदेश विकल्प से होगा, मय मात्र परे होवे तो अन्त्यवर्ण नित्य होगा; जैसा वाक् + मन =वाङ्मन वा वाग्मन षट् + मास = षड् मास, वा षण्मास तत् + नेच = तन्नेच वा तद्नेच, तत् + मय = तन्मय, तत् + मात्र = तन्मात्र इत्यादि ॥

॥ १४ ॥ छ से पूर्व स्वर होवे तो छ को पूर्व में च् आगम होता है; + जैसा आ + छादन = आच्छादन आगम मित्रवत् अवयव रूपी होता है॥

॥ १५ ॥ विसर्ग के आगे च्, छ्, ट्, ठ्, त्, थ्, आवें तो क्रमसे श् ष् स् आदेश विकल्प से होते हैं; जैसा निः + शेष = निश्शेष, निः + संशय = निस्संशय, निः + चय = निश्चय, निः + षंढ = निष्षंढ, कः + ट = कष्ट इत्यादि ॥ कभी २ निः शेष निः संशय ऐसा लिखते हैं ॥

॥ १६ ॥ विसर्ग के पूर्व अ होवे और वर्ग का तीसरा चौथा या पांचवा वर्ण वा य् र् ल् व् ह् इन में से कोई वर्ण उसके आगे आवे, तो अ सहित विसर्ग के स्थान में ओ आदेश होता है; जैसा मनः + भाव = मनोभाव; तेजः + मय = तेजो मय इ० ॥

॥ १७ ॥ अ और आ को छोड़ कर शेष स्वरों में से कोई स्वर विसर्ग के पीछे आवे और उसके परे कोई स्वर अथवा वर्ग का तीसरा चौथा वा पांचवा वर्ण और यरल वह इनमें से कोई वर्ण रहे, तो विसर्ग को र आदेश होता है; जैसा निः + धन, = निर्धन, दुः + नीत = दुर्नीत इत्यादि ॥ दो र् एकत्र आवें तो पूर्व रका लोप होकर उसके पीछे का स्वर दीर्घ होता है; + जैसा, निर् + रस, = नीरस, निर् + रोगी = नीरोगी इत्यादि ॥

॥ १८ ॥ ऋ ॠ र् ष् इनसे आगे न होवे अथवा इन के बीच में स्वर,

+ मित्र के समान नज़दीक रहता है ॥

+ ये शब्द हिन्दी में प्रायः ह्रस्व लिखे जाते हैं यथा निरस, निरोगी ॥

कवर्ग, पवर्ग, अनुस्वार और य् व् ह् इनमें से कोई एक वा दो तीन वर्ण आवें तो भी न को ण आदेश होता है; जैसा विस्तीर् + न = विस्तीर्ण, विकीर् + न = विकीर्ण, भर् + अन = भरण, पोष् + अन = पोषण, अर्प + अन = अर्पण, इत्यादि इन शब्दों को भाषा में अपभ्रंशमें, विस्तीर्न, विकीर्न, भरन, पोखन, अर्पन, ऐसा नकारोच्चारण से बोलते हैं ॥

१ पाठ

शब्दविचार

शब्दों केप्रकार ॥

प्र० शब्द विचार किसे कहते हैं ?

उ० शब्दों की जाति, साधन, व्युत्पत्ति और दूसरे शब्दोंके साथ उनका संबंध इनके विवेचन को शब्द विचार कहते हैं ॥

प्र० शब्द किसे कहते हैं ?

उ० मुख से निकला हुआ सार्थ ध्वनि अर्थात् जिसका अर्थ होवे, उसे शब्द कहते हैं; और वह लिखा हुआ भी शब्द कहाता है, सार्थक कहने से अनर्थक शब्द अर्थात् अर्थ रहित ध्वनि इस व्याकरण में बेकाम है ॥

प्र० शब्द कितने प्रकार के हैं ?

उ० शब्द दो प्रकार के हैं सिद्ध और साधित ॥

प्र० सिद्ध शब्द किसे कहते हैं ?

उ० जो दूसरे शब्द से न बनाहो वह सिद्ध शब्द जैसा घोड़ा, बैल, बाप; संस्कृत शब्द बहुत से अपभ्रंश होकर हिन्दी में आये हैं, इस कारण से सिद्ध शब्द बहुत कम हैं ॥

प्र० साधित शब्द किसे कहते हैं ?

उ० जो दूसरे शब्द से बने हैं वे साधित शब्द हैं जैसा, शास्त्री, विद्यार्थी, शिक्षक, इत्यादि ॥ सामासिक साधित शब्द का एक भेद है; वह दो वा अधिक शब्दों के योग से होता है; जैसा चक्र पाणि, पीताम्बर इत्यादि ॥

प्र० व्याकरण में साधन क्रिया से शब्दों के मुख्य भेद कितने हैं ?

उ० दो भेद हैं सविभक्तिक और अविभक्तिक ॥

प्र० सविभक्तिक किस को कहते हैं ?

उ० जिन शब्दों से विभक्त्यादि कार्य होते हैं वे सविभक्तिक कहलाते हैं; जैसा घोड़ा, अच्छा, मैं, करता है, इत्यादि ॥

प्र० अविभक्तिक किस को कहते हैं ?

उ० जिन शब्दों से विभक्त्यादि कार्य नहीं होते हैं उनको अविभक्तिक वा अव्यय कहते हैं; जैसा ऊपर, और, कहाँ, जहाँ, इत्यादि ॥

प्र० सविभक्तिक और अविभक्तिकों के और कोई भेद होवें तो कहिये,

उ० हिन्दी भाषा में शब्दों के आठ प्रकार हैं, सविभक्तिक में चार जैसा नाम, सर्वनाम, विशेषण, क्रियापद और अविभक्तिक में चार हैं क्रिया विशेषण, शब्द योगी, उभयान्वयी, उद्गारवाची ॥

प्र० नाम किसे कहते हैं ?

उ० पदार्थ मात्र की संज्ञा को नाम कहते हैं; जैसा घोड़ा, बैल, मनुष्य, क्रोध इत्यादि+ ॥

प्र० सर्वनाम किसे कहते हैं ?

उ० नाम को एक बार कहकर फिर उसकी जगह जो शब्द आता है, उसे सर्व नाम कहते हैं; जैसा मोहनलाल आया, और उसने कहा ॥

प्र० विशेषण किसे कहते हैं ?

उ० जो शब्द पदार्थ का गुण वा धर्म बतावे उसे विशेषण कहते हैं; जैसा सुन्दर घोड़ा, मीठा पानी, चतुर पुरुष, दो बैल, इत्यादि ॥

प्र० क्रिया पद किसे कहते हैं ?

उ० कृति वा स्थिति वा अनुभव इत्यादि व्यापार बोधक शब्द को क्रिया पद कहते हैं; जैसा करता है, सोया, गया, आता है, मारागया इत्यादि ॥

प्र० क्रिया विशेषण अव्यय किसे कहते हैं ?

उ० क्रिया के गुण वा प्रकार बोधक शब्दों को क्रिया विशेषण कहते हैं; जैसा शीघ्र जाता है, सुन्दर लिखता है, झट पट चलता है ॥

प्र० शब्द योगी अव्यय किसे कहते हैं ?

उ० जिस का प्रयोग नाम वाचक के साथ होता है और उसीका

+ सब पदार्थ दृश्य वा अदृश्य जिनकी स्थिति वा, अस्थिति है ऐसी कल्पना कर सकते हैं, उनकी संज्ञा को नाम कहते हैं ॥

संबंध दूसरे की तरफ बताता है, उसे शब्द योगी जानो जैसा ऊपर, पीछे, इत्यादि ॥

प्र० उभयान्वयी अव्यय किनको कहते हैं ?

उ० जिस शब्द का योग दो शब्दों में वा दो वाक्यों में होवे उभयान्वयी जानो ; जैसा परंतु, और, तथापि, वा इत्यादि ॥

प्र० केवल प्रयोगी किसे कहते हैं ?

उ० जिससे उन के हर्षदु:खादि विकारों का बोध हो उसे के प्रयोगी वा उद्गार वाची कहते हैं; जैसा वाह वा, छः, धिक्, हर इत्यादि ॥

---

२ पाठ

नाम विचार ॥

नाम के प्रकार ॥

प्र० नाम कितने प्रकार के हैं ?

उ० नाम तीन प्रकार के हैं सामान्य नाम, विशेष नाम, भाव वा नाम, ॥

प्र० सामान्य नाम किसे कहते हैं ?

उ० जिस नाम से वस्तुओं के समूह में से कोई जाति धर्म विशि व्यक्ति समझीजाय उसे सामान्य नाम जानो जैसा घोड़ा, हाथी, मनु इत्यादि ॥

प्र० विशेष नाम किसे कहते हैं ॥

उ० जिस नाम से जाति के गुण का बोध न होकर केवल व्य मात्र का बोध हो उसे विशेष नाम कहते हैं; जैसा देवदत्त, गंगा, यमु कर्नाटक इत्यादि ॥

प्र० भाव वाचक नाम किसे कहते हैं ;

उ० पदार्थ का धर्म अर्थात् गुण वा कोई व्यापार जिस से पाया उसे भाव वाचक नाम कहते हैं, जैसा औदार्य्य, समझ, मार, मनुष्य चातुर्य इत्यादि ॥

प्र० नाम से और कुछ समझा जाता है वा नहीं ?

उ० हाँ, लिंग, वचन, और कारक समझे जाते हैं ॥

पाठ ३

लिंग विचार ॥

प्र० लिंग किसे कहते हैं ?

उ० लिंग चिन्हको कहते हैं अर्थात् सजीव, वा निर्जीव, पदार्थ, पुरुष वाचक वा स्त्री वाचक है यह पहचानने का चिन्ह ॥

प्र० लिंग कितने हैं ॥

उ० पुंल्लिंग और स्त्रीलिङ्ग ये दो लिङ्ग हैं, नपुंसक लिङ्ग तीसरा अन्यभाषा में आता है, हिन्दी भाषा में नहीं आता ॥

प्र० पुंल्लिङ्ग और स्त्री लिङ्ग किसे कहते हैं ?

उ० जिस नाम से पुरुषत्वका बोध होय उसे पुंल्लिङ्ग कहते हैं; जैसा घोड़ा, गधा, गाड़ा, सोंटा, इत्यादि ॥

जिस नाम में स्त्रीत्वका बोध होय वह, स्त्री लिङ्ग; जैसा घोड़ी, भैंस, खाट, कृपा, गाड़ी, घड़ी इत्यादि ॥

प्र० प्राणि वाचक पदार्थों का लिङ्ग भेद शीघ्र समझ में आता है, पर अप्राणि वाचक पदार्थों कालिङ्ग किस रीति से समझना चाहिये ?

उ० लिङ्ग का निर्णय तो बहुत कठिन है, परन्तु इस विषय में कुछ नियम लिखता हूं ॥

॥ १ ॥ संस्कृत में जो शब्द पुंल्लिङ्ग और नपुंसक लिङ्ग हैं वे हिन्दी में बहुधा पुंल्लिङ्ग होते हैं जैसा सागर, रत्न, जल, मुख; रत्न और जल और मुख संस्कृत में नपुंसक लिङ्गी हैं ॥ जो शब्द संस्कृत में स्त्रीलिंग हैं वे हिन्दी में भी प्राय: स्त्री लिंग होते हैं जैसा कृपा, माया, गति, बुद्धि इत्यादि ॥

॥ २ ॥ अकारान्त नाम जिसका उपान्त्य वर्ण त् न होय और आकारान्त हिन्दी नाम प्राय: पुंल्लिङ्ग हैं; जैसा विघ्न पत्थर, बैल, घोड़ा, लड़का, कपड़ा, इ० ॥

॥ ३ ॥ जिन शब्दों के अन्त में ई वा त होवे वे प्राय: स्त्रीलिङ्ग हैं, परन्तु घी, पानी, जी, दही इत्यादि शब्द छोड़ कर; जैसा घोड़ी, टोपी, कुरसी, हवेली, रात, बात, इत्यादि ॥

॥ ४ ॥ जिस नाम के अन्त में आवट वा आहट प्रत्यय हो वह सदा स्त्री लिङ्ग जानो; जैसा सजावट, बनावट, घबराहट इत्यादि ॥

॥ ५ ॥ सामासिक शब्दों का लिङ्ग निर्णय बहुधा अंत्य शब्द के लिङ्गानुसार होता है, और बहु ब्रीहि समास में अन्य पदार्थ वत् लिङ्ग होगा। जैसा दया निधि यह पुंल्लिङ्ग है क्योंकि निधि शब्द पुंल्लिङ्ग है ॥ इसीतरह से भूत दया उपकार बुद्धि ये स्त्रीलिङ्ग हैं कुमति पुरुष अर्थात् जिसकी मति ख़राब है ऐसा पुरुष यहां कुमति यह विशेषण पुंल्लिङ्ग है ॥ कुमति स्त्री यहाँ कुमति यह विशेषण स्त्रीलिङ्ग है ॥

---

४ पाठ

पुंल्लिङ्ग नाम से स्त्रीलिङ्ग नाम बनाने की रीति ॥

प्र० पुंल्लिङ्ग शब्द से स्त्रीलिङ्ग किस प्रकार से बनता है ?

उ ॥ १ ॥ प्राणि वाचक अकारान्त और आकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्द के अंत्याक्षर के स्थान में ई आदेश होने से स्त्रीलिङ्ग होता है; जैसा देव, देवी; दास, दासी; लड़का, लड़की; घोड़ा, घोड़ी इत्यादि ॥

॥ २ । कहीं २ इया आदेश होता है वहां अंत्याक्षर द्वित्व होवे तो एक व्यञ्जन का लोप होजाता है जैसा बुड्ढा, बुढिया; लट्ठ, लठिया; कुत्ता, कुतिया; इत्यादि ॥

॥ ३ ॥ व्यापार करने वाले पुरुष वाची अकारान्त वा आकारान्त वा ईकारान्त शब्द अंत्याक्षर को अन वा इन आदेश करने से स्त्रीलिङ्ग होते हैं ॥

पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग		पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	
सोनार	सोनारिन,	सोनारन	कसेरा	कसेरिन,	कसेरन
लोहार	लोहारिन,	लोहारन	ठठेरा	ठठेरिन,	ठठेरन
कलवार	कलवारिन,	कलवारन	तेली	तेलिन,	तेलन
माली	मालिन,	मालन	धोबी	धोबिन,	धोबन

॥ ४ ॥ ब्राह्मणों के उपनाम वाची शब्दों को स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिये अंत्याक्षर को आइन आदेश विकल्प से करके आदि अक्षर के स्वर को ह्रस्व कर देते हैं पर ए ओ को ह्रस्व नहीं होता; एक पक्ष में अन आदेश होता है ॥

पुँल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुँल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
मिसर	मिसराइन, मिसरन	तिवारी	तिवारन, तिवारिन
दुबे	दुबाइन, दुबन	ओझा	ओझन
पांड़े	पंड़ाइन, पांड़न	चौबे	चौबन

॥ ५ ॥ पुँल्लिङ्ग शब्द के अंत्य वर्ण को अन आयन तायन नी आनी ये आदेश होने से कभी २ स्त्रीलिङ्ग होते हैं; जैसा

पुँल्लिङ्ग	आदेश	स्त्रीलिङ्ग	पुँल्लिङ्ग	आदेश	स्त्रीलिङ्ग
कूंजड़ा	अन	कूंजड़न	नायक	अन	नायकन
कवी	तायन	कवितायन	खतरी	आयन आनी	खतरायन, खतरानी
पण्डित	आनी आयन	पण्डितानी पण्डितायन	मेहतर	आनी	मेहतरानी

॥ ६ ॥ कई पुँल्लिङ्ग शब्दों का स्त्रीलिङ्ग भिन्न शब्दों से होता है जैसा

पुँ०	स्त्री०	पुँ०	स्त्री०	पुँ०	स्त्री०
भाई	बहिन	पुरुष	स्त्री	पिता	माता
बाप	मा	राजा	रानी	मर्द	औरत
		बैल	गाय	नर	मादी

भाषा में हर एक नाम का लिंग जानना बहुत कठिन है, इसलिये यह ध्यान में रखना चाहिये कि जिस नाम का लिंग ज्ञात न होय उसका प्रयोग स्त्रीलिंग में करने से पुँल्लिङ्ग में करना उचित है ॥

---

५ पाठ

वचन का वर्णन ॥

प्र० वचन किसे कहते हैं और वे कितने हैं ?

उ० वचन संख्या को कहते हैं; वे दो हैं एकवचन और बहुवचन नामके जिस रूप से एक का बोध हो उसे एक वचन और जिस से एकसे

अधिक का बोध हो उसे बहुवचन कहते हैं; जैसा लड़का, घोड़ा एकवचन, लड़के, घोड़े बहुवचन ॥

प्र० नाम का बहुवचन किस रीत से बनता है ?

उ० आकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्द के अंत्य आ के स्थान में ए आदेश करने से बहुवचन होताहै; जैसा एकवचन बहुवचन, ए-व ब-व ए-व ब-व

घोड़ा	घोड़े	मोटा	मोटे	डंडा डंडे
गधा	गधे	कोठा	कोठे	लड़का लड़के इ० ॥

शेष पुँल्लिङ्ग शब्दोंके एकवचन और बहुवचन के रूप एकसे होते हैं; जैसा मर्द, पर्वत, माल साधु इत्यादि ॥

सम्बन्धवाचक आकारान्त और इतर कई एक आकारान्त शब्द एकवचन और बहुवचन में समान रूप होते हैं जैसा बाबा, पिता, माता, सौदा, दर्या, दाना, दाता, इत्यादि ॥

स्त्रीलिंग इकारान्त, ईकारान्त उकारान्त और ऊकारान्त शब्दों को छोड़ कर बाकी शब्दों के अंत्यस्वर के स्थान में सानुनासिक एं आदेश करने से बहुवचन होता है; जैसा

एकवचन, बहुवचन - ए-व - ब-व - ए-व - ब-व

औरत औरतें किताब किताबें तलवार तलवारें इत्यादि ॥

इकारान्त और ईकारान्त शब्दों के आगे यां प्रत्यय करके ईकारको ह्रस्व करने से बहुवचन होता है; जैसा ॥

घोड़ी घोड़ियां ; बकरी बकरियां , बुद्धि बुद्धियां इत्यादि ॥

आकारान्त स्त्रीलिंगी शब्दों के अंत्य आ पर प्राय: अनुस्वार देने से बहुवचन होता है; जैसा एकवचन बहुवचन ए- व- ब- व-

गैय्या गैय्यां, भैंसिया भैंसियां, इत्यादि ॥

बहुत से नामों के एकवचन और बहुवचन के रूप समान होते हैं इसलिये अनेकत्व का बोध करने के वास्ते लोग, गण, जाति, इत्यादि बहुत्व वाचक शब्द नामके साथ आते हैं; जैसा चाकर लोग, देवगण, पशु जाति इ० ॥

---

६ पाठ

विभक्ति और कारक विचार ॥

प्र० कारक और विभक्ति किनको कहते हैं ?

उ० क्रिया का सम्बन्ध जिस नाम वाचक शब्द में हो उसे कारक कहते हैं; और क्रिया और कारक का सम्बन्ध जिस रूप से ज्ञात होवे उसको विभक्ति कहते हैं; और सम्बन्ध बोधक अक्षरों को विभक्ति प्रत्यय कहते हैं ॥

प्र० कारक कौन २ हैं ?

उ० कारक छः हैं, कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान, अधिकरण, इनका वर्णन आगे किया है ॥

प्र० विभक्तियां कितनी हैं ?

उ० ये विभक्तियां सात हैं, प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी, और सप्तमी, ॥

प्र० विभक्ति प्रत्यय कौन २ हैं और उनकी योजना कैसी होती है ?

उ०

विभक्ति का नाम	प्रत्यय	विभक्ति का नाम	प्रत्यय
१ प्रथमा	०	५ पंचमी	से
२ द्वितीया	को	६ षष्ठी	का, की, के
३ तृतीया	ने, से,	७ सप्तमी	में, पै, पर
४ चतुर्थी	को	८ सम्बोधन	०

प्रथमाविभक्ति में नामसे कुछ प्रत्यय नहीं होता जो मूल रूप है वही रहता है; प्रथमा के एकवचन का रूप और कभी २ बहुवचन का रूप दोनों तुल्य होते हैं ॥

इतर विभक्तियों में प्रत्यय होते हैं, वे नाम वाचक के मूल रूप से या उस रूप में कुछ विकार होकर आगे जोड़े जाते हैं, जिस रूप से प्रत्यय जोड़े जाते हैं उसको सामान्य रूप कहते हैं, जैसा लड़का, लड़के को, लड़कों को, यहां लड़के और लड़कों ये लड़का शब्दके क्रमसे एकवचन और बहुवचन सामान्य रूप हैं; द्वितीया आदि विभक्तियों में, और संबोधनमें इतना भेद है कि संबोधन में प्रत्यय नहीं है और अय, अरे, हे इत्यादि शब्द नाम के पूर्व

लगाते हैं ॥ विभक्ति प्रत्ययों का योग करना विभक्तिकार्य कहलाता है।

प्र० प्रथमादि छः कारक और सम्बन्धबोधक षष्ठी इनका पृथक् २ लक्षण कहिये ?

उ० क्रियाको जो करे उसे कर्ता कहते हैं; जैसा देवदत्त जाता है ॥

क्रिया का फल जिस पर रहे उसे कर्म जानो; जैसा देवदत्त किताब को पढ़ता है ॥

क्रियाकासाधन अर्थात् जिसके द्वारा क्रिया कीजावे उसे करण समझो; जैसा राम ने रावण को बाण से मारा, यहां बाण करण है ॥

जिसको कुछ दियाजावे वा जिसके निमित्त कुछ की जावे उसे संप्रदान कहते हैं; जैसा मोहनलाल गरीबों को खाने को देता है ॥

जिससे वियोग कियाजावे उसे अपादान कहते हैं; जैसा बाज़ार से लाया है॥

षष्ठीका अर्थ संबंध है, वह दो पदार्थोंपर रहता है, एकज्ञत संबंधी दूसरा संबंधी ॥ ज्ञतसंबंधी से षष्ठीके प्रत्यय का की के होते हैं; संबन्धी पुँल्लिङ्ग एकवचन हो तो ज्ञतसंबंधी के आगे का; स्त्रीलिंग हो तो की, पुँल्लिङ्ग बहुवचन होतो के लगाते हैं, ज्ञत संबंधी संबंधी का विशेषण होता है, उसका क्रियामें अन्वय नहीं होता, इसलिये षष्ठी कारक में नहीं ली; जैसा राजा का घोड़ा, राजा की घोड़ी, राजा के घोड़े इत्यादि ॥

सप्तमी का अर्थ अधिकरण अर्थात् आधार होता है; जैसा श्री कृष्ण घरमें है, गोपाल घोड़े पै बैठ कर गया है इत्यादि ॥

संबोधन=सम्मुखी करण अर्थात् किसी को चिताकर अपने सम्मुख करना, संबोधन के बोधक हे, अरे, अय, इत्यादि अव्यय नाम के पूर्व लगाते हैं, जैसा हे राम मेरा दुःख दूरकर, अरे मोहन, अब कृपाकर, इनका वर्णन कारक विचार में अच्छी तरह से किया जायगा ॥

प्र० नामसे विभक्ति कार्य कैसा होता है यह मेरे ध्यान में अच्छी तरह से नहीं आया इसलिये उदाहरण देकर मुझे समझाइये ?

उ० विभक्ति कार्य अच्छी तरह से समझ में आवे इसलिये पुँल्लिङ्ग और स्त्रीलिंग नामों के विभक्ति कार्य के विषयमें पृथक् २ नियम लिखता हूं ॥

---

७ पाठ

पुँल्लिङ्ग नाम ॥

इननामों के दोगण किये हैं १ एक आकारान्त पुँल्लिङ्ग नाम; २ दूसरा आकारान्त पुँल्लिङ्ग नामों को छोड़ शेष पुँल्लिङ्ग नाम ॥

नियम ॥

१ आकारान्त पुँल्लिङ्ग नामके अंत्य आ को ए आदेश करनेसे प्रथमा का बहुवचन और एक वचन सामान्य रूप और संबोधन के एक वचन का रूप बनता है; अंत्य आ को ओं आदेश करने से बहुवचन सामान्य रूप, होता है, और संबोधन के बहुवचन में ओ आदेश होता है; सामान्य रूप के आगे प्रत्यय जोड़े जाते हैं ॥

२ अव शिष्ट पुँल्लिङ्ग नामों की प्रथमा के बहुवचन का रूप और एक वचन सामान्य रूप प्रथमा के एक वचन के रूपवत् होते हैं, द्वितीयादि विभक्तियों के बहुवचन में अंत्यवर्ण के आगे ओं आगम करके बहुवचन सामान्य रूप बनता है, संबोधन में केवल ओ आगम किया जाता है ॥ सामान्य रूप के आगे प्रत्यय जोड़ते हैं ॥

प्रथम नियम का उदाहरण ॥

आकारान्त पुँल्लिङ्ग लड़का शब्द ॥

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	१ लड़का	लड़के
द्वितीया	२ लड़के को	लड़कों को
तृतीया	३ लड़के ने - से	लड़कों ने - से
चतुर्थी	४ लड़के को	लड़कों को
पंचमी	५ लड़के से	लड़कों से
षष्ठी	६ लड़के का - की - के	लड़कों का - की - के
सप्तमी	७ लड़के में - पै - पर	लड़कों में - पै - पर
संबोधन	८ अय लड़के	अय लड़को

इसी रीति से आगे लिखे हुए नामों को छोड़ शेष सब आकारान्त पुँल्लिङ्ग नामों का विभक्ति कार्य जानो ॥

अपवाद—आकारान्त पुँल्लिङ्ग विशेषनाम, सम्बन्ध वाचक नाम, और सँस्कृत शब्द ये पूर्वोक्त नियम के अपवाद हैं; इनका विभक्तिकार्य दूसरे नियम से होता है; जैसा, मोहना, रामा, भैय्या, काका, मामा, दाता, कर्ता, इत्यादि ॥

	एक वचन	बहुवचन
प्रथमा	१ भैय्या	भैय्या
द्वितीया	२ भैय्या को	भैय्याओं को
तृतीया	३ भैय्या ने - से	भैय्याओं ने - से
चतुर्थी	४ भैय्या को	भैय्याओं को
पंचमी	५ भैय्या से	भैय्याओं से
षष्ठी	६ भैय्या का - की - के	भैय्याओं का - की - के
सप्तमी	७ भैय्या में-पै-पर	भैय्याओं में-पै-पर
सम्बोधन	अय भैय्या	अय भैय्याओ

द्वितीय नियम के उदाहरण

अकारान्त पुँल्लिङ्ग—नाम +

द्वितीयादि विभक्तियोंके बहुवचन में अंत्य अ को ओं आदेश करके प्रत्यय जोड़ते हैं, संबोधन के बहुवचन में अंत्य अ को ओ आदेश किया जाता है ॥

अकारान्त पुँल्लिङ्ग बालक शब्द

	एक वचन	बहुवचन
प्र०	१ बालक	बालक
द्वि०	२ बालक को	बालकों को
तृ०	३ बालक ने - से	बालकों ने - से
च०	४ बालक को	बालकों को

+ धन, बन, बालक आदि शब्दों का उच्चारणकुछ हलंत सा किया करते हैं पर इनके अंत्य अक्षरके नीचे व्यंजन का चिन्ह नहीं लगाते हैं और ये शब्द सँस्कृत में बराबर अकारान्त हैं, इसलिये उन्हे यहां भी अकारान्त माना है ॥

पं०	५ बालक से	बालकों से
ष०	६ बालक का-की-के	बालकों का-की-के
स०	७ बालक में-पै-पर	बालकों में-पै-पर
सं०	८ हे बालक	हे बालको

इसी प्रकार तालाव, मालिक, पालक, वृक्ष, पर्वत इत्यादि जानो ॥

इकारान्त औ ईकारान्त पुँल्लिङ्ग नाम ॥

इकारान्त पुँल्लिङ्ग और स्त्रीलिंग शब्द शुद्ध हिन्दी नहीं हैं, पर जो हिन्दी में हैं वे सँस्कृत से आये हैं; द्वितीयादि विभक्तियों के बहुवचन में अंत्यवर्ण से आगे यों आगम करते हैं संबोधन के बहुवचन में यो होता है, और अंत्यवर्ण दीर्घ ई होवे तो उसे ह्रस्व करते हैं ॥

इकारान्त पुँल्लिङ्ग कवि शब्द ॥

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	१ कवि	कवि
द्वि०	२ कवि को	कवियों को
तृ०	३ कविने, से	कवियोंने, से
च०	४ कवि को	कवियों को
पं०	५ कवि से	कवियों से
ष०	६ कवि का-की-के	कवियों का-की-के
स०	७ कवि में-पै-पर	कवियों में-पै-पर
सं०	८ हे कवि	हे कवियो

इसी तरहसे हरि रवि पति इत्यादि जानो ॥

ईकारान्त पुँल्लिङ्ग माली शब्द ॥ +

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन	विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
१	माली	माली	५	मालीसे	मालियोंसे
२	मालीको	मालियोंको	६	मालीका-की-के	मालियोंका-की-के

+ कोई २ लोग द्वितीया आदि विभक्तियों के बहुवचन में ईकारान्त पुँल्लिङ्ग के रूप यों के बदले ओं आगम करके बनाते हैं जैसा मालिओं को मालिओं ने-से इ० ॥

३	माली-ने-से-मालियों ने-से	७	मालीमें-पै-पर	मालियों में-पै-पर
४	मालीको- मालियोंको	८	हे माली	हे मालियो

इसी तरह से धोबी, तेली, धनी इत्यादि जानो ॥

उकारान्त पुँल्लिङ्ग साधु शब्द ॥

१	साधु	साधु	५	साधु से	साधुओं से
२	साधु को	साधुओं को	६	साधु का-की-के	साधुओं का-की-के
३	साधुने - से	साधुओंने - से	७	साधुमें - पै - पर	साधुओंमें - पै - पर
४	साधु को	साधुओं को	८	अयसाधु	अयसाधुओ

इसीतरह से भानु, प्रभु आदि जानो ॥

ऊकारान्त पुँल्लिङ्ग भालू शब्द ॥

ऊकारान्त, के बहुवचन सामान्य रूप में अंत्य ऊ को ह्रस्व होजाता है ॥

१	भालू	भालू	५	भालू से	भालुओं से
२	भालू को	भालुओं को	६	भालूका - की - के	भालुओं का-की-के
३	भालूने-से	भालुओंने-से	७	भालूमें पै पर	भालुओं में-पै-पर
४	भालू को	भालुओं को	८	अयभालू	अयभालुओ

एकारान्त पुँल्लिङ्ग नाम ॥

१	चौबे	चौबे	६	चौबेका-की-के	चौबेओंका-की-के
२।४	चौबे को	चौबेओं को	७	चौबेमें-पै-पर	चौबेओं में-पै-पर
३।५	चौबेने-से-	चौबेओंने-से	८	अयचौबे	अय चौबेओ -

इसी प्रकार पांड़े आदि शब्द जानो, और ऐ, ओ, औ, ये जिन के अन्त में हैं ऐसे शब्द हिन्दी भाषा में नहीं हैं ॥

---

८ पाठ ॥

स्त्रीलिंग नाम ॥

प्रथमा के बहुवचन को छोड़कर शेष बिभक्तियों में स्त्रीलिंग नामों का बिभक्ति कार्य जो पुँल्लिङ्ग नाम आकारान्त नहीं हैं उनके समान होता है, स्त्रीलिंग नामों के भी दो गण मान लिये हैं ॥

१ इकारान्त और ईकारान्त स्त्रीलिंग नाम ॥
२ शेष स्त्रीलिंग नाम ॥

१ नियम ॥

इकारान्त और ईकारान्त स्त्रीलिंग नामों के अंत्य इ और ई को इयां आदेश करने से प्रथमा के बहुवचन का रूप बनता है, शेष रूप पुँल्लिङ्ग इकारान्त और ईकारान्त नामों के सदृश होते हैं ॥

२ नियम ॥

इकारान्त और ईकारान्त स्त्रीलिंग नामों को छोड़के शेष स्त्रीलिंग नामों में से कई नामों के अंत्य अक्षर को ए आदेश करने से प्रथमा के बहुवचन का रूप सिद्ध होता है, और कई नामों के प्रथमा के एकवचन और बहुवचन समान होते हैं ॥

उदाहरण १

इकारान्त स्त्रीलिंग बुद्धि शब्द ॥

विभक्ति	एक वचन	बहुवचन	विभक्ति	एक वचन	बहुवचन
प्र० १	बुद्धि	बुद्धियां	पं० ५	बुद्धि से	बुद्धियों से
द्वि० २	बुद्धि को	बुद्धियों को	ष० ६	बुद्धि का-की-के	बुद्धियों का-की-के
तृ० ३	बुद्धिने-से	बुद्धियोंने-से	स० ७	बुद्धि में-पै-पर	बुद्धियों में-पै-पर
च० ४	बुद्धि को	बुद्धियों को	सं० ८	हे बुद्धि	हे बुद्धियो

इसी तरह मति आदि शब्द जानो ॥

ईकारान्त स्त्रीलिंग घोड़ी शब्द ॥

१	घोड़ी	घोड़ियां	६	घोड़ी का-की-के	घोड़ियों का - की-के
२।४	घोड़ीको	घोड़ियों को	७	घोड़ी में-पै-पर	घोड़ियों में - पै-पर
३।५	घोड़ीने-से	घोड़ियोंने-से	८	अयघोड़ी	अय घोड़ियो

२ गण नियम और उदाहरण ॥

अकारान्त स्त्रीलिंग नाम के अंत्य अक्षर को एं आदेश करने से प्रथमा के बहुवचन का रूप सिद्ध होता है, और शेष रूप अकारान्त पुँल्लिङ्गवत् ॥

अकारान्त स्त्रीलिंग बात शब्द ॥

विभ-	एक वचन	बहुवचन	वि-	एक वचन	बहुवचन
१	बात	बातें	५	बात से	बातों से
२	बातको	बातों को	६	बातका-की-के	बातों का-की-के
३	बातने-से	बातोंने-से	७	बातमें-पै-पर	बातों में-पै-पर
४	बातको	बातोंको	८	हेबात	हेबातो

इसी तरह किताब, चील, रात आदि जानो ॥

आकारान्त स्त्रीलिंग नाम के अंत्य आ के शिर पर अनुस्वार देने से प्रथमा के बहुवचन का रूप होता है, शेष रूप मुख्य नियम से बनते हैं ॥

आकारान्त स्त्रीलिंग नाम के रूप ॥

विभ-	एक वचन	बहु वचन	वि-	एक वचन	बहु वचन
१	गैय्या	गैय्यां	६	गैय्याका-की-के	गैय्याओंका-की-के
२।४	गैय्याको	गैय्याओंको	७	गैय्यामें-पै-पर	गैय्याओं में-पै-पर
३।५	गैय्याने-से-	गैय्याओंने-से	८	हेगैय्या	हेगैय्याओ

उकारान्त स्त्री लिंगनाम के रूप			ऊकारान्त स्त्रीलिङ्ग नाम के रूप		
१	धेनु	धेनु	१	झाड़ू	झाड़ू
२।४	धेनुको	धेनुओंको	२।४	झाड़ूको	झाड़ुओंको
३।५	धेनुने-से-	धेनुओंने - से	३।५	झाड़ूने-से	झाड़ुओंने-से
६	धेनुका-की-के	धेनुओंका-की-के	६	झाड़ूका-की-के	झाड़ुओंका-की-के
७	धेनुमें-पै-पर	धेनुओंमें-पै-पर	७	जाड़ूमें-पै-पर	झाड़ुओंमें-पै-पर
८	हेधेनु	हेधेनुओ	८	हेझाड़ू	हेझाड़ुओ

जोरू शब्द की प्रथमा का बहुवचन जोरूआं होता है; एकारान्त शब्द प्रायः स्त्रीलिंग में नहीं आता ॥

९ पाठ

सर्व नाम विचार ॥

पुरुष वाचक सर्व नाम ॥

प्र० सर्व नाम किसे कहते हैं ?

उ० नाम को एक वार कह कर फिर उसके कहने का प्रयोजन पड़े तो उसकी जगह जो शब्द आते हैं, उन्हें सर्व नाम कहते हैं; इससे बारम्बार नाम को कहने का काम नहीं पड़ता, और सर्व नामों की जगह आता है, इसलिये सर्वनाम यह सार्थक संज्ञा रक्खी गई है ॥ सर्व नामों को नामवत् लिंग वचन और विभक्ति कार्य होता है ॥ पर लिंग भेद से उनके रूपों में कुछ भेद नहीं होता नाम के अनुरोध से सर्व नाम का लिंग बूझा जाता है ॥

प्र० सर्वनाम कितने प्रकार के हैं ?

उ० सर्व नाम पांच प्रकारके हैं पुरुषवाचक, दर्शक, संबन्धी प्रश्नार्थक, सामान्य ॥

पुरुष वाचक सर्व नाम ॥

प्र० पुरुष वाचक सर्व नाम किसे कहते हैं ?

उ० मैं तू वह ये पुरुष वाचक सर्वनाम हैं, मैं यह अपने का वाचक बोलने वाले को बताता है, इसलिये उसे प्रथम पुरुष कहते हैं; तू यह जिसको बोलता है उसे बतलाता है, इस कारण से उसे द्वितीय पुरुष कहते हैं; और वह उक्त दोनों को छोड़ तीसरे का बोध करता है, इससे उसे तृतीय पुरुष कहते हैं ॥

प्र० पुरुष वाचक सर्वनामों के रूप वचन भेद से कैसे होते हैं ?

उ० इन के रूप पुँल्लिङ्ग और स्त्रीलिंग में एक से होते हैं पर वचनों में बदलते हैं ॥

पुँल्लिङ्ग स्त्रीलिंग		पुँल्लिङ्ग स्त्रीलिंग		पुँल्लिङ्ग स्त्रीलिंग	
एक वचन	बहुवचन	एक वचन	ब-व-	ए-व	ब-व
मैं	हम	तू	तुम	वह	वे

प्र० प्रथम पुरुष सर्वनाम की कारक रचना में रूप किस प्रकार से होते हैं?

उ० प्रथमा के एक वचन में मैं और बहुवचन में हम होता है, और षष्ठी को छोड़ द्वितीयादि विभक्तियों के एक वचन में मुझ और बहुवचन में हम आदेश होकर आगे प्रत्यय जोड़ते हैं, द्वितीया और चतुर्थी के एकवचन में एं बहुवचन में एं प्रत्यय विकल्प से करके मुझ और हम सामान्य रूपों के अंत्य अकार का लोप होता है, तृतीया का ने प्रत्यय लगे तो मुझ आदेश न होगा मूल रूपों से जोड़ा जाता है, षष्ठी के एकवचन में प्रकृति को में आदेश और का की के प्रत्ययों को रा री रे+ आदेश क्रम से करते हैं बहुवचन में हमके अंत्य अ को दीर्घ करते हैं, सर्व नामों का संबोधन नहीं होता ॥

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
१	मैं	हम
२	मुझको, मुझे	हमको, हमें
३	मैंने, मुझ से	हमने, हमसे, हमोंसे
४	मुझको, मुझे	हमको, हमें
५	मुझे	हमसे,
६	मेरा, मेरी, मेरे	हमारा, हमारी, हमारे
७	मुझमें-पै,पर	हममें, पै-पर

प्र० द्वितीय पुरुष वाचक सर्वनाम के रूप कैसे बनते हैं?

उ० प्रथमा के एक वचन में तु बहुवचन में तुम होते हैं, द्वितीयादि विभक्तियों के एकवचन में तुझ और बहुवचन में तुम आदेश होते हैं, पर षष्ठी के एक वचन में ते और बहुवचन में तुम्ह आदेश होते हैं, आदेशों के आगे प्रत्ययों का योग किया जाता है शेष कार्य पूर्ववत् ॥

+ षष्ठीके प्रत्यय रा री रे केवल प्रथम और द्वितीय पुरुष वाचक सर्वनामों से होते हैं ॥ और ना नी ने निज का वाचक आप शब्द से होते हैं ॥ इन रूपों की योजना का की के प्रत्ययांत रूपों के समान होती है ॥

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
१	तू	तुम
२।४	तुझको, तुझे	तुमको, तुम्हें
३	तूने, तुझसे	तुमने, तुमसे
५	तुझ से	तुमसे
६	तेरा, तेरी, तेरे	तुम्हारा, तुम्हारी, तुम्हारे
७	तुझ में	तुममें

प्र० – तृतीय पुरुष के रूप किस प्रकार से होते हैं ॥

उ० प्रथमा के एक वचन में वह बहुवचनमें वे होते हैं, शेष विभक्तियों के एक वचन में उस बहुवचन में उन वा उन्हों आदेश करके प्रत्यय जोड़ते हैं द्वितीया और चतुर्थी में कभी २ प्रत्ययों को ए वा एं आदेश पूर्ववत् करते हैं और बहुवचन में प्रकृति को उन्ह आदेश करते हैं ॥

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
१	वह	वे
२।४	उसको, उसे	उनको, उन्होंको, उन्हें
३	उसने, उस से	उनसे, उन्होंसे, उनने उन्हों ने
५	उससे	उनसे, उन्हों से
६	उसका, उसकी, उसके,	उनका, उन्होंका, की - के
७	उसमें, पै - पर	उनमें, उन्होंमें, पै - पर

द्वितीय पुरुष और तृतीय पुरुष वाचक सर्व नामों को आदरार्थ में आप आदेश करके विभक्तियां लगाते हैं और इसके रूप बहुवचन में होते हैं; जैसा १ आप २।४ आप को ३।५ आपने, से ६ आपका - की - के ७ आपमें-पै-पर ॥

आदरार्थक आप शब्द के साथ लोग शब्द का प्रयोग यथार्थ बहुत्व बताने के लिये करते हैं; जैसा आप लोगों को यह बात उचित है, आप लोगों से आप लोगों में इत्यादि ॥

कभी २ आप इस सर्व नाम का प्रयोग तीनों पुरुषों में किया जाता है, तब वह शब्द निज का वाचक होता है इसलिये उसे सामान्य सर्वनाम कहना उचित है, उसके रूप ऐसे होते हैं कि एक वचन और बहु वचन

में १ आप २।४ आपको आपने को ३।५ अपने से, आपसे ६ अपना-नी-ने ७ आप में, अपने में वह अपने घर को चला, मैं अपने बाप से कहता था, तुम अपने भाई से कहना ॥ आपस यह परस्पर बोधक है इससे प्राय: षष्ठी और सप्तमी विभक्तियों के प्रत्यय होते हैं जैसा आपस का-की-के-आपस में, जैसा तुम लोग आपस में क्यों झगड़ा करते हो ॥

---

१० पाठ

दर्शक सर्व नाम ॥

प्र० दर्शक सर्वनाम किसे कहते हैं और उनसे विभक्तिकार्य कैसा होताहै ?

उ० वह और यह दर्शक सर्व नाम कहलाते हैं, वह दूरकी वस्तु को बतलाता है और यह समीप की वस्तु को; वह के रूप तो लिख आये हैं, यह के रूप प्रथमा के एक वचन में यह बहुवचन में ये होता है, शेष विभक्तियों के एक वचन में इस बहु वचन में इन इन्हों इन्ह आदेश विकल्प से करके प्रत्यय जोड़ते हैं ॥

विभक्ति	एक बचन	बहु वचन
१	यह	ये
२।४	इसको, इसे	इनको, इन्होंको, इन्हें
३।५	इसने, इससे	इनने, इन्होंसे, इनसे
६	इसका-की-के	इनका, इन्हों का-की-के
७	इसमें पै-पर	इनमें, इन्हों में-पै-पर

---

११ पाठ

संबन्धी सर्व नाम ॥

प्र० संबन्धी सर्व नाम किसे कहते हैं ?

उ० जो या जौन इसे संबन्धी सर्व नाम कहतेहैं, क्योंकि जहां इसका

प्रयोग होवे वहां सोवा तौन इस दर्शक सर्व नामका प्रयोग करना अवश्य पड़ता है, वैय्याकरण लोग जो सो और वह इनको वा इनसे बने हुए शब्दों को परस्पर नित्य संबन्धी कहते हैं; जैसा जो कल आया था सो अच्छा था, जिसने यह काम किया है उसे इनाम दो, जैसा करोगे वैसा फल पाओगे ॥

प्र० सम्बन्धी सर्व नाम के रूप कैसे होते हैं ?

उ० प्रथमा के एक वचन में और बहुवचन में जो ऐसाही रहता है शेष विभक्तियों के एक वचन में जिस बहुवचन में जिन वा जिन्ह वा जिन्हों आदेश पूर्ववत् होते हैं, और सो के रूप द्वितीयादि विभक्तियों के एक वचन में तिस बहुवचन में तिन वा तिन्ह वा तिन्हों आदेश होते हैं; आदेशों के आगे प्रत्यय जोड़े जाते हैं; शेष पूर्ववत् ॥

विभक्ति	एक वचन	बहु वचन
१	जो, जौन	जो, जौन
२।४	जिसको, जिसे	जिनको, जिन्होंको, जिन्हें
३	जिसने, से	जिनने, जिन्होंने, से
५	जिससे	जिनसे, जिन्होंसे
६	जिसका-की-के	जिनका, जिन्होंका-की-के
७	जिसमें-पै-पर	जिनमें, जिन्हों में-पै-पर
१	सो तौन	सो तौन
२।४	तिसको, तिसे	तिनको, तिन्होंको, तिन्हें
३।५	तिसने-से	तिनने-तिन्होंने-से-
६	तिसका-की-के	तिनका-तिन्होंका-की-के
७	तिसमें-पै-पर	तिनमें-तिन्होंमें-पै-पर

१२ पाठ

प्रश्नार्थक सर्वनाम ॥

प्र० प्रश्नार्थक सर्वनाम किसे कहते हैं और उनके रूप कैसे होते हैं ?

उ० कौन और क्या ये प्रश्नके लिये आते हैं इस वास्ते प्रश्नार्थक सर्व

नाम कहाते हैं ॥ केवल कौन शब्द सामान्यत: मनुष्य को और क्या अप्राणि वाचक को लगाते हैं; परनाम के साथ आवें तो दोनों प्राणि वाचक और अप्राणि वाचक को लगाते हैं; जैसा किस तरह से; क्या दाना आदमी; किसका घोड़ा ? मेरा; क्या है ? चीज़ ॥

कौन शब्द को द्वितीयादि विभक्तियों के एकवचन में किस बहुवचन में किन किन्ह वा किन्हों आदेश करके आगे प्रत्यय का योग होता है, शेष पूर्ववत् जानो ॥

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
१	कौन	कौन
२।४	किसको, किसे	किनको, किन्होंको, किन्हें
३।५	किसने, किससे	किनने, किन्होंने, से
६	किसका-की - के	किनका-किन्होंका-की-के
७	किसमें-पै-पर	किनमें-किन्होंमें-पै-पर

क्या इसके रूप दोनों वचन में एकसेही होते हैं द्वितीयादि विभक्तियों में काहे आदेश होकर आगे प्रत्यय जोड़े जाते हैं जैसा १ क्या २।४ काहेको ३।५ काहेसे-ने ६ काहेका-की-के,काहे-में-पै-पर ॥

---

१३ पाठ

सामान्य सर्वनाम॥

प्र० सामान्य सर्वनाम किसे कहते हैं और कैसा प्रयोग होता है ?

उ० कोई, कुछ, आप ये सामान्य सर्वनाम हैं; इनमेंसे केवल कोई इसका प्रयोग मनुष्य वाचक में होता; और कुछ का सामान्य पदार्थ मात्र में; पर नाम के पीछे विशेषण के सदृश आवें, तो प्राणि वाचक और अप्राणि वाचक में उनका प्रयोग किया जाता है; जैसा किसी को दो, किसी नगर में, कुछ पानी दे, कुछ लोग इत्यादि ॥

प्र० इनको विभक्ति प्रत्यय लगाने से कैसे रूप होते हैं ?

उ० आपके रूप तो पुरुष वाचकों में लिख आये हैं, बाक़ी दोके ऐसे

होते हैं कि कोई द्वितीयादि विभक्तियों में किसी आदेश और कुछ को किसू आदेश होते हैं और दोनों वचनों में एक से रूप जानो; जैसा १ कोई २।४ किसी को ३।५ किसी ने - से ६ किसी का - की - के ७ किसी में - पै - पर ॥ १ कुछ २।४ किसू को ३।५ किसू ने - से ६ किसू का - की - के ७ किसू में - पै - पर ॥

प्र० और कोई शब्द सामान्य सर्वनाम होवें तो कहिये ?

उ० एक दूसरा दोनों और सब इनसे विभक्ति प्रत्यय होते हैं; द्वितीयादि विभक्तियों के बहुवचन में सब शब्द के ब को भ आदेश विकल्प से करते हैं; जैसा सबोंने कहा वा सभोंने कहा-सभों को दो ॥ कई सामान्य सर्वनाम हैं, कई को विभक्ति प्रत्यय नहीं जोड़े जाते, पर कई एक इस संयुक्त पद को विभक्ति कार्य होता है यदि इस पद का अर्थ बहुत्व बोधक है तो भी बहुवचन सामान्य रूप नहीं होता अर्थात् एक शब्द से प्रत्ययों का योग होता है; जैसा कई एक को मैंने देखा, कई एकों को नहीं बोलते ॥

---

१४ पाठ

सर्वनामों के विषय में—स्फुट विचार ॥

प्र० नाम के साथ सर्वनामों की योजना किस प्रकार से होती है ?

उ० नाम के पीछे सर्वनाम विशेषण के रूप से आवे तो यह नियम है कि विभक्ति प्रत्यय नाम से जोड़ देते हैं सर्वनाम से नहीं, नाम प्रथमान्त

+ कोई २ कहते हैं कि कोई इस सामान्य सर्वनाम के रूप द्वितीया आदि विभक्तियों के बहुवचन में नहीं हैं पर ऐसे वाक्यसे देखो, हमारी पाठशाला की परीक्षा हुई तब किसी २ विद्यार्थी ने अच्छे २ जवाब दिये, यहां स्पष्ट है कि किसी २ बहुत्व बतलाता है इसलिये बहुवचन है किसी रूप की द्विरुक्ति करके आगे प्रत्ययों को जोड़ कर बहुवचन बतलाते हैं ॥

+ कोई २ कहते हैं कि कई यह प्रश्नार्थक सर्वनाम है ॥ पर यह रूप प्रश्न में नहीं आता कै आता है और उसके अर्थ कितने हैं ॥

होवे तो सर्वनाम भी प्रथमान्त रहता है, नाम अन्य विभक्ति में होवे तो सर्वनाम का सामान्य रूप पीछे आता है, नाम के वचनानुसार सर्वनामका वचन रहता है; जैसा क्या, तुम होशयार मनुष्य ऐसे फसे, वह बात मैंने सुनी, कौन जानवर है, कोई सरकारी नौकर रहता है, मुझ ग़रीब को धन दो, उस लड़के का हाथ टूट गया, मुझ निर्बुद्धि को इतना यश मिला यही बहुत है इत्यादि ॥

प्र० बहुवचन में द्वितीयादि विभक्तियों के दो २ रूप जो लिखे हैं उनके अर्थ में कुछ भेद होवे तो कहिये ?

उ० ओकारान्त सामान्य रूप से जो रूप बनते हैं वे सदा बहुत्व बतलाते हैं, इन्हों को, उन्हों को इत्यादि ॥ अन्य रूप कभी २ आदरार्थ बहुवचन में आते हैं हमको, हमें, तुमको इत्यादि ॥ उक्त सर्वनामों का परिगणन कोष्ठक में पृथक् २ लिखता हूं ॥

पुरुषवाचक सर्वनाम	दर्शक सर्वनाम	संबंधी सर्वनाम	प्रश्नार्थक सर्वनाम	सामान्य सर्वनाम	ये मुख्यहैं ॥
मैं, तू, वह	यह, वह, सो, तौन	जो जौन	कौन, क्या	कोई, कुछ, आप	
0	0	0	0	0	इनमेंसे बाज़े अन्य सर्व-
0	0	0	0	एक दूसरा	नामवाचक के योगसेभी
0	0	0	0	दोनों और	सर्व नाम और विशेषण
0	0	0	0	बाज़े, बहुत	बनते हैं; जैसा जो कुछ
0	0	0	0	सब, हर, फ-	जो कोई, दूसरा कोई,
0	0	0	0	लाना, कई	हर एक इत्यादि ॥
0	ऐसा, वैसा,	जैसा	कैसा	कैसाही	प्रकारार्थबोधक; इस उस
0	तैसा			कितनाही	इत्यादि रूपोंके स को त
0	इतना, इ-	जितना	कितना		नाओं रत्ता आदेश करने
0	त्ता उतना,	जित्ता	कित्ता		से बनते हैं ॥ वे परिमाण
0	उत्ता तित-				बोधक कहाते हैं ॥
0	ना तित्ता				

इनमें से प्रकारार्थ वा परिमाणार्थ वा दूसरा, फलाना, बाज़े इनको स्त्री लिंग करना हो तो अंत्य वर्ण को ई आदेश करते हैं जैसा कैसा, कैसी इत्यादि और बहुधा सर्वनाम शब्द विशेषण भी होते हैं ॥

---

१५ पाठ

विशेषण विचार ॥

प्र० विशेषण किसे कहते हैं ?

उ० जिस शब्द से नाम का गुण वा धर्म समझा जाय उसे विशेषण कहते हैं; जैसा धर्म शील मनुष्य, होशयार लड़का इत्यादि यहां धर्मशील और होशयार विशेषण हैं ॥ विशेषण को नाम के सदृश लिंग वचन और विभक्तियां होती हैं ॥

प्र० विशेषण कितने प्रकार के हैं ?

उ० गुण वाचक और संख्या वाचक ये विशेषण के दो प्रकार हैं; जैसा अच्छा, बुरा, कमीना इत्यादि ॥ ये गुण वाचक विशेषण हैं; पदार्थ का संख्या रूप गुण जिस से समझा जाय वह संख्या वाचक विशेषण होता है; जैसा एक, दो, तीन इत्यादि ॥

प्र० विशेष्य किसे कहते हैं ?

उ० जिस नाम का गुण विशेषण बोधित करे वह उस विशेषण का विशेष्य होता है; जैसा काला घोड़ा, एक घोड़ा, यहां घोड़े का काला और एक विशेषण हैं और विशेषण बोधित विशेष्यता अर्थात् कालापन और एकत्व घोड़े में है, इससे घोड़ा यह नाम विशेष्य है ॥ हिन्दी भाषामें विशेष्य के लिंग वचनानुसार विशेषण के लिंग वचन होते हैं और विशेषण विशेष्य के पहिले रहता है; जैसा कालाघोड़ा, कालीघोड़ियां ॥

गुण विशेषण ॥

प्र० गुण विशेषण किसे कहते हैं और उसके रूप लिंग और वचन में कैसे होते हैं ?

उ० जिससे केवल गुण पाया जाय वह गुण विशेषण है॥ उनमें आकारान्त विशेषणों को छोड़ बाक़ी विशेषणों के रूप विशेष्य के लिंग वचन और विभक्ति के अनुसार नहीं बदलते हैं; जैसा सुन्दर मर्द, सुन्दर औरत, सुन्दर लड़का, सुंदर लड़के इत्यादि॥

प्र० आकारान्त विशेषण की योजना कैसी होती है?

उ० विशेषण का रूप नाम के लिङ्ग वचन और विभक्ति के अनुसार होता है अर्थात् विशेष्य पुँल्लिङ्ग और प्रथमा के एक वचन में होवे तो, विशेषण आकारान्त ही रहता है, विशेष्य पुँल्लिङ्ग और प्रथमाके बहुवचन में हो या द्वितीयादि विभक्त्यन्त अथवा सशब्द यौगिक होवे तो विशेषण के अंत्य आ को ए आदेश होता है विशेष्य स्त्रीलिंग होवे तो विशेषण के अन्त्य आ को ई आदेश होता है; जैसा कालाघोड़ा, कालेघोड़े, कालेघोड़े को, कालेघोड़ों पर, कालीघोड़ी, वा काली घोड़ियां, अच्छे लड़के, इत्यादि॥

प्र० विशेषण विभक्ति का योग किस प्रकार से होता है?

उ० जब विशेषण तद्गुण विशिष्ट नाम वाचक के लिये आता है तब उसको नामके समान विभक्ति लिङ्ग वचन लगते हैं, विशेषण आकारान्तहोवे तो आकारान्त नामवत् ईकारान्तादिकों को ईकारान्तादि नामवत् विभक्ति कार्य होता है॥

पुँल्लिङ्ग भला शब्द॥

वि०	एकवचन	बहुवचन	वि०	एकवचन	बहुवचन
१	भला	भले	६	भलेका-की-के	भलोंका-की-के
२।४	भलेको	भलोंको	७	भलेमें-पै-पर	भलोंमें-पै-पर
३।५	भलेसे-ने	भलोंसे-ने	८	हेभला	हेभले

स्त्रीलिंग भली शब्द॥

वि०	एकवचन	बहुवचन	वि०	एकवचन	बहुवचन
१	भली	भली	६	भलीका-कीके-	भलियोंका-की-के
२।४	भलीको	भलियोंको	७	भलीमें-पै-पर	भलियोंमें-पै-पर
३।५	भलीने-से	भलियोंने-से	८	हेभली	हेभलियो

तद्गुण विशिष्ट अकारान्त सुन्दर शब्द ॥

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन	विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
१	सुन्दर	सुन्दर	६	सुन्दरका-की-के	सुन्दरोंका-की-के
२।४	सुन्दरको	सुन्दरोंको	७	सुन्दरमें-पै-पर	सुन्दरोंमें-पै-पर
३।५	सुन्दरने-से	सुन्दरोंने-से	८	हेसुन्दर	हेसुन्दरो

इसी तरह और विशेषण जानों ॥

---

१६ पाठ

उपमा वाचक और विशेषण का न्यून और अधिक भाव ॥

प्र० सादृश्यार्थक प्रत्यय किन २ शब्दों से होते हैं ॥

उ० सादृश्यार्थक और विशेष्यता बोधक सा प्रत्यय का योग नाम, सर्वनाम, और विशेषण के आगे किया करते हैं विशेषण केसाथ वह प्रत्यय आवेतो कभी २ अर्थ न्यूनत्व जनाता है जैसा तेरी कुतिया सी कुतिया, मेरी सी आंखें, छोटा सा घर; इत्यादि ॥ सांतपद को आकारान्त विशेषण के समान लिंग वचनादि कार्य होता है ॥

प्र० एक पदार्थ में दूसरे से वा सब सजातीय पदार्थों से गुणाधिक्य या गुण न्यूनत्व होवे तो किस प्रकार से बतलाना चाहिये ?

उ० यह गुणाधिक्य बताने के लिये विशेषण को कुछ कार्य नहीं होता, पर जिस के साथ तुलना की जावे उस नाम को पंचमी का प्रत्यय से जोड़ा जाता है, और सब सजातीयों से तुलना होवे तो उस नाम के पीछे सब यह शब्द लगादेते हैं; यह नियम हिन्दी में साधारण है, पर कभी २ संस्कृत की रीति के अनुसार विशेषण को तर और तम प्रत्यय जोड़ के पूर्वोक्त कार्य करते हैं; जैसा मोहनलाल सुन्दरलाल से बुद्धिमान है, विद्या द्रव्य से अच्छी चीज़ है, हमारी घोड़ी तुमारी घोड़ी से चालाक है, हिमालय पर्वत सब पर्वतों से ऊंचा है, गणपति अपने सब साथियों से होशयार है, पुण्य - पुण्यतर पुण्यतम - प्रिय - प्रियतर - प्रियतम - इत्यादि ॥

१७ पाठ

संख्या विशेषण ॥

प्र० संख्या विशेषण किसे कहते हैं और उसके रूप कैसे होते हैं ?

उ० संख्याजिस से बोधित होय उसे संख्यावाचक कहतेहैं; जैसा एक, दो, तीन इत्यादि ॥ इन शब्दों का प्रयोग विशेष्य के साथ किया जावे तो रूप में कुछ भेद नहीं होता; जैसा एक मर्द को वा औरत को, दो तीन मर्दों ने इत्यादि ॥ दो संख्या वाचक से विभक्ति का योग किया जावे तो ऐसे रूप होते हैं; जैसा १ दोनों २.४ दोनों को ३ दोनोंने ५ दोनोंसे ६ दोनोंका-की-के ७ दोनोंमें-पै-पर ८ हे दोनों-गणमें से कोई दो व्यक्तियां ली जांय तो वहां केवल दो इस रूप को विभक्ति प्रत्यय जोड़ते हैं जैसा दोको-ने-से इ० ॥ बाकी एक तीन चार इ० ॥ अकारान्त वा आकारान्त इकारान्त ईकारान्त संख्या वाचकों से विभक्तियों का योग करते हैं तब त तद्वर्णांत नाम के सदृश रूप होते हैं और कई एक संख्या विशेषण समूह वाचक विशेषण हैं जैसा गंडा, कोरी, सैकड़ा, इत्यादि ॥ बहुत्व बताने में विशेष्य के पूर्व संख्या वाचक से ओं जोड़ते हैं, जैसा हज़ारों आदमी लाखों रुपये इत्यादि ॥

क्रम वाचक ॥

प्र० क्रमवाचक विशेषण किसे कहते हैं और उसके रूप भेदहों तो कहिये ?

उ० जो विशेषण क्रम बतावे उसे क्रम वाचक विशेषण कहते हैं; जैसा पहिला, दूसरा, हज़ारवां यहां सात से आगे संख्या वाचक को वां वीं वें आगम करने से क्रम वाचक बन जाता है, और एक से छः तक पहिला, दूसरा, तीसरा, चौथा, पांचवा, छठवां छठा इत्यादि आदेश होते हैं, और इनसे लिंग वचन और विभक्ति का योग करना हो तो आकारान्त विशेषण के समान रूप होते हैं; जैसा दसवां लड़का, दसवें लड़के को-से-का-की-दसवीं लड़की, दसवीं लड़कियां, दसवीं लड़की को, दसवीं लड़कियों को इत्यादि ॥

आवृत्ति वाचक ॥

प्र० आवृत्ति वाचक किसे कहते हैं ?

उ० संख्या वाचक से गुना प्रत्यय लगाने से औ प्रकृति को ह्रस्व वा

लोप वा ओकार आदि आदेश करने से आवृत्ति वाचक होते हैं; जैसा संख्या वाचक दो तीन चार पांच छः इत्यादि ॥

आवृत्ति वाचक दुगुना, तिगुना, चौगुना, पचगुना, छगुना, इत्यादि ॥

संख्या वाचक को बार वा बेर प्रत्यय जोड़ने से भी आवृत्ति वाचक बन जाते हैं ॥ जैसा एकबार, दो बार वा बेर इ० ॥

संख्या वाचक ॥

प्र० संख्यांश वाचक किसे कहते हैं और वे कौन २ हैं ?

उ० संख्याका अंश अर्थात् भाग प्रदर्शक जो विशेषण उसे संख्यांश वाचक कहते हैं ॥

जैसा पाव चौथै चौथाई तिहाई आधा आध पौन पौने सवा डेढ़ अढ़ाई ॥ कोई संख्या उत्तर अंकसे एक चतुर्थांश कम होवे वा अधिक होवे तो पौने पौन सवा क्रम से पीछे आते हैं जैसा पौने दो सवा दो इत्यादि, और एक द्वितीयांश अधिक होवे तो एकसे डेढ़ दोसे अढ़ाई तीन आदि से साढ़ेतीन; साढ़ेचार इत्यादि होते हैं और जब सौ हज़ार लाख इत्याद्यन्त संख्या वाचक के साथ पौने सवा साढ़े आते हैं तब सौ, हज़ार इत्यादि संख्याका भाग जानो; जैसा पौने दोसौ १७५ सवा दोसौ २२५ साढ़ेतीनसौ ३५० इत्यादि ॥

क्रियापद विचार १९

क्रियापद का लक्षण और उसके भेद ॥

प्र० क्रियापद किसे कहते हैं ?

उ० जिससे कृति वास्थिति अर्थात् देह और मन के व्यापार का बोध हो उसे क्रिया पद कहते हैं जैसा लिखता है, बोलता है, सोचता है, खाचुका इत्यादि ॥

प्र० क्रियापद किससे बनता है ?

उ० क्रियापद धातुसे बनता है ॥

प्र० धातु किसे कहते हैं ॥

उ० क्रिया का मूल अर्थात् प्रत्ययादि कार्य रहित व्यापार बोधक जो शुद्ध रूप है उसे धातु कहते हैं; जैसा गा, सो बैठ, कर, इ० ॥ भाषावाले इन धातुओंके आगे ना प्रत्यय लगाकर धातु बतलाते हैं, इसमें कुछ हानि नहीं ॥

प्र० धातु कितने प्रकार की हैं ?

उ० धातु दो प्रकार की हैं एक सकर्मक दूसरी अकर्मक ॥

प्र० सकर्मक और अकर्मक क्रियापदों का क्या लक्षण है ?

उ० जिस क्रिया के व्यापार से उत्पन्न फल कर्त्ता से अन्य पदार्थ में जावे वह क्रियापद और उसकी धातु सकर्मक कहाती है; जैसा वह लड़के को पढ़ाता है, और जिस क्रिया के व्यापारका फल कर्त्ताही में रहे उस क्रिया पद को और उसकी धातुको अकर्मक कहते हैं; जैसा वह सोता है ॥

उदाहरण ॥

सकर्मक क्रियापद	अकर्मक क्रियापद
वह घरको बनाता है	बालमुकुन्दबैठाहै
मोहन पोथीलिखता है	कुत्ता भोंकता है
बालक रोटी खाता है	यज्ञदत्त पढ़ता है

क्रियापद सकर्मक है वा अकर्मक है इसका ज्ञान होने की और भी रीति है ॥

१ जिस क्रियापद से क्या और किस को ऐसा प्रश्न करके उत्तर मिल सके तो वह क्रियापद सकर्मक जानो; जैसा वह खाता है और खिलाता है इस वाक्य में क्या खाता है और किसको खिलाता है ऐसा प्रश्न करने से रोटी और कुत्तेको इत्यादि ये उत्तर मिलते हैं इसलिये खाता है और खिलाता है ये क्रियापद सकर्मक हैं जिस धातुका प्रयोग सामान्य भूतकाल में किया जावे तो कर्त्ताको तृतीया विभक्ति का प्रत्यय ने लगता है वह धातु सकर्मक जानो जैसा गोविंदने बैल छोड़ा, रामने रावण को मारा इत्यादि लाना, भूलना, बोलना, समझाना, बकना, ये कहीं २ अपवाद हैं, और जिस क्रिया पद से उत्तर नमिले उसे अकर्मक जानो; जैसा सोता है, बैठा है इत्यादि ।

धातुओं के भेद ॥

प्र० धातुओं के और कौन २ भेद हैं ?

उ० सिद्ध धातु, साधित धातु, और अनु करण धातु, ये तीन भेद हैं; सिद्ध धातुओं का सहाय धातु यह एक भेद है ॥

प्र० सिद्ध धातु किसे कहते हैं ?

उ० जो किसी से न बना होवे वह सिद्ध धातु है; जैसा सो, बैठ, खा, पी, इत्यादि ॥ एक धातु के आगे दूसरा धातु आकर मूलधातुका अर्थकाल इत्यादि बतलाता है उसे सहाय धातु कहते हैं; जैसा सोगया, पकाता रहता है, करता होगा, पका करता है इत्यादि ॥

प्र० साधित धातु किसे कहते हैं ?

उ० सिद्धधातु को प्रत्ययादि कार्य करने से जो नया धातु बनता है वह साधित धातु है; जैसा रिझाना, समझाना, खिलावना, इ० ॥ इनके दो भेद हैं प्रयोजक, और नाम धातु ॥

प्र० प्रयोजक क्रियापद किसे कहते हैं ?

उ० जहां क्रिया के मुख्य कर्ताका कोई दूसरा प्रेरक होकर वाक्य में कर्ता होता है वहां वह क्रियापद प्रयोजक जानो ॥ प्रयोजक क्रियापद का यह धर्म है कि मूलधातु अकर्मक होवे, तो सकर्मक होजाता है अर्थात् अकर्मक क्रियापद का कर्ता प्रयोजक क्रियापद का कर्म होता है, और मूल धातु सकर्मक होय तो और एक कर्म बढ़ जाता है, पर यह कर्म हिन्दी में करण या अपादान रूप से आता है, जैसा अन्न पकता है, और क्रिया पद प्रयोजक करने से, वह मनुष्य अन्न पकाता है यहां मनुष्य कर्त्ता और अन्न कर्म हुए हैं - वह घर बनाता है ॥ प्रयोजक क्रियापद करने से मैं उससे घर बनवाता हूं ॥ प्रयोजक क्रियापद की धातु भी प्रयोजक जानो ॥

प्र० नाम धातु किसे कहते हैं ?

उ० नाम धातु उन धातुओं को कहते हैं, जो कि नाम अथवा विशेषण से बनते हैं; जैसा चौड़ा, चौड़ाना; तरस, तरसना; पानी, पनियाना; आधा, अधियाना ॥

प्र० अनु करण धातु किसे कहते हैं ?

उ० कार्य सदृश उच्चारण जिस धातु काहो वह अनुकरण धातु कहलाता है जैसा घुरघुराता है इत्यादि ॥

---

१९ पाठ

क्रियापद के लिङ्गवचन और पुरुष ॥

प्र० क्रिया पद में कौन २ बातें अवश्य हैं ॥

उ० लिंग, वचन, पुरुष, अर्थ, काल, और प्रयोग अवश्य होते हैं, और इनका ज्ञान क्रिया पदके रूप से होता है इन भेदों से क्रिया पद के रूप प्राय: बदलते हैं ॥

प्र० क्रिया पद के लिंग, वचन, और पुरुष कितने हैं ?

उ० दो लिंग पुँल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग; दो वचन एक वचन और बहु वचन; तीन पुरुष प्रथम पुरुष, द्वितीय पुरुष तृतीय पुरुष ॥

पुँल्लिङ्ग

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
प्रथम पुरुष	मैं करताहूं	हम करते हैं
द्वितीय पुरुष	तू करता है	तुम करते हो
तृतीय पुरुष	वह करता है	वे करते हैं

स्त्रीलिङ्ग

प्र० - पु	मैं करतीहूं	हम करती हैं
द्वि - पु	तू करती है	तुम करतीहो
तृ - पु	वह करतीहै	वे करती हैं

---

२० पाठ

अर्थ विचार ॥

प्र० क्रिया पद का अर्थ समझाइये और उसके भेद बतलाइये ?

उ० कोई क्रिया अथवा व्यापार करने के विषय मेंबोलने वाले के मन

में जो भाव होवे तद्भाव बोधक जो क्रिया पद का रूप उसे अर्थ कहते हैं और वे अर्थ पांचप्रकार के हैं स्वार्थ, आज्ञार्थ, विध्यर्थ, संशयार्थ और संकेतार्थ ॥

१ जब कोई बातहै वा नहीं इतना बोध क्रिया पद से होता है तब वह क्रिया पद स्वार्थ में रहता है; जैसा वह करता है, उसने काम नहींकिया ॥

२ जब बोलने वाला आज्ञा वा उपदेश वा प्रार्थना करता है तो उस क्रिया पद को आज्ञार्थ में जानो; जैसा तू काम मत कर; अपने से हलके को कोई काम करने के लिये कहना आज्ञा है और अपने बड़े से कुछ करने के लिये कहना, प्रार्थना है पर कभी २ दोनों अर्थोंमें क्रिया पद के रूप एकसेही आते हैं; जैसा अय राजा मेरा संकट दूर कर, पानी ला, यहां पहिले में प्रार्थना और दूसरे में आज्ञा है ॥

३ आज्ञा का अर्थ गर्भित होकर धर्म, शक्यता, योग्यता, संभावना, आशंसा, इत्यादि अर्थों का बोध क्रिया पदके रूप से होता है, तब विध्यर्थ में क्रिया पद है ऐसा जानो; जैसा वह काम करे, अर्थात्जो वह काम करे तो योग्य है; होसके सो कर ॥

४ जिस क्रिया पद से संदेहका बोध होवे, उसे संशयार्थ कहते हैं; जैसा वह गया होगा ॥

५ एक क्रिया की सिद्धि दूसरी क्रिया पद है तो वह क्रिया संकेतार्थ मेंजानो; जैसा अगर मैं आज तक पाठशाला में पढ़ता तो मेरी बढ़ती होजाती, इस अर्थ को हेतु हेतु मत् भी कहते हैं, कभी २ यहअर्थ समझाने के लिये अगर तो यदि इत्यादि अव्ययों की योजना करते हैं ॥

---

२१ पाठ

काल विचार ॥

प्र० कालकिसे कहते हैं ?

उ० क्रिया जिस समय में हुईहो उसे काल कहते हैं, और उसका बोध क्रिया पद के रूप से होता है ॥

प्र० कालके कितने भेद हैं ?

उ० वर्तमान; भूत, भविष्य, ये तीन भेद हैं ॥

प्र० वर्तमान काल किसे कहते हैं ?

उ० जो होरहा है उसे वर्तमान काल कहते हैं जैसा मैं पूजा करता हूं ॥

प्र० भूतकाल किसे कहते हैं ?

उ० वर्तमान काल से पूर्व होगया जो समय उसे भूतकाल कहते हैं; जैसा नंदलाल ने पुस्तक पढ़ी, यह भूतकाल सामान्य भूत, अपूर्ण भूत, भूत-भूत, वर्तमान भूत के भेद से चार प्रकार का है १ जो क्रिया पूर्वकाल में होगईहो और पूर्वकाल का निश्चित ज्ञान न पाया जाय उसे सामान्य भूत कहते हैं, जैसा वह गया, २ भूतकाल में जिस क्रिया की पूर्णता न हो जाय उसे अपूर्ण भूत कहते हैं, जैसा मैं करता था, ३ भूतकाल में क्रियाका प्रारम्भ होकर पूरी होगई होवे तो उसे भूत २ काल समझो ॥ कभी २ जो क्रिया दूसरी भूत क्रिया के पूर्व होगई हो उसका प्रयोग भूत भूतकाल में होता है, जैसा आप के आने के पूर्व वह गया था,४ जो क्रिया भूतकाल में प्रारम्भ होकर वर्तमान काल में समाप्त हुई है उसे वर्तमान भूत कहते हैं, जैसा मैं ने उसको मारा है, इसे आसन्न भूत भी कहते हैं ॥

प्र० भविष्यत्काल किसे कहते हैं ?

उ० भावी अर्थात् होने वाली क्रिया के समय को भविष्यत्काल कहते हैं जैसा वह जावेगा इ० ॥

---

२२ पाठ

प्रयोग विचार

प्र० प्रयोग किसे कहते हैं ?

उ० हिन्दी में क्रियापद के लिंग वचन और पुरुष कर्त्ता के अनुसार और कभी २ कर्म के अनुसार होते हैं, और कई एक स्थलों में दोनों के भी अनुरोध से क्रियापद नहीं रहताहै ॥ इस क्रियापद में कर्ता और कर्म से ऐक्य या भिन्नत्व वाक्य की रचना से बोधित होता है, इस वाक्य रचना के प्रकार को या इस तरह से क्रियापद के विकृत रूप को प्रयोग कहते हैं ॥

प्र० प्रयोग कितने प्रकार के होते हैं ?

उ० कर्तरि प्रयोग, कर्मणि प्रयोग, भावे प्रयोग, ये तीन प्रकार हैं ॥

प्र० ये प्रयोग किस रीति से जाने जाते हैं और इनके कुछ भेद हों तो कहो ?

उ० जहां कर्त्ता के अनुसार क्रिया पद का रूप होता है वहां कर्तरि प्रयोग जानो ॥ कर्तरि प्रयोग के दो भेद हैं, एक सकर्मक कर्तरि और दूसरा अकर्मक कर्तरि ॥ जहां क्रियापद सकर्मक होवे, वहां सकर्मक कर्तरि प्रयोग होता है; और जहां क्रियापद अकर्मक होवे, वहां अकर्मक कर्तरि प्रयोग जानो; जैसा लड़का जाता है, लड़के आते हैं, लड़कियां जाती हैं, मैं जाता हूं- अकर्मक कर्तरि, मोहनलाल ख़त लिखता है, शिव प्रसाद पानी पीता है - सकर्मक कर्तरि प्रयोग जानो ॥

जहां कर्म के अनुसार क्रियापद हों वहां कर्मणि प्रयोग जानो, जैसा रामने सिंहमारा, सिंहिनीमारी, मैंने ख़त भेजा, चिट्ठीलिखी, इत्यादि ॥

कर्त्ता और कर्म के अनुसार जहां क्रियापद का रूप नहीं होता केवल सामान्यत: पुँल्लिङ्ग तृतीय पुरुष एक वचन में रहता है अर्थात् जहां क्रिया का भावही कर्त्ता हो वहां भावे प्रयोग जानो; जैसा रामलाल ने सिंहको मारा, रामने सिंहिनी को मारा, इत्यादि प्रयोगों में क्रियापद का लिंग वचन नहीं बदलता इसलिये ये भावे प्रयोग हैं ॥

प्र० ये प्रयोग किस काल और अर्थ में होते हैं ?

उ० ये प्रयोग, धातु वर्तमान काल वाचक और भूतकाल वाचक धातु साधित विशेषणों से बनते हैं ॥

सब अर्थ और काल में अकर्मक धातु और बोल, भूल, ला, बक, समझ, इन सकर्मक धातुओंसे कर्तरि प्रयोग होता है; जैसा वह जावे, रामलाल घर को पहुंचा, वह बोला, मैं यह बात भूला, वह बासन लावेगी इत्यादि ॥

धातु और वर्तमानकाल वाचक धातुसाधित विशेषणसे जो रूप बनते हैं उनमें सकर्मक धातुओंसे कर्तरि प्रयोग बनता है; जैसा वह लड़का अपनी मा को बहुत कष्ट देता है, नर्मदा प्रसाद अच्छा बोलता था इ० ॥

भूतकाल वाचक धातु साधित विशेषण से जो काल और अर्थ बनते हैं उन में बोल धातु का गण छोड़ सकर्मक धातुओं से कर्मणि और भावेप्रयोग

होते हैं पर इतना ध्यान में रखना चाहिये कि कर्मणि प्रयोग में कर्ता तृतीयान्त और कर्म प्रथमान्त, और कर्म के अनुसार क्रिया पद रहते हैं; और भावे प्रयोग में कर्ता तृतीयान्त, कर्म द्वितीयान्त, और क्रियापद पुँल्लिङ्ग तृतीय पुरुष एक बचन होते हैं; जैसा मैंने चिट्ठीलिखी, कृष्ण ने शेर मारा; उसने बहुत से देश देखे हैं, कर्मणि प्रयोग ॥ कृष्ण ने शेरकोमारा, मैंने आप के यहां सेवक को भेजा था- भावे प्रयोग ॥

---

२३ पाठ

क्रिया पद बनाने की रीति ॥

प्र० धातु से क्रियापद किसरीति से बनते हैं ?

उ० हिन्दी भाषा में क्रियापद बहुधा एकही रीति से बन जाते हैं इस विषय में तीन नियम हैं ॥

१ धातु का शुद्ध रूप अर्थात् धातु साधित भाव वाचक नाम का ना गिरा कर जो शेष रहता है वह आज्ञार्थ द्वितीय पुरुष एव वचन का रूप होता है; जैसा बोलना से बोल यह आज्ञार्थ द्वितीय पुरुष एक वचन का रूप होता है ॥

२ धातुको ता प्रत्यय लगानें से वर्तमान काल वाचक धातु साधित विशेषण होता हैं; जैसा बोलता ॥

३ धातुके अंत्य वर्णको आ मिलाने से भूत काल वाचक धातु साधित विशेषण होता है; जैसा बोला ॥

धातुके अंत में आ ई ऊ ए ओ होवें तो पूर्वोक्त आकार आदिकों के पीछे य् आगम करके ईकार और एकार को ह्रस्व करदेते हैं; जैसा ला लाया, पी पिया, छू छुआ, दे दिया, रो रोया परन्तु कई धातुओं के रूप और रीति से होते हैं, जैसा कर किया, जा गया, हो हुआ इत्यादि ॥

इन तीन रूपों से और इनसे हो इस सहाय धातु के वर्तमान और भूतकाल के रूप जोड़कर सब अर्थ और कालों के रूप बन जाते हैं ॥

यह स्मरण रखना चाहिये कि क्रियापद का रूप पुँल्लिङ्ग एकवचन में आकारान्त होवे, तो अंत्य आ को बहुवचन में ए स्त्रीलिंग एकवचन में ई और बहुवचन में ईं आदेश होते हैं, यह प्राय:रीति है ॥ जब दो अथवा अधिक रूप स्त्रीलिंगी आते हैं तब रूप के अंत्य ई पर अनुस्वार करदेते हैं; जैसा औरतें बैठती थीं ॥

सहाय धातु हो ॥

	वर्तमानकाल		भूतकाल	
पुरुष	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
प्र-पु	मैं हूं	हम हैं	मैं था	हम थे
द्वि-पु	तू है	तुम हो	तू था	तुम थे
तृ-पु	वह है	वे हैं	वह था	वे थे
		स्त्री-	मैं थी	हम थीं इ० ॥

---

२४ पाठ

केवल धातु से बने हुए अर्थ और काल ॥

प्र० शुद्धधातु से कौन २ अर्थ और काल बनते हैं ?

उ० शुद्धधातु से हेतु हेतुम द्भविष्यकाल, और आज्ञार्थ के रूप बन जाते हैं ॥

हेतु हेतुम द्भविष्यकाल ॥

धातु से वक्ष्यमाण प्रत्यय लगाने से हेतु हेतुम द्भविष्यकाल के रूप बन जाते हैं ॥ इसके रूपों में लिंग भेद नहीं होता ॥

प्रत्यय

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
प्र-	ऊं	एं
द्वि-	ए	ओ
तृ-	ए	एं

जब धातु अकारान्त है तब उसके अंत्य अ के स्थान में ये प्रत्यय आदेश होते हैं; जैसा बोलूं, बोले इ० ॥ धातु के अंत में आकारादि स्वर होवे तो ऊं और ओ प्रत्ययों को छोड़ बाकी के प्रत्ययों के पीछे व् आगम विकल्प से होता है; जैसा खावे वा खाए ॥

और जब आगमनहीं होता तब ये प्रत्यय धातुओं के आगे जोड़े जाते हैं; कभी २ ए को य आदेश करते हैं; जैसा लावे, लाए, जाय, खाय, इ० ॥

धातु एकारान्त हो तो ऊं और ओ को छोड़ शेष प्रत्ययों के पीछे व् आगम विकल्प से पूर्वोक्त नियम से होता है, पर जब आगम नहीं करते हैं तब धातु के एकार के स्थान में उन प्रत्ययों को आदेश करते हैं; जैसा दे धातु

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
देऊं	देवें	दूं	दें
देवे	देओ	दे	दो
देवे	देवें	दे	दें

भविष्यकाल ॥

हेतु हेतुम द्भविष्यकाल बोलूंगी, देऊंगा दूंगा इ० ॥

आज्ञार्थ ॥

दे, बोल, खा, पी इत्यादि ॥

प्र० वर्तमान काल वाचक धातुसाधित विशेषण से कौन२काल बनते हैं?

उ० संकेतार्थभूत, वर्त मानकाल, और अपूर्ण भूत ॥

संकेतार्थभूत ॥

बोलता, बोलते, बोलती, बोलतीं इ० ॥

वर्तमानकाल ॥

बोलता है, बोलते हैं इत्यादि ॥

अपूर्णभूत ॥

बोलताथा, बोलती थी इ० ॥

प्र० भूतकाल वाचक धातुसाधित विशेषण से कौन २ काल बनते हैं?

उ० सामान्य भूतकाल, वर्तमान भूतकाल, और भूत भूतकाल, बनतेहैं ॥

सामान्यभूत ॥

बोला, बोली, बोले इत्यादि ॥

वर्तमानभूत ॥

बोला है, बोले हैं इत्यादि ॥

भूतभूत ॥

बोलाथा, बोले थे, बोलीथी इ० ॥

प्र० धातु से पूर्वोक्त रूपों के सिवाय और कौन २ रूप बनते हैं ?

उ० आदर पूर्वक आज्ञार्थ और भविष्य काल का प्रयोग बनाना हो तो धातु को इये इयो वा इयेगा ये प्रत्यय लगादेते हैं अकारान्त धातु होतो अंत्य अ के स्थान में इन प्रत्ययों को आदेश करते हैं; धातु के अंत में ई वा ए हो तो उस धातु को जिये जियो जियेगा ये प्रत्यय लगाते हैं, और ए कारको ई में बदलते हैं, बाक़ी की धातुओं को इये इत्यादि प्रत्यय लगाते हैं; जैसा लाइये, पीजिये ॥

धातु साधित भाव वाचक नाम ॥

शुद्ध धातुमे ना प्रत्यय जोड़ने से भाव वाचक नाम होता है और उससे विभक्ति प्रत्यय आकारान्त पुँल्लिङ्ग नामवत् होते हैं; जैसा बोलना; बोलने का, की, के, बोलने में इत्यादि ॥

कर्तृवाचक धातु साधितनाम ॥

बोलने वाला-बोलनेहारा इत्यादि ॥

धातुसाधितविशेषण ॥

बोलता, बोलताहुआ; बोला, बोलाहुआ इत्यादि ॥

धातुसाधितअव्यय ॥

जैसा बोल, बोल कर, बोलके, बोलकरके, बोलकरकर इत्यादि- ता प्रत्ययान्त वर्तमान कालवाचक धातुसाधित विशेषण के ता को ते आदेश

करके आगे ही अव्यय जोड़नेसे तत्काल बोधक धातु साधित अव्यय बनजाता है; जैसा बोलतेही इत्यादि ॥

---

२४ पाठ

क्रियापद के रूप ॥

प्र० पूर्व में क्रियापद बनाने के नियम आपने कहे उनके अनुसार बने हुए रूप कहिये ?

उ० क्रियापद के रूप समझमें सुलभ से आवें इसलिये तीन भागों में बनाकर लिखता हूं ॥

होना... अकर्मक ... ...

हो ... शुद्धधातु ... ...

होता ... वर्तमान काल वाचक धातु साधित विशेषण

हुआ ... भूतकाल वाचक धातु साधित विशेषण ...

शुद्ध धातुसे बनेहुए काल ॥

कर्तरि प्रयोग ॥

हेतु हेतुम ड्रविष्यकाल——विध्यर्थ वर्तमानकाल

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
प्र-पु-	मैंहोऊं-हों	हमहोवें-होएं-हों
द्वि-पु-	तूहोवे-होए-होय-हो	तुम होओ-हो
ढ-पु-	वह होवे-होए-होय-हो	वे होवें-होएं-हो-होंय

स्वार्थ भविष्य काल ॥

	मैं होऊंगा-हूंगा	हमहोवेंगे-होएंगे-होंगे
	तूहोवेगा-होयगा-होगा	तुमहोओगे-होगे
	वहहोवेगाहोएगा-होगा-	वेहोवेंगे-होएंगे-होंगे
स्त्री-	मैं होऊंगी-हूंगी	हमहोवेंगी-होएंगी-होंगी-इ० ॥

आज्ञार्थ वर्तमान काल ॥

मैंहोऊं-हों　　　　हम होवें-होएं-हों
तू हो　　　　　　तुम होओ-हो
वहहोवे-होय-हो　　वे होवें-होएं-हों

वर्तमान काल वाचक धातु साधित विशेषण से बनेहुए काल ॥

कर्तरि प्रयोग ॥

संकेतार्थ भूतकाल—स्वार्थरीति भूतकाल

पुँल्लिङ्ग

मैं होता　　　　हम होते
तू होता　　　　तुम होते
वह होता　　　　वे होते
स्त्री- मैं होती　　हम होतीं-इत्यादि ॥

स्वार्थ वर्तमान काल ॥

मैं होता हूं　　　　हम होतेहैं
तू होता है　　　　तुम होतेहो
वह-होता है　　　　वे होते हैं
स्त्री- मैं होती हूं　　हम होतीं हैं-इ० ॥

स्वार्थ अपूर्ण भूतकाल ॥

मैं होता था　　　　हम होतेथे
तू होता था　　　　तुम होते थे
वह होता था　　　　वे होते थे
स्त्री- मैं होती थी　　हम होतीं थीं इत्यादि ॥

भूतकाल वाचक धातु साधितं विशेषणों से बनेहुए काल ॥

कर्तरि प्रयोग ॥

स्वार्थ सामान्य भूतकाल ॥

मैं हुआ	हम हुए
तू हुआ	तुम हुए
वह हुआ	वे हुए
स्त्री- मैं हुई	हम हुईं इत्यादि ॥

स्वार्थ वर्तमान भूतकाल ॥

मैं हुआ हूं	हम हुए हैं
तु हुआ है	तुम हुए हो
वह हुआ है	वे हुए हैं
स्त्री- मैं हुई हूं	हम हुईं हैं इ० ॥

स्वार्थ भूत भूतकाल ॥

मैं हुआथा	हम हुएथे
तू हुआथा	तुम हुएथे
वह हुआथा	वे हुएथे
स्त्री- मैं हुईथी	हम हुईंथीं- इ० ॥

आदर पूर्वक आज्ञार्थ ॥

हूजिये हूजियो हूजियेगा इत्यादि ॥

धातु साधित नाम ॥

होना..........भाववाचक होनेवाला ॥ होनेहारा......कर्तृवाचक

धातु साधित विशेषण ॥

होता -- होताहुआ- स्त्री-होती-होतीहुई- } वर्तमानकालवाचक ‖ पु-हुआ-स्त्री-हुई-भूतकाल वा० ॥

धातु साधित अव्यय ॥

हो--होकर--होके -होकरके-……समुच्चयार्थक

होतेही ………………………तत्कालबोधक

बोलधातु का गणछोड़ सकर्मक धातुओं का यह धर्म है कि जिन कालों के रूप भूत काल वाचक धातु साधित विशेषण से बनते हैं, उनमें सकर्मक क्रियापद के कर्ता से तृतीया विभक्ति होती है, यह आगे लिखे हुए रूपों से समझ में आवेगा ॥

मारना सकर्मक ॥

मार………शुद्धधातु

मारता……वर्तमान काल वाचक धातु साधित विशेषण ॥

मारा………भूतकाल वाचक धातु साधित विशेषण ॥

केवल धातु से बने हुए काल ॥

कर्तरि प्रयोग ॥

हेतु हेतुम भविष्यकाल-विध्यर्थ वर्तमान काल ॥

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
प्र-	मैं मारूं	हम मारें
द्वि-	तू मारे	तुम मारो
तृ-	वह मारे	वे मारें

स्वार्थ भविष्यत्काल ॥

	मैं मारूंगा	हम मारेंगे
	तू मारेगा	तुम मारोगे
	वह मारेगा	वे मारेंगे
स्त्री-	मैं मारूंगी	हम मारेंगी

आज्ञार्थ वर्तमान काल ॥

मैं मारूं	हम मारें
तू मार	तुम मारो
वह मारे	वे मारें

वर्तमान काल वाचक धातु साधित विशेषण से बनेहुए काल ॥

संकेतार्थ भूत वा स्वार्थरीति भूतकाल ॥

पुरुष	एकवचन	पुरुष- बहुवचन
	मैं मारता	हम मारते
	तू मारता	तुम मारते
	वह मारता	वे मारते
	स्त्री- मैं मारती	हम मारतीं

स्वार्थ वर्तमान काल ॥

	मैं मारता हूं	हम मारते हैं
	तू मारता है	तुम मारते हो
	वह मारता है	वे मारते हैं
स्त्री-	मैं मारती हूं	हम मारतीं हैं इत्यादि ॥

स्वार्थ अपूर्ण भूतकाल ॥

	मैं मारताथा	हम मारते थे
	तू मारता था	तुम मारते थे
	वह मारता था	वे मारते हैं
स्त्री-	मैं मारती थी	हम मारतीं थीं

भूतकाल वाचक धातुसाधित विशेषण से बनेहुए काल

कर्मणि वा भावे प्रयोग

स्वार्थ सामान्य भूतकाल ॥

पुरुष-	एकवचन	पुरुष- बहुवचन
	मैंने } मारा	हमने } मारा
	तूने }	तुमने }
	उसने	उन्हों ने

स्वार्थ वर्तमान भूतकाल ॥

मैंने तूने उसने	मारा है	हमने तुमने उन्होंने	मारा है

स्वार्थ भूत भूतकाल ॥

मैंने तूने उसने	मारा था	हमने तुमने उन्होंने	मारा था

आदर पूर्वक आज्ञार्थ ॥

मारिये..........मारियो..........मारियेगा..........इत्यादि ॥

धातु साधित नाम ॥

मारना......भाववाचक......मारनेवाला......मारनेहारा...कर्तृ वाचक

धातु साधित विशेषण ॥

पु- मारता-मारता-हुआ स्त्री-मारती-मारती-हुई	वर्तमानकालवा-	मारा, माराहुआ मारी, मारीहुई-	भूतकाल वाचक

धातु साधित अव्यय ॥

मार......मारकर......मारके...—मारकरके......समुच्चयार्थक
मारतेही.................................. तत्कालबोधक

गिरना अकर्मक धातु ॥

गिर....................शुद्धधातु
गिरता..................वर्तमानकालवाचक धातुसाधितविशेषण
गिरा.................. भूतकालवाचक धातुसाधितविशेषण......

हेतुहेतुमद्भविष्यकाल…	इस धातु के इन छः कालोंके रूप मार धातु के रूपों के सदृश होते हैं ॥
भविष्यकाल ………	
आज्ञार्थवर्तमानकाल…	
संकेतार्थभूतकाल ……	
वर्तमानकाल ………	
अपूर्णभूतकाल ………	

भूतकाल वाचक धातु साधित विशेषण से बने हुए काल

कर्तरि प्रयोग ॥

स्वार्थ सामान्य भूतकाल			स्वार्थ वर्तमान भूतकाल		
	पु- एकवचन	पु- बहुवचन		पु- एकवचन	पु- बहुवचन
	मैं गिरा	हम गिरे		मैं गिरा हूं	हम गिरेहैं
	तू गिरा	तुम गिरे		तू गिरा है	तुम गिरे हो
	वह गिरा	वे गिरे		वह गिराहै	वे गिरे हैं
स्त्री-	मैं गिरी	हम गिरीं	स्त्री-	मैं गिरीहूं	हम गिरीं हैं

स्वार्थ भूत भूतकाल ॥

मैं गिराथा	हम गिरे थे	स्त्री- मैं गिरीथी	हमगिरींथीं
तू गिराथा	तुमगिरे थे		
वह गिराथा	वे गिरे थे		

शेष रूप मारधातु के सदृश होते हैं ॥

खाना सकर्मक ॥

मुख्यभाग
- खा……शुद्धधातु
- खाता…वर्तमान काल वाचक धातु साधित विशेषण
- खाया…भूतकाल वाचक धातु साधित विशेषण

धातु से बने हुए काल ॥

हेतुहेतुमद्भविष्य काल—विध्यर्थ वर्तमान काल

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
प्र-	मैं खाऊं	हम खाएं खावें
द्वि-	तू खाए खावे खाय	तुम खाओ खावो
तृ-	वह खाए खावे खाय	वे खाएं खावें खांय

स्वार्थ भविष्यकाल ॥

मैं खाऊंगा	हम खाएंगे खावेंगे
तू खाएगा खावेगा	तुम खाओगे खावोगे
वह खाएगा खावेगा	वे खाएंगे खावेंगे
स्त्री- मैं खाऊंगी	हम खाएंगीं इ० ॥

आज्ञार्थ वर्तमान ॥

मैं खाऊं	हम खाएं खावें
तू खा	तुम खाओ खावो
वह खाए खावे	वे खाएं खावें

वर्तमान काल वाचक धातु साधित विशेषण से बने हुए काल

संकेतार्थ भूतकाल स्वार्थरीति भूतकाल ॥

पुरुष एकवचन	पुरुष बहुवचन
मैं खाता	हम खाते
तू खाता	तुम खाते
वह खाता	वे खाते
स्त्री- मैं खाती	हम खातीं इ० ॥

स्वार्थ वर्तमान काल ॥

मैं खाता हूं	हम खाते हैं
तू खाता है	तुम खाते हो
वह खाता है	वे खाते हैं
स्त्री- मैं खाती हूं	हम खातीं हैं इत्यादि ॥

स्वार्थअपूर्ण भूतकाल ॥

मैं खाता था	हम खाते थे
तू खाता था	तुम खाते थे
वह खाता था	वे खाते थे
स्त्री- मैं खाती थी	हम खातीं थीं इत्यादि ॥

कर्मणि या भावे प्रयोग ॥

भूतकाल वाचक धातु साधित विशेषण से बनेहुए रूप

स्वार्थ सामान्य भूतकाल ॥

मैंने तूने उसने	खाया	हमने तुमने उन्होंने	खाया

स्वार्थ वर्तमान भूतकाल ॥

मैंने तूने उसने	खाया है	हमने तुमने उन्होंने	खाया है

स्वार्थ भूत भूतकाल ॥

मैंने तूने उसने	खाया था	हमने तुमने उन्होंने	खाया था

आदर पूर्वक आज्ञार्थ ॥

खाइये, खाइयो, खाइयेगा,

धातु साधित नाम ॥

खाना……भाववाचक खानेवाला - खानेहारा - कर्तृवाचक

धातु साधित विशेषण ॥

खाता—खाता हुआ……वर्तमान कालवाचक

खाया—खाया हुआ……भूतकाल वाचक …

धातु साधित अव्यय ॥

खा—खाकर—खाके—खा करके……समुच्चयार्थक

खातेही…………………………तत्काल वाचक

सोना अकर्मक ॥

मुख्यभाग:
- सो ………शुद्ध धातु
- सोता……वर्तमान कालवाचक धातु साधित विशेषण
- सोया……भूतकाल वाचक

हेतुहेतुमद्भविष्यकाल...	इसधातुकेइनकालोंकेरूपखाधातुकेतुल्य
स्वार्थभविष्यकाल	
आज्ञार्थवर्तमानकाल...	
संकेतार्थभूतकाल	
स्वार्थवर्तमानकाल ...	
स्वार्थअपूर्णभूत........	

भूतकाल वाचक धातु साधित विशेषणों से बने हुए काल

कर्तरि प्रयोग ॥

स्वार्थ सामान्य भूतकाल ॥

पुरुष एकवचन	पुरुष बहुवचन
मैं सोया	हम सोये
तू सोया	तुम सोये
वह सोया	वे सोये

स्वार्थ वर्तमान भूतकाल ॥

पुरुष एकवचन	पुरुष बहुवचन
मैं सोया हूं	हम सोये हैं
तू सोया है	तुम सोये हो
वह सोया है	वे सोये हैं

स्वार्थ भूत भूतकाल ॥

मैं सोया था	हम सोये थे
तू सोया था	तुम सोये थे
वह सोया था	वे सोये थे

शेष रूप खा धातु के सदृश होते हैं ॥

इसी रीति से हिन्दी भाषा में जो धातु हैं उनके रूप बनालो और छः धातुओं के भूतकाल वाचक विशेषण के रूप और प्रकार से बनते हैं वे नीचे लिखे हैं ॥

भूतकाल वाचक धातु साधित विशेषण ॥

धातु	एकवचन		बहुवचन		आदर पूर्वक आज्ञार्थ
	पुँल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुँल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	
जा	गया	गई	गये-गए	गई	
कर	किया	की	किये	कीं	कीजिये - कीजियो
मर	मुआ	मुई	मुए	मुई	
हो	हुआ	हुई	हुए	हुई	
दे	दिया	दी	दिये	दीं	दीजिये - दीजियो
ले	लिया	ली	लिये	लीं	लीजिये - लीजियो

इनमें से होना जाना मरना अकर्मक हैं और करना देना लेना सकर्मक ॥ होना धातुके रूप लिखे हैं- जाना और मरना इनके रूप गिरना धातु के रूपवत् होते हैं- करना देना लेना इनके रूप सकर्मक धातु के रूपवत् होते हैं - जा धातु तो सँस्कृत धातु या जाना से निकली और गया यह रूप सँस्कृत गम धातु=जाना से बना है; भूतकाल वाचक विशेषण जाया की योजना केवल संयुक्त क्रियापदमें होती है; जैसा जाया करता है इत्यादि ॥

सँस्कृत धातु कृ करना से हिन्दीधातु कर निकली है और इस धातुके भूतकाल वाचक विशेषण और आदर पूर्वक आज्ञार्थ के रूप करा वा करिये होते हैं, पर ये रूप प्राय: प्रचार में नहीं आते, इनके स्थान में की धातु से बनेहुए रूप किया कीजिये क्रमसे आते हैं ॥

मरना सँस्कृत धातु मृ=मरना से निकली है ॥ मुआ यह रूप सँस्कृत से प्राकृत भाषा के द्वारा आया है, उस में ऋ के बदले उ होता है, मरा यह भूत काल वाचक धातु साधित विशेषण केवल संयुक्त क्रिया पद में आता है जैसा मरा चाहता है भया यह रूप कभी २ हुआ के स्थान में आता है और सँस्कृत भू धातु से निकला है ॥

---

२५ पाठ

कर्मवाच्य क्रियापद ॥

प्र० कर्मवाच्य क्रियापद का लक्षण और इसके बनाने की रीति बतलाइये?

उ० जो नाम तत्वत: अर्थ में क्रियाका कर्म है, जिस पर क्रिया के व्यापार का फल होवे यह जब क्रिया पदका उद्देश्य+ हो तब क्रिया पद का रूप कर्म वाच्य कहलाता है ॥

कर्मवाच्य क्रियापद हिन्दी में हर जगह नहीं लाते हैं ॥ जहां कर्ता ज्ञात न होय वा छिपाहो वहां ऐसे क्रिया पदकी योजना प्राय: करते हैं जैसा, वह मारा गया, देखा जायगा इ० ॥

हिन्दी भाषा में कर्मवाच्य क्रियापद बनाने की यह रीति है, कि सकर्मक धातुके भूत काल वाचक विशेषण के आगे जा धातु के रूप सबकाल और अर्थ में जोड़ना; इस भूतकाल वाचक धातु साधित विशेषण का रूप लिंग वचनानुसार बदलता है; जैसा ॥

मारा जाना

मारा जा……आज्ञार्थ द्वितीय पुरुष एकवचन या शुद्ध धातु
मारा जाता…वर्तमान काल वाचक धातु साधिक विशेषण
मारा गया……भूतकाल वाचक धातु साधित विशेषण

धातु से बनेहुए काल ॥

हेतु हेतु मद्भविष्यकाल—विध्यर्थ वर्तमान काल ॥

	पु० एकवचन	पु० बहुवचन
	मैं मारा जाऊं	हम मारे जावें-जांय
	तू मारा जावे - जाय	तुम मारे जाओ
	वह मारा जावे-जाय	वे मारे जावें-जांय
स्त्री-	मैं मारी जाऊं	हम मारी जावें इत्यादि ॥

+ वाक्य में जिसके विषय कोई बात कही जाय उसे उद्देश्य कहते हैं ॥

स्वार्थ भविष्यकाल ॥

मैं मारा जाऊंगा	हम मारे जावेंगे - जाएंगे
तू मारा जावेगा	तुम मारे जाओगे
वह मारा जावेगा	वे मारे जावेंगे-जाएंगे
स्त्री- मैं मारी जाऊंगी	हम मारी जावेंगी इ० ॥

आज्ञार्थ वर्तमान काल ॥

मैं मारा जाऊं	हम मारे जावें
तू मारा जा	तुम मारे जाओ
वह मारा जावे	वे मारे जावें
स्त्री- मैं मारी जाऊं	हम मारी जावें

वर्तमान काल वाचक धातु साधित विशेषण से बने हुए रूप

संकेतार्थ भूत ॥

मैं, तू, वह } मारा जाता	हम, तुम, वे } मारे जाते
एकवचन	बहुवचन
स्त्री- मैं मारी जाती	हम मारी जातीं

स्वार्थ वर्तमान काल ॥

मैं मारा जाता हूं	हम मारे जाते हैं
तू मारा जाता है	तुम मारे जाते हो
वह मारा जाता है	वे मारे जाते हैं
स्त्री- मैं मारी जाती हूं	हम मारी जातीं हैं इ० ॥

स्वार्थ अपूर्ण भूतकाल ॥

मैं, तू, वह } मारा जाता था	हम, तुम, वे } मारे जाते थे
स्त्री- मैं मारी जाती थी	हम मारी जातीं थीं इ० ॥

भूतकाल वाचक धातुसाधित विशेषण से बने हुए रूप

स्वार्थ सामान्य भूतकाल ॥

मैं, तू, वह } मारा गया	हम, तुम, वे } मारे गये
स्त्री- मैं मारी गई	हम मारी गईं ॥

स्वार्थ वर्तमान भूतकाल ॥

मैं मारा गया हूं	हम मारे गये हैं
तू मारा गया है	तुम मारे गये हो
वह मारा गया है	वे मारे गये हैं
स्त्री- मैं मारी गई हूं	हम मारी गई हैं

स्वार्थ भूतकाल ॥

मैं, तू, वह } मारा गया था	हम, तुम, वे } मारे गये थे
स्त्री- मैं मारी गई थी	हम मारी गई थीं

आदर पूर्वक आज्ञार्थ में—मारेजाइये, मारे जाइयेगा

धातु साधित नाम ॥

भाव वाचक ... ... मारा जाना

कर्तृवाचक... ... ... माराजानेवाला - माराजानेहारा

धातु साधित विशेषण - मारा जाता, मारा जाताहुआ, मारागया, मारा गया हुआ ॥

धातु साधित अव्यय ॥

माराजाकर - माराजाके - माराजाकरके - समुच्चयार्थक

माराजातेही ... ... तत्काल बोधक

---

२६ पाठ

क्रियापद के अप्रसिद्धकाल ॥

प्र० आपने क्रियापद के रूप बहुधा सब अर्थ और काल में बनाने की रीति बतलाई - पर संशयार्थ क्रियापद के रूप बनाने के नियम नहीं कहे सो कहिये ?

उ० अच्छा प्रश्न किया - संकेतार्थ के रूप भी और बनते हैं, उनका प्रकार सुनो ॥

संशयार्थ वर्तमान वा भविष्यकाल ॥

बोलता होवे - होगा इत्यादि ॥

संशयार्थ भूतकाल ॥

बोला होवे - होगा ॥

संकेतार्थ वर्तमान काल ॥

	मैं बोलता होऊं - होऊंगा	हम बोलते होवें-होवेंगे
	तू बोलता होवे - होवेगा	तुम बोलते होओ - होओगे
	वह बोलता होवे - होवेगा	वे बोलते होवें - होवेंगे
स्त्री-	मैं बोलती होऊं - होऊंगी	हम बोलतीं होवें - होवेंगीं

संशयार्थ भूतकाल ॥

	मैं बोलाहोऊं-होऊंगा	हम बोले होवें - होवेंगे
	तू बोला होवे - होवेगा	तुम बोले होओ - होओगे
	वह बोला होवे - होवेगा	वे बोले होवें - होवेंगे
स्त्री-	मैं बोली होऊं - होऊंगी	हम बोली होवें - होवेंगीं

संकेतार्थ वर्तमान काल ॥

	मैं, तू, वह } बोलता होता	हम, तुम, वे } बोलते होते
स्त्री-	मैं बोलती होती	हम बोलतीं होतीं

संकेतार्थ भूत ॥

मैं, तू, वह	बोला होता	हम, तुम, वे	बोले होते

स्त्री- मैं बोली होती

हम बोली होतीं इ०॥

इस प्रकार से सब धातुओं के रूप बनाना ॥

---

२७ पाठ

प्रयोजक क्रियापद विचार ॥

प्र० यहां तक तो सिद्ध धातु के रूप बनाने की रीति आपने बतलादी वह मैं समझा, अब साधित क्रियापद किस प्रकार से बनते हैं यह मुझे समझाइये ?

उ० हिन्दी भाषामें साधित क्रियापद बहुत से आते हैं और उनका लक्षण पूर्व में किया है अब इनके बनाने के नियम लिखता हूं ॥

१ मुख्य नियम यह है कि मूलधातु को प्रयोजक करना हो तो धातु के अंत्यवर्ण को आ मिलाते हैं, प्रयोजक वा सकर्मक धातु को और भी द्विकर्मक वा प्रयोजक करना हो तो मूलधातुके अंत्यवर्ण के आगे वा जोड़ देते हैं; जैसा

मूलधातु, सकर्मक वा	प्रयोजक	द्वितीय प्रयोजक ॥
जल	जलाना	जलवाना
पढ़	पढ़ाना	पढ़वाना
बन	बनाना	बनवाना
बज	बजाना	बजवाना
गिर	गिराना	गिरवाना
छिप	छिपाना	छिपवाना

मिल	मिलाना	मिलवाना
सुन	सुनाना	सुनवाना
पैर	पैराना	पैरवाना
दौड़	दौड़ाना	दौड़वाना
समझ	समझाना	समझवाना
सरक	सरकाना	सरकवाना

२ द्व्यक्षर धातुओं के आद्य अक्षर में दीर्घ स्वर होवे तो उसको ह्रस्व कर आ वा वा जोड़ देते हैं, एकाक्षर धातु का स्वरदीर्घ हो तो उसको भी ह्रस्व करके आगे ला वा लवा प्रत्यय जोड़ देते हैं, ह्रस्व करने से आ को अ ई वा ए को इ ऊ वा ओ को उ आदेश क्रम से होते हैं; जैसा

मूल वा सिद्धधातु,	प्रयोजकधातु,	द्वितीयप्रयोजकधातु,
जाग	जगाना	जगवाना
भीग	भिगाना	भिगवाना
भूल	भुलाना	भुलवाना
लेट	लिटाना	लिटवाना
बोल	बुलाना	बुलवाना
पी	पिलाना	पिलवाना
दे	दिलाना	दिलवाना
धो	धुलाना	धुलवाना

३ कई एक अकर्मक धातुओं के आद्य अक्षर में ह्रस्व स्वर होवे तो उसको दीर्घ करदेते हैं, पर यह नियम प्रयोजक से प्रयोजक करना हो तो बेकाम है, प्रथम नियम से वा मात्र जोड़ाजाता है; जैसा

कटना	काटना	कटवाना
पलना	पालना	पलवाना
बंधना	बांधना	बंधवाना
खुलना	खोलना	खुलवाना
मरना	मारना	मरवाना

४ कई एक धातुओं के आद्य स्वरको गुण आदेश कर उनमें, ट, क, ह,

होवें तो उनके स्थान में, ड, च, ख, आदेश क्रम से होते हैं, द्वितीय प्रयोजक तो प्रथम नियम से होता है; जैसा

बिकना	बेचना	बिकवाना	बिचवाना
टूटना	तोड़ना	तुड़ाना	तुड़वाना
फटना	फाड़ना	फड़ाना	फड़वाना
छूटना	छोड़ना	छुड़ाना	छुड़वाना
फूटना	फोड़ना	फुड़ाना	फुड़वाना
रहना	रखना	रखाना	रखवाना

५ कई एक धातुओं के प्रयोजक के दो दो रूप होते हैं; जैसा

सीखना सिखाना सिखलाना सिखवाना
बैठना बिठाना बैठाना बिठवाना बैठलाना बैठालना बिठालना
देखना दिखाना दिखलाना दिखवाना इत्यादि ॥
रखना रखाना रखवाना

नाम धातु ॥

कई नाम वा विशेषण के अंत्यवर्ण का लोपकर इया प्रत्यय जोड़ देते हैं, और आद्यस्वर ह्रस्व होता है; जैसा पानी-पनियाना-आधा-अधियाना ऐसी धातुओं को नाम धातु कहते हैं ॥

---

२८ पाठ

संयुक्त क्रियापद विचार ॥

प्र० संयुक्त क्रियापद किसे कहते हैं ?

उ० संयुक्त क्रियापद उस क्रियापद को कहते हैं जो अर्थ विशेष में प्रधान धातु और सहाय धातु से बनता है; उसके पांच प्रकार हैं १ गौरवार्थक २ शक्यर्थ बोधक ३ समाप्ति वाचक ४ पौनःपुन्य बोधक ५ आशंसार्थक इत्यादि ॥

१ गौरवार्थक क्रियापद उसे कहते हैं जो शुद्ध क्रियापद से अर्थ की विशेषता बताता है और वह प्रधान धातु के आगे डाल दे ना इत्यादि

धातुओं के रूप लगाने से बनता है; जैसा मारडालता है, रखदेता है, खाजाता हूं, यहां यह स्पष्ट है कि मारता है इससे मारडालता है इसमें अर्थ गौरव है; इन क्रियापदों का यह धर्म है कि अप्रधान धातु का अर्थ तत्वत: कुछ नहीं परन्तु उसके योग से प्रधान धातु का अर्थ दृढ़ होता है; छोड़देना, फेंकदेना, गिरादेना, काटडालना, तोड़डालना, होजाना, मरजाना ॥

२ शक्यर्थ बोधक वा संभावनार्थ क्रियापद काम कर सकता है ॥

३ समाप्ति वाचक वह कर चुका, कह चुकना, मार चुकना, लेचुकना, लाचुकना इत्यादि ॥

४ पौनः पुन्य बोधक क्रियापद मारा करता है, मारा करते हैं, आया करना, बोला करना, पिया करना इत्यादि ॥

५ आशंसार्थक क्रियापद बोला चाहता है, किया चाहता है, पढ़ा चाहना, देखा चाहना; यह क्रियापद कभी २ आसन्न भावीक्रिया बतलाता है जैसा मरा चाहता है, गिरा चाहता है इत्यादि ॥

प्र० संयुक्त क्रियापद के मुख्यभेद और उनका अर्थ मैं समझा, उसके और कोई भेद हों तो कहिये ?

उ० कभी २ नाम वा विशेषण के आगे धातु जोड़ने से संयुक्त क्रियापदवत् रूप बन जाता है; जैसा मेरे अपराध को क्षमाकर ॥ सातत्य वाचक क्रियापद वह करता रहताहै, वे करते रहते हैं, मारती जाती है, मारती जाती हैं, लिखता जाना, बोलता रहना, इत्यादि ॥

स्थितिवाचक क्रियापद, गाने आता है, रोते दौड़ना, हंसते चलना इत्यादि ॥

धातु साधित भाववाचक नाम के सामान्य रूप से दे और पा धातु के रूप जोड़ने से अनुमति और लग धातु के रूपों की योजना करने से प्रारंभ समझा जाता है; जैसा अनुमति देना-वह मुझे जाने देता है, उसको काम करने दो ॥

अनुमति पाना—वह लिखने पावे, जाने पाता है ॥

प्रारंभ ... ... वह काम करने लगा, पढ़ने लगी ॥

पर ऐसी जगह में करने का व्याकरण से पदच्छेद करने में ऐसा किया जावे तो भी ठीक है ॥ कभी २ नाम और विशेषण से क्रियापद की योजना

करने से नाम साधित क्रियापद होता है जैसा गोता खाना- गोता मारना- जमा करना वा होना खड़ा करना इत्यादि ॥ गाड़ी को खड़ीकर ऐसे स्थानमें खड़ीकर इतना क्रिया पद जानो-कई क्रियापद पुनरुक्ति वाचक होते हैं जैसा बोलता चालता है, बोल चालकर, समझा बुझाकर इत्यादि ॥

---

२९ पाठ ॥

अव्यय विचार ॥

प्र० अव्यय किसे कहते हैं ?

उ० जिस शब्द को विभक्त्यादिकार्य नहीं होता है,उसे अविभक्तिक अथवा अव्यय कहते हैं; इसका रूप सदा वैसाही बना रहता है अर्थात् कुछ भेद नहीं होता और इनका वाक्य रचना में बहुत प्रयोजन पड़ता है; जैसा तब, फिर, यहां इ० ॥

प्र० अव्ययों के भेद कौन २ हैं सो कहिये ?

उ० अव्ययों के चार भेद हैं, क्रिया विशेषण, उभयान्वयी, शब्दयोगी, उद्गारवाची, अथवा विस्मयादि बोधक ॥

क्रिया विशेषण अव्यय ॥

प्र० क्रिया विशेषण अव्यय किसे कहते हैं और उसके के प्रकार हैं ?

उ० जिस शब्द से क्रिया के गुण वा प्रकार का बोध होवे, उसे क्रिया विशेषण कहते हैं; जैसा धीरे चलता है, बहुत बकता है इत्यादि ॥

सामान्यतः जितने शब्द विशेषण हैं वा विशेषण से होवें वे सब क्रिया विशेषण होते हैं; हिन्दी भाषा में जो क्रिया विशेषण बारंबार आते हैं वे पांच सर्वनामों से बने हैं, उनका एक कोष्ठक आगे दिया है यह वह कौन जौन तौन इन पांच सर्वनामों से स्थल वाचक, कालवाचक, प्रकारार्थक, परिमाण-वाचक, क्रिया विशेषण अव्यय, बनते हैं ॥

	यह	वह	कौन	जौन	तौन	
१	अब	0	कब	जब	तब	कालवाचक
	0	0	कद	जद	तद	
२	यहां	वहां	कहां	जहां	तहां	स्थलवाचक
३	इधर	उधर	किधर	जिधर	तिधर	
४	यों	वों	क्यों	ज्यों	त्यों	प्रकारार्थ वा गुणवाचक
५	ऐसा	वैसा	कैसा	जैसा	तैसा	
६	इत्ता	उत्ता	कित्ता	जित्ता	तित्ता	परिमाणवाचक
७	इतना	उतना	कितना	जितना	तितना	

निश्चय वाचक अथवा दृढ़ता बोधक क्रिया विशेषण-अभी, कभी, तभी, कधी, इत्यादि हैं ॥

इसी प्रकार से दूसरे वर्ग के क्रिया विशेषणों के अंत्य आं को ई आदेश करते हैं और चौथे वर्ग के क्रिया विशेषणों के अंत्य वर्ण के आगे ही मिलादेते हैं; जैसा यहीं- कहीं- वोंही- योंहीं इत्यादि ॥ इन अव्ययों के आगे लो तक तलक इत्यादि प्रत्ययों का योग करने से मर्यादा बोधित होती है; जैसा अबलो- अबतक- अबतलक- जबतक- जबतलक इत्यादि ॥ इनमें से कभी २ द्विरुक्ति और कभी २ एक वादो का योग करने से क्रिया विशेषण बनजाते हैं जैसा कभी २ जहां तहां, जहांकहीं, जबकब जब कभी इत्यादि ॥

कई एक क्रिया विशेषणों के साथ निषेधार्थक न की योजना करने से अनिश्चितता वा सर्व व्यापकता के अर्थका बोध होता है; जैसा बरस में मेरे हाथ में कभी न कभी आवेगा, कहीं न कहीं, जब तब इत्यादि ॥

क्रिया विशेषण अव्ययों के और उदाहरण ॥

प्रकारार्थक—अकस्मात्-अचानक-अर्थात्-केवल-परस्पर -ठीक-तत्वत:-विशेषत: शीघ्र-वृथा-निपट, यथार्थ-सच-अवश्य-नि:संदेह-साधारणरूपसे-नि:संशय इत्यादि ॥

स्थल वाचक—आस-पास-आगे-पीछे-निकट-नज़दीक-पार-सर्वत्र-परे इ०॥

काल वाचक—आज-कल-परसों-नरसों- हररोज़- प्रतिदिन-सदा-बारम्बार तुरन्त- एकदा- फिर- इत्यादि ॥

प्र० कौन २ शब्द वा शब्द समुच्चय अर्थ में क्रिया विशेषण होते हैं और किस रूप से वाक्य में आते हैं ?

उ० कई गुण विशेषण और सर्वनाम का प्रथमान्त रूप वा सामान्य रूप क्रिया विशेषण होता है जैसा वह सुन्दर लिखता है अच्छा बोलता है, सीधेचलो, धीरे बोलो, वह अपना काम कैसा करता है इत्यादि ॥

धातुको कर करके इत्यादि प्रत्यय जोड़नेसे जो रूप बनता है उसकी कभी२ क्रिया विशेषणवत् योजना करते हैं; जैसा उसने हंसकर कहा, यहां हंसकर क्रिया विशेषण है ॥ पंचम्यंत नाम का अर्थ कई जगह क्रिया विशेषण-वत् होता है; जैसा जो मनुष्य नीति से चलता है वह सुख पावेगा, दिल से काम करोगे तो प्रयत्न सफल होगा, किस तरह या किस तरह से काम करोगे इत्यादि ॥

क्रिया विशेषण के साथ कभी २ विभक्ति प्रत्ययों का योग करदेते हैं; जैसा यहां का रहने वाला, आजका काम, यहां से जाओ, कहां को जातेहो इत्यादि । ऐसे स्थल में षष्ठी प्रत्ययांत शब्द विशेषणवत् और शेष शब्द क्रिया विशेषणवत् मानना ॥

उभयान्वयी अव्यय विचार ॥ +

प्र० उभयान्वयी अव्यय का क्या लक्षण है और उसके के प्रकार हैं ?

उ० जिस अव्यय का सम्बन्ध दो शब्दों के अथवा दो वाक्योंके अन्वय की तरफ होता है उसे उभयान्वयी अव्यय कहते हैं; जैसा और, पर, इत्यादि ॥ राम और कृष्ण आये, इस वाक्य में और शब्द से राम और कृष्ण इनका अन्वय आगमन क्रिया में है अर्थात् राम आया और कृष्ण भी आया ॥

जो उभयान्वयी अव्यय बारम्बार बोलने लिखने में आते हैं, उनका कुछ परिगणन ॥

समुच्चय वाचक......और - भी

कारण वाचक ......क्योंकि

+ उभयान्वयी विचार को शब्द योगी अव्यय विचार के पीछे पढ़ो ॥

पक्षान्तर बोधक ...पर-परन्तु-किन्तु-वा-या-अथवा-नहींतो-चाहे-
संकेतार्थक.........यदि-जो-तो-तथापि-तोभी
स्वरूप बोधक ...... कि-

शब्दयोगी अव्यय ॥

प्र० शब्दयोगी अव्यय किसे कहते हैं और उनकी योजना किस रीति से होती है ?

उ० जिस अव्यय से स्थल और काल का बोध होता है और जिसकी योजना नाम और सर्वनाम के साथ होने से उनका षष्ठ्यन्त सामान्य रूप प्रायः होता है, उसे शब्द योगी अव्यय कहते हैं ॥ हिन्दी भाषा में शब्द योगी अव्यय तो केवल सप्तमी विभक्त्यन्त नाम हैं परन्तु विभक्ति प्रत्यय लुप्त हैं, इसलिये जब इन अव्ययों की योजना की जावे तब पूर्वनाम को और सर्वनाम षष्ठी विभक्ति का के प्रत्यय लगाते हैं और उसके आगे अव्ययों को बोलते; पर बिन वा बिना यह शब्द योगी अव्यय बहुधा नाम के पूर्व आता है; जैसा, मरद के आगे, लड़केकेपास, उसके, समक्ष, बिना स्याही के काम नहीं चलता है ॥

शब्दयोगी अव्ययों की गणना ॥

आगे-अन्दर - भीतर- ऊपर-बाहर-बराबर -बदल-बदले -समीप -बीच पास- पीछे-तले-सामने-गिर्द-नज़दीक-नीचे-पार-बाद-बिन- बिना-साथ-लिये-मारे समक्ष ॥

इनमें से कोई २ शब्दयोगी अव्यय सर्वनामों के साथ आवें तो उनका विभक्ति सामान्य रूप होता है, षष्ठी का प्रत्यय नहीं जोड़ते हैं; जैसा जिसलिये, उसबिना, किस लिये इत्यादि ॥

सहित-समेत-सुधा इत्यादि शब्दयोगी अव्यय नाम के साथ आवें तो नाम से षष्ठी विभक्ति नहीं होती; जैसा बाल गोपाल समेत कृष्णजी आये, गोपी सहित इ० ॥

शब्द योगी अव्यय नाम वा सर्वनाम के साथ न आवें तो वे क्रिया विशेषण अव्यय होते हैं ॥

केवल प्रयोगी विस्मयादि बोधक अव्यय ॥

प्र० केवल प्रयोगी अव्यय क्या बतलाता है ?

उ० जिन अव्ययों से कहने वाले का दुःख हर्ष धिक्कार धन्यता इत्यादि मन के भाव समझे जाते हैं, उन्हें केवल प्रयोगी अव्यय कहते हैं जैसा ॥

दुःख और, धिक्कार बोधक—बापरे, हाय, हाय, अरे रे, ऊः, हाहा, धिक्, दूर दूर, चुप, छः

हर्ष और धन्यता बोधक—जय जय, शाबाश, वाहवा, धन्य धन्य, बाजीआ, सम्मुखी करण बोधक—अय, ओ, अरे, हे, अबे ॥

साधित शब्द विचार ॥

---

३० पाठ ॥

धातु साधित शब्द ॥

पूर्व में मूल प्रकृति को और साधित शब्दों को विवक्षित रूप बनाने के लिये जो विभक्ति प्रत्ययादि कार्य विशेष करना अवश्य है, उसका वर्णन किया अब मूल सिद्ध शब्दों से जो साधित शब्द बनते हैं उनका व्युत्पत्ति प्रकार लिखता हूं ॥

प्र० साधित शब्द किसे कहते हैं ?

उ० जो शब्द मूल शब्द से प्रत्ययादि लगाके बनते हैं, उनको साधित शब्द कहते हैं ॥

प्र० साधित शब्दों के कितने भेद हैं ?

उ० दो; एक, धातु से बने हुए शब्द इनको सँस्कृत में कृदंत कहते हैं; दूसरा, धातु से अन्य जो शब्द उनसे बनेहुए शब्द इनको सँस्कृत में तद्धित कहते हैं ॥ .

प्र० धातु साधित शब्दों के के प्रकार हैं, और वे शब्द किस रीति से बनते हैं यह मुझे समझाइये ?

उ० धातु साधित शब्द तीन प्रकार के हैं नाम, विशेषण, और अव्यय, ये धातु के आगे प्रत्ययों की योजना करने से बनजाते हैं ॥

धातु साधित नाम ॥

धातुके आगे कौन २ प्रत्यय जोड़ने से धातु साधित नाम बनते हैं ?

उ० ना—धातु के आगे यह प्रत्यय लगाने से और कभी २ केवल धातु का शुद्ध रूप भाव वाचक नाम होता है; जैसा सोना, करना, बोलना, चाह, बोल इ० ॥

वाला, हारा—भाववाचक नाम के अंत्य ना को ने में बदल कर आगे इन प्रत्ययों को जोड़ने से कर्तृवाचक होता है; जैसा बोलने वाला, बोलने हारा, करने वाला, करने हारा इत्यादि ॥

अक, वैया—कईधातुओं को ये प्रत्यय मिलाकर कर्तृ वाचक बनाते हैं; जैसा पाल, पालक; पूज, पूजक; जीत, जितवैया; जल, जलवैया इत्यादि ॥

कई धातुओं से भाववाचक आगे लिखेहुए प्रत्यय बहुल + करके लगाने से होते हैं ॥

धातु	प्रत्यय	साधित शब्द
कह	आ	कहा
बो	आई	बोआई
मिल	आप	मिलाप
जल	न	जलन
पी	आस	प्यास
भुला	वा	भुलावा
सजा	आवट	सजावट
घबरा	आहट,	घबराहट

साधनार्थक नाम ॥

कतर - नी - कतरनी ; झाड़ - ऊ - झाड़ू ; बेल - अन - बेलन इ० ॥

धातु साधित विशेषण ॥

प्र० धातु साधित विशेषण किसरीति से बनता है ?

+ कहीं होना और कहीं न होना इसको बहुल कहते हैं ॥

उ० वर्तमान और भूतकाल वाचक धातु साधित विशेषणों का वर्णन क्रियापद प्रकरण में किया है; उन धातु साधित विशेषणों की वाक्य में योजना करना होवे, तो उन के आगे हो धातु के भूतकाल वाचक विशेषण के रूपों का योग लिंग वचनानुसार करते हैं ॥

पुँल्लिङ्ग		स्त्रीलिंग	
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
बोलताहुआ	बोलतेहुए	बोलतीहुई	बोलतीहुईं
बोलाहुआ	बोलेहुए	बोलीहुई	बोलीहुईं

सकर्मक धातु से बनाहुआ वर्तमान काल वाचक विशेषण कर्तृवाचक होता है; और भूतकाल वाचक विशेषण कर्म वाचक होता है, जैसा करता हुआ मनुष्य, किया हुआ काम इ० ॥

अकर्मक धातु से बनेहुए, वर्तमान काल वाचक और भूतकाल वाचक विशेषण सदा कर्तृवाचक होते हैं; जैसा जाता हुआ आदमी, गयाहुआ आदमी इत्यादि ॥

धातु साधित अव्यय ॥

प्र२ धातु साधित अव्यय किसरीति से बनते हैं ?

उ० शुद्धधातु वा उस से कर के करके करकर इत्यादि प्रत्यय जोड़ने से भूतकाल वाचक अव्यय होता है जैसा बोल बोलकर, बोल कर के, बोल के, इत्यादि ॥

---

३१ पाठ ॥

धात्वन्य शब्द साधित—साधित नाम ॥

प्र० धातुओं से अन्य जो शब्द उन से और शब्द कैसे बनते हैं यह बतलाइये ?

उ० वान-मान-ई-नाम को ये प्रत्यय मिलाकर स्वामि वाचक शब्द होता है अर्थात् नाम बोधित वस्तु उस प्राणी के पास है; ई प्रत्यय अंत्य स्वरको आदेश होता है; जैसा धनवान, बुद्धिमान, पापी इत्यादि ॥

वाला—नाम को यह प्रत्यय जोड़ने से कर्तृवाचक वा स्वामि वाचक होता है, आकारान्त पुँल्लिङ्ग नाम के अंत्य आ को ए आदेश कर प्रत्यय जोड़ा जाता है; जैसा घोड़े वाला, बैलवाला, धनवाला इ० ॥

पूर्वोक्त अर्थमें कई एक नामों से और भी प्रत्यय बहुल करके होतेहैं; जैसा ॥

नाम	प्रत्यय	सिद्धनाम	नाम	प्रत्यय	सिद्धनाम
राह	वर	राहवर	नाल	बन्द	नालबन्द
मशाल	ची	मशालची	ज़मीन	दार	ज़मींदार
लड़का	पन	लड़कपन			

नाम	प्रत्यय	सिद्धशब्द	नाम	प्रत्यय	सिद्धशब्द
लोहा	आर	लोहार	उमेद	वार	उमेदवार
पानी	हारी	पनहारी			
घड़ि	याल	घड़ियाल			

इसरीतिसे और भी जानो ?

भाव वाचक ॥

विशेषणों से भाव वाचक, करना होतो ये प्रत्यय लगाने से होते हैं ॥

विशेषण	प्रत्यय	भाववाचक	विशेषण	प्रत्यय	भाववाचक
गरम	ई	गरमी	कम	ती	कमती
बूढ़ा	पा	बुढ़ापा	भला	पन	भलापन
मीठा	स	मिठास	बुरा	ई	बुराई
कड़वा	हट	कड़वाहट	लघु	त्व, ता,	लघुत्व, लघुता
					सँस्कृतमें त्व ता होते हैं
चतुर	आई	चतुराई			इत्यादि और भी जानो ॥

कहीं २ य प्रत्यय होता है वहां आद्यस्वर को वृद्धि और अंत्य स्वरका लोप करके जो अंत्यहल् रहा उसे य में जोड़ते हैं, जैसा उदार य औदार्य कृपण य कार्पण्य-सुन्दर-य-सौंदर्य-इत्यादि ॥

न्यून वाचक ॥

आकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्द के अंत अ को ई आदेश करने से न्यून वाचक होता है; जैसा रस्सा, रस्सी; लोटा, लोटी; डोला, डोली; छुरा, छुरी इ०

शब्द	प्रत्यय	साधितशब्द
बेटी	इया	बिटिया
बाग़	ईचा	बग़ीचा
तोप	अक	तुपक

साधित विशेषण ॥

नामसे विशेषण बनाने होवें तो आगे लिखे हुए प्रत्यय जोड़ने से होजाते हैं; जैसा ॥

नाम	प्रत्यय	साधितविशेषण	नाम	प्रत्यय	सा०वि०
भूख	आ	भूखा	मोह-धर्म-अक-इक-मोहक-धर्मिक		
बैल	ई	बली	दुःख	इत	दुःखित
बल	इष्ठ	बलिष्ट	रंग	ईला	रंगीला
घर	ऊ	घरू	पच	गुना	पचगुना
सागर	वाला	सागरवाला	नाम	वर	नामवर
धन	वंत	धनवंत	दया	वान	दयावान
			कृपा-दया लु-		कृपालु, दयालु

---

३२ पाठ ॥

उपसर्गविचार ॥

प्र० जिस भांति से धातु वा अन्य शब्द के आगे प्रत्ययों की योजना होने से साधित शब्द बनते हैं वैसे शब्द के पूर्व अक्षर वा अक्षर समुच्चय जोड़ने से साधित शब्द होते हैं वा नहीं ?

उ० ठीक प्रश्न किया धातु वा अन्य शब्दके पूर्व अर्थ रहित एक वर्ण वा वर्ण समुच्चय जोड़ा जाता है, अन्य शब्द के योगसे वे सार्थक होते हैं, इनको सँस्कृत में उपसर्ग कहते हैं, उपसर्ग के योगसे भिन्न २ अर्थ होते हैं ॥

अ—निषेधार्थक, जैसा अपूर्व, असत्य, अक्षत इ० ॥ शब्द के आदि में स्वर होवे तो अन् होता है; जैसा अनादि, अनायास, अनिष्ट इ० ॥

अप——वियोगार्थक, अपराध-अप्रकीर्ति इ० ॥

अति——बहुत, दूर…अतिदुष्ट, अति कृपण इ० ॥

अधि——अधिक, उपर, अधिपति, अधिकार इ० ॥

अनु——पीछे, समान; अनुयायी, अनुसार, अनुरूप इ० ॥

अन्त——भीतर; अंतर्गत इ० ॥

अभि——तरफ़; अभिप्राय, अभिलाष इ० ॥

अव——नीचे, वियोग, दूर; अवगुण, अवतार, अवज्ञा इ० ॥

आ——प्रति, उलटा, मर्याद, अवधि; आराम, आगमन, आदान, आमूल इ० ॥

उत्——ऊपर; उत्पन्न, उत्कर्ष इ० ॥

उप——निकट, सदृश; उपगुरु, उपवन इ० ॥

कु——ख़राब, कुत्सित; कुमार्ग, कुपुत्र इ० ॥

दुस्-दुर्——कठिन, ख़राब; दुराचार, दुर्घट, दुष्कर्म इ० ॥

नि——नीचे, निकृष्ट, निपात इ० ॥

निर्——बाहर, निषेध; निरपराध, निराकार इ० ॥

परा——पीछे, पराजय; पराभव इ० ॥

परि——आसपास; परिपूर्ण, परिभ्रमण इ० ॥

प्रति——विरुद्ध, उलटा; प्रत्युत्तर, प्रतिस्पर्धी इ० ॥

स-सह——सकाम, सलज्ज इ० ॥

वि——वियोग; विधवा, विजातीय इ० ॥

सु-सं——अच्छा; सुपुत्र, सुगम, सुमार्ग, सुलभ, सम्मान, संगति इ० ॥

---

२३ पाठ ॥

सामासिक शब्द विचार ॥

प्र० सामासिक शब्द किसे कहते हैं ?

उ० दो अथवा अधिक शब्द मिलकर जो एक शब्द बनता है, उसे सामासिक शब्द कहते हैं; जैसा देवाज्ञा, मा बाप, गिल्लीदंडा, सेला पगड़ी,

इत्यादि ॥ यहां गिल्ली और दंडाये दो शब्द मिलकर गिल्लीदंडा यहशब्द हुआ है, इसीतरह से और भी जानो ॥

इन शब्दों का आपस में जो सम्बन्ध है, उसे समास कहते हैं; जैसा गिल्लीदंडा यह द्वंद्व समास है; समास से जो बनाहुआ शब्द है उसे सामासिक शब्द कहते हैं, और जिससे समास का अर्थ समझा जावे उसवाक्य को विग्रह कहते हैं; जैसा देवाज्ञा, देव की जो आज्ञा सो देवाज्ञा ॥

प्र० समास कितने प्रकार के हैं ?

उ० समास छः प्रकार के हैं, द्वंद्व तत्पुरुष कर्मधारय द्विगु बहुब्रीहि और अव्ययी भाव ॥

द्वंद्व समास ॥

प्र० द्वंद्व समास किसे कहते हैं ?

उ० दो अथवा अधिक शब्दों का योग होकर बीच के और शब्द का लोप होवे, उसे द्वंद्व जानो; इस समास में उत्तर शब्द जो लिंग वही सामासिक शब्द का लिंग बना रहता है; रामकृष्ण, मा बाप, इनको पुँल्लिङ्ग जानो; यहां राम और कृष्ण, मा और बाप, यह विग्रह हैं ॥

हिन्दी भाषा में द्वंद्व का और भी एक प्रकार है उसे समाहार द्वंद्व कहते हैं, दो शब्दों के योग से तदंतर्गत का समावेश होता है; जैसा हाथ पांव टूटे, यहां हाथ और पांव के बीच में जो अवयव हैं उनका भी संग्रह होता है, इसीतरह से सेठसाहूकार, दालरोटी इत्यादि जानो ॥

तत्पुरुष समास ॥

प्र० तत्पुरुष समास किसे कहते हैं और उसके के प्रकार हैं ?

उ० तत्पुरुष समास उसे कहते हैं कि जिस में उत्तर पद प्रधान हो और उसकी तरफ़ पूर्व शब्दकी विभक्ति का सम्बन्ध होकर विभक्ति का लोप हो इसमें द्वितीयादि विभक्तियों के योग से छः प्रकार होते हैं; जैसा

विभक्तिकेतत्पुरुष	विग्रहवाक्य	सिद्धसामासिकशब्द	विभक्तिलोप
२ द्वितीयातत्पुरुष	द्विजकोताड़न	द्विजताड़न	द्वितीयाकालोप
३ तृ- त-	भक्ति से वश्य	भक्तिवश्य	तृ- लो-

४ च- त-	यज्ञकेलियेस्तम्भ	यज्ञस्तम्भ	च- लो-
५ पं- त-	पदसेच्युत	पदच्युत	पं- लो-
६ ष- त-	देवकाभक्त	देवभक्त	ष- लो-
७ स- त-	शास्त्रमेंनिपुण	शास्त्रनिपुण	स- लो-

जब प्रौढ़ भाषण में सर्वनाम का समास होता है, तब उसका रूप सँस्कृत के नियम से होजाता है जैसा मेरा जन्म, मज्जन्म; तेरा भाग्य, त्वद्भाग्य; मेरा वस्त्र, मद्वस्त्र; तेरागुण, त्वद्गुण; यहां मैं तू के मत् त्वत् सँस्कृत के अनुसार रूप होते हैं इसी तरह से और भी जानो ॥

हिन्दी भाषा में सर्वनाम के रूप सँस्कृत के रूप वत् समास में होते हैं ॥

हिन्दी में सर्वनाम के रूप	सँस्कृतमें	सामासिक रूप
वह वे	तत्-चरित्र	तच्चरित्र, तद्धन
मैं हम	मत्-भाग्य अस्मत्-	मद्भाग्य, अस्मद्भाग्य
तू तुम	त्वत्-गृहं युष्मत्	त्वद्गृहं, युष्मद्गृहं
यह ये	एतत्-देशीय	एतद्देशीय

प्र० कर्म धारय समास का लक्षण बतलाइये ?

उ० जहां वक्ता की इच्छा से दोनों शब्दों का भाव तुल्यहो अथवा दोनों का उपमान उपमेय भाव सम्बन्ध होवे अगर विशेष्य विशेषण भाव होवे तो उस समास को कर्म धारय जानो; जैसा ॥

भक्तिमार्ग.........भक्तिवहीमार्ग.........भक्तिरूपीमार्ग

चन्द्रमुख	चंद्रवत्मुख	उपमान वाची वत् का लोप हुआ
नीलकमल	नीलऐसा जोकमल	विशेष्य विशेषण भाव समास

द्विगु समास ॥

प्र० द्विगु समास किसे कहते हैं ?

उ० जहां पूर्व पद संख्यावाची होकर पूर्वोत्तरपदों से समास किया जाता है उसे द्विगु समास कहते हैं; और यह समास बहुधा समाहार अर्थमें

आता है; जैसा आष्टाध्यायी, आठ अध्यायों का समूह उसे अष्टा ध्यायी कहते हैं, इसी तरह से चतुर्युग, त्रैलोक्य, इत्यादि जानो ॥

बहुब्रीहि समास ॥

प्र० बहुब्रीहि समास किसे कहते हैं ?

उ० जहां दो अथवा अधिक शब्दों के योग से अन्य पदार्थ का बोध होता है, उसे बहुब्रीहि जानो; जैसा चक्रपाणि चक्र है पाणि में जिसके अर्थात् विष्णु का बोध होता है; इसी तरह से चतुर्भुज (विष्णु) दशमुख, (रावण) जानो ॥ ये बहुब्रीहि समास बने हुए शब्द विशेषण होते हैं, और इनका लिंग वचन विशेष्य के अनुसार होता है ॥ यह समास द्वितीयादि छः विभक्तियों में होता है, परन्तु हिन्दी में बहुधा तृतीया, षष्ठी, सप्तमी इन विभक्तियों के उदाहरण आते हैं; जैसा जित क्रोध, जीता है क्रोध जिसने, दीर्घ बाहु, दीर्घ अर्थात् बड़े हैं बाहु जिसके, बहु धनिका नगरी, बहुत हैं धनिक जिस नगरी में, इत्यादि जानो ॥

अव्ययी भाव समास ॥

प्र० अव्ययी भाव समास किसे कहते हैं ?

उ० जिस में हर, प्रति इत्यादि अव्ययों के साथ दूसरे शब्द से समास होता है, उसे अव्ययी भाव समास कहते हैं; जैसा हर घड़ी, प्रतिदिन इत्यादि, और ये शब्द क्रिया विशेषण होते हैं ?

---

१ पाठ ॥

वाक्य का लक्षण रूप और पृथक्करण ॥

वाक्य विचार ॥

प्र० वाक्य विचार में किस का वर्णन किया जाता है ?

उ० शब्दों की योजना अर्थात् किस स्थल में कौन शब्द किस रीति से रखना चाहिये और उनका परस्पर संबंध इत्यादिकों का विचार किया जाता है ॥

प्र० वाक्य किसे कहते हैं ?

उ० शब्दों की सुसंबद्ध व्यवस्था जो बात पूरी करे उसे वाक्य कहते हैं; जैसा गोविंद सोता है, धीमर मछली मारता है ॥

प्र० वाक्य के कौन २ रूप होते हैं ?

उ० वाक्य के पांच प्रकार के रूप होते हैं; कथनात्मक, प्रश्नार्थक,+ आज्ञार्थक, विस्मयादि बोधक, इच्छा प्रबोधक; जैसा वह घर को गया, यहां उसका उद्देश्य करके घरका जाना कथन है; तू क्या करता है, यह प्रश्नार्थक है; तू हाट को जा, यह आज्ञार्थक; वा: क्या समयोचित उत्तर दिया विस्मयादि बोधक; ईश्वर तुम्हें सुखी रक्खे, यह इच्छा प्रबोधक है ॥

प्र० वाक्य में कौन २ शब्द अवश्य हैं ॥

उ० वाक्य में उद्देश्य और विधेय अवश्य हैं, जिस के विषय कोई बात कही जाय उसे उद्देश्य कहते हैं; और उद्देश्य के विषय में जो बात कही जाय उसे विधेय कहते हैं; जैसा वह आया, इस वाक्य में वह उद्देश्य और आया विधेय हैं, इससे स्पष्ट है कि प्रत्येक वाक्य में कम से कम नाम वा नाम समान दूसरा शब्द और क्रियापद ये दो चाहिये, सकर्मक क्रियापद होवे तो कर्म अवश्य चाहिये, यह वाक्य की केवल मूल स्थिति समझाई; उद्देश्य और विधेय को बढ़ाना हो तो दोनों के साथ गुण बोधक शब्दों का योग करना चाहिये इस प्रकार से वाक्य के चार भाग हुए दो प्रधान और दो अप्रधान ॥

प्रधान		अप्रधान	
उद्देश्य	विधेय	उद्देश्य गुण वाचक	विधेय गुण वाचक
नाम, सर्वनाम विशेषण वा कभी २ वाक्य	क्रियापद, वा हो धातु के साथ नाम वा विशेषण	विशेषण, वा विशेषणवत् शब्द वा वाक्य	क्रिया विशेषण, वा क्रिया विशेषणवत् शब्द वा वाक्य

\+ कथनात्मक और प्रश्नार्थक वाक्यों की रचना कभी २ एकसी ही होती है ॥ निर्णय उसका पूर्वा पर सम्बन्ध से होता है जैसा तुम जाओगे" यहां क्या लग सके तो प्रश्न होगा पर दूसरा कोई वाक्य जोड़ा जाय और क्या न लग सके तो कथनात्मक होगा ॥ जैसा तुम जाओगे तो मेरा संदेशा भी ले जाओ ॥

उद्देश्य के घरमें नाम, सर्वनाम इत्यादि जो लिखे हैं उनसे यह समझो कि नाम वा सर्वनाम वा विशेषण वा वाक्य उद्देश्य होता है ॥ इसी तरह से और भी जानो ॥

उदाहरण ॥

"चिड़िया उड़ती है-	यहां नाम उद्देश्य है- ...
"वह" गया-	सर्वनाम- ... ...
"बहुत से"बुलाये गयेथे किंतुथोड़े से"पसंद हुए-	विशेषण- ... ...
लोगोंको उचित है कि"क्रोध, ईर्षा, छल, लालच, घमंड, चुगली, आदि बुराइयों को अपने चित्तमें, न रहने देवें"	वाक्य ... ...
"विद्यावान" पुरुष सब जगह प्रतिष्ठा पाता है-	यहां विशेषण उद्देश्य गुण वाचक है- ... ...
जिसके पास विद्या है"वह सब जगह प्रतिष्ठा-पाता है-	विशेषणवत् वाक्य ...
"अच्छे चाल चलनका"मनुष्य सब जगह मान्य-होता है-	विशेषण वत् शब्द ...
"ध्यान पूर्वक"काम करता है-	यहां क्रिया विशेषण विधेय... गुण वाचक है ... ...
वह"दिल लगा के"वा"दिलसे" काम करता है	क्रिया विशेषणवत् शब्द ...
"जैसाचोकस मनुष्यकामकरताहै"वैसा वहकरताहै	क्रिया विशेषणवत् वाक्य ...
वह"नहीं देख सकता"	यहां क्रियापद विधेय है ...
वह"अंधा है-	हो धातुके साथ विशेषण ...

ऐसे स्थलमें है को केवलउद्देश्य और विधेयका संयोजक अर्थात् मिलाप करने वाला कहते हैं; पर उस बाग़ में एक वृक्ष है, ऐसे स्थान में है मुख्य क्रियापद वा विधेय होता है, बहुधा है का समावेश विधेय में किया जाता है ॥

वाक्य का अर्थ पूरा होने के लिये जो शब्द अवश्य है, उसे विधेयार्थ पूरक+ कहते हैं; ॥

+ सकर्मक क्रियापद के साथ कर्म को अवश्य कहना चाहिये ॥ यह कर्मसदा विधेयार्थ पूरक होता है ॥

और जिस शब्द से वाक्य के अर्थका विशेष ज्ञान होता है, उसको विधेयार्थ वर्धक कहते हैं, वाक्य का पृथक्करण इसरीति से होता है; जैसा ॥

विद्यावान मनुष्य सब जगह प्रतिष्ठा पाता है,

उद्देश्य	विधेय	विधेयार्थ पूरक	विधेयार्थ वर्धक
विद्यावानमनुष्य	पाताहै	प्रतिष्ठा	सबजगह

प्र० वाक्यमें शब्दों की योजना किस तरह से होती है ?

उ० सामान्यत: वाक्यके अवयवों की व्यवस्था इस तरह से होती है, कि पहिले कर्ता वा उद्देश्य, दूसरे विधेय पूरक वा कर्मादि कारक, और सबके पीछे क्रियापद आता है; विशेषण विशेष्यके पूर्व और षष्ठ्यन्त नाम वा सर्व नाम संबंधी के पूर्व आते हैं ॥ जैसा मैंने शेर को तलवार से खाल के लिये भरका से निलकतेही जंगल में मारा, उसने अपने छोटे भाई को मारा यह नियम छोटे वाक्यों के लिये है ॥ कविता में और गद्य में जहां विरोध वा किसी शब्दको ज़ोरसे कहना हो तहां यह नियम काम में नहीं आता; जैसा ॥

शकुन्तलानाटक ॥

इनको (अर्थात् दुर्वासाको) छोड़ और किसीको ऐसी सामर्थ्य नहीं है कि अपराधी को शाप से भस्म करदे ॥

रामायणमें ॥

रंग भूमि आये दो भाई । अस सुधिसब पुरवासिन पाई ॥
चले सकल गृहकाज बिसारी । बालक युवा जरठ नर नारी ॥

---

२ पाठ ॥

कर्ता और क्रियापद का मिलाप ॥

प्र० कर्ताऔर क्रियापद का मिलाप किस तरह से होता है ?

उ० वाक्यमें नाम वा सर्व नाम वा विशेषण उद्देश्य होवे तो वह सदा प्रथमा विभक्ति में रहता है ॥ साधारणत: हिन्दी में क्रियापद का लिंगवचन

और पुरुष कर्ता के लिंग वचन और पुरुषके सदृश होते हैं; पर इस नियम के कई अपवाद हैं उन को ध्यान में रक्खो ॥

(१) आदरार्थ में एक वचनान्तकर्ता के साथ बहुवचनान्त क्रियापद आताहै ॥

(२) मनुष्य से अन्य जीव वा पदार्थ बोधक शब्द दो अथवा अधिक एक वचन में आवें तो क्रियापद एकवचन में विकल्प से आता है ॥

(३) कर्ता भिन्न लिंगी होवे तो क्रियापद पुँल्लिङ्ग में आता है, वा सब से निकट जो कर्ता होवे तदनुसार होता है ॥

(४) जब क्रियापद सकर्मक धातु साधित भूतकाल वाचक विशेषण से बना होवे तब कर्ता को तृतीया विभक्ति का प्रत्यय लगाते हैं कर्म प्रथमान्त होवे तो तदनुसार क्रियापद का रूप बनता है, और कर्म द्वितीया विभक्ति में हो तो क्रियापद तृतीय पुरुष पुँल्लिङ्ग एकवचन में आता है ॥

उदाहरण ॥

वह लिखता है, वह लिखती है, वे लिखते हैं, वे गाती हैं, हे सखी हमारी सहेली शकुन्तला का गान्धर्व विवाह हुआ, और पतिभी उसी के समान मिला, इस से हमारे मन को सुख हुआ परन्तु फिरभी चिन्ता न मिटी ॥

(१) इसकी कुछ चिन्ता मतकरो, ऐसे गुणवान मनुष्य कभी निर्लज्ज नहीं होते हैं, अब चिन्ता की बात यह है कि न जाने पिता कण्व इस वृत्तान्त को सुनकर क्या कहेंगे ॥ यहां मनुष्य और पिता एकवचन हैं, तो भी क्रियापद बहुवचन में है ॥

शत्रु का पराजय करके राजा फिर नगर में आये और राज करने लगे ॥

(२) अभी बैल और घोड़ा पहुंचा है यहां दो कर्ता हैं पर क्रियापद एकवचन में है ॥ जन धन स्त्री और राज मेरा क्यों न सब गया आज ॥

(३) उसके मा बाप भाई तीनों उसके विवाह की चिन्ता में थे, यहां यद्यपि एक कर्ता स्त्रीलिंग है तथापि क्रियापद पुँल्लिङ्ग में है, उसकी गाड़ी ऊंट घोड़े हाथी लादे जाते हैं, लड़के लड़कियां वहां दौड़तीं थीं इस वाक्यमें क्रियापद निकट कर्ता लड़कियां के अनुसार है ॥

(४) हम बन बासियों ने ऐसे भूषण आगे कभी नहीं देखे थे, यह वही मृगछौना है जिस को तैंने पुत्र सम पाला है ॥

वाक्यांश वा वाक्य क्रियापद का कर्ता होवे तो क्रियापद तृतीय पुरुष पुँल्लिङ्ग एकवचन में आता है; जैसा इनका थोड़ा सीधा होना भी बहुत है, लोगों को उचित है कि जो काम करना हो उस के गुण दोष पहिले सोच लेवें ॥

क्रियापद के कर्ता भिन्न २ पुरुष वाचक होवें तो यह नियम है कि प्रथम और द्वितीय पुरुष वाचक सर्वनाम कर्ता होवे तो क्रियापद प्रथम पुरुष में चाहिये, द्वितीय और तृतीय पुरुष वाचक कर्ता होवे तो क्रियापद द्वितीय पुरुष में चाहिये जैसा हम तुम उस काम को करेंगे, तुम और वे जाओ ॥

पाठ ३ ॥

विशेष्य विशेषण का मिलाप ॥

प्र० विशेष्य विशेषण की योजना वाक्य में कैसी होती है ?

उ० विशेषण सदा प्रत्यक्ष वा अध्याहृत नाम वा सर्वनाम का गुण बताता है और वह प्राय: विशेष्य के पूर्व आता है, पूर्व में लिखा है कि आकारान्त विशेषणों को छोड़ शेष विशेषणों के रूप में विशेष्य के लिंग वचनानुसार कुछ भेद नहीं होता; आकारान्त विशेषण का लिंग वचन विशेष्य के अनुसार होता है, उसका यह स्वभाव है कि विशेष्य पुँल्लिङ्ग बहुवचनान्त होवे वा एकवचन में द्वितीयादि विभक्त्यन्त वा शब्द योगी अव्यय समेत हो, तो विशेषण के अंत्य आ को ए आदेश करके सामान्य रूप करते हैं; और विशेष्य स्त्रीलिंग हो तो आ को ई आदेश होता है ॥ यह नियम जो शब्द विशेषण के समान अर्थात् सर्वनाम और धातु साधित विशेषण वाक्य में आते हैं उन्हें भी लगता है; जैसा सीधा मनुष्य, सीधे मनुष्य, सीधे मनुष्यों को, सीधी स्त्री या स्त्रियां, सीधी स्त्रियों को, गंगा के तीर घर घर बनाया है, इस लड़के का पालने हारा कौन है, तुम्हारी घड़ी अच्छी है,

उसका मन उदास है, पांचवां लड़का, पांचवें लड़के ने, गिरा हुआ घर, गिरी हुई हवेली ॥

सामान्य नियम ये हैं कि विशेषण विशेष्य के साथ आवे तो उस विशेषण से बहुवचन के प्रत्यय आं ईं एं ओं वा विभक्ति प्रत्यय नहीं जोड़ते; जैसा अच्छी किताबें, अच्छे लड़कों को ॥ पर विशेष्य प्रत्यक्ष न होवे तो विशेषण से बहुवचन के प्रत्यय और विभक्ति प्रत्यय का योग होता है, जैसा ग़रीबों का देना उचित है धनवान का सर्वत्र आदर होता है, साधु अपने समान सबों को मान कर उनपे दया करते हैं ॥

आकारान्त विशेषण के विशेष्यको को प्रत्यय का योग करके विशेषण क्रियापद के साथ जोड़ा जावे तो उसके रूप में कुछ भेद नहीं होता; जैसा उसके मुह को काला करो, पर यह नियम सर्वत्र व्यापक नहीं है, क्योंकि नाम यदि स्त्रीलिंग होवे तो विशेषण स्त्रीलिंगी बहुधा रखते हैं यद्यपि उसका योग क्रियापद के साथ किया हो; जैसा लाठी को सीधी कर, रस्सी को लम्बी करो ॥

विशेषण भिन्न लिंगी दो वा अधिक नामों का गुण बतावे तो विशेषण पुँल्लिङ्ग नाम के अनुसार होता है, पर अंत्य विशेष्य स्त्रीलिंगी होकर विशेषण के निकट होवे तो विशेषण स्त्रीलिंग में आता है जैसा उसके मा बाप जीते हैं, उसके लड़के लड़कियां अच्छी हैं ॥ परंतु विशेष्य अप्राणि-वाचक नाम होवें तो विशेषण समीप विशेष्य के अनुसार रहता है; जैसा कपड़े बासन किताबें बहुत अच्छी हैं, कलकी हाट में अनाज तरकारी फल महंगे थे ॥

जब दो अथवा अधिक विशेषण नाम का गुण बतावें और उनमें से एक दूसरे का विशेषण हो, तो भी उनमें से आकारान्त विशेषण का रूप विशेष्य के लिंग वचनानुसार होता है; जैसा बड़ा ऊंचा वृक्ष, बड़ी लंबी रस्सी ॥

---

४ पाठ

कारक विचार ॥

प्र० कारक किसे कहते हैं और वे कितने प्रकार के हैं ?

उ० जिसका क्रिया में अन्वय हो अर्थात् संबंध हो उसे कारक कहते हैं, उस के छः प्रकार हैं; जैसा कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान, अधिकरण ॥

प्रथमा विभक्ति का वर्णन ॥

प्र० प्रथमा विभक्ति कौन अर्थ बतलाती है ?

उ० कर्ता, कर्म, विधेय, अवधि, परिमाण, इन पांच अर्थोंमें प्रथमा होतीहै। कर्ता—जो क्रिया के व्यापार को करे उसे कर्ता कहते हैं ॥ वह दो प्रकार का है; एक, प्रधान; दूसरा, अप्रधान; जिस कर्ता के लिंग वचन और पुरुष के अनुसार क्रियापद का लिंगवचन और पुरुष होता है उसे प्रधान कर्ता कहते हैं जैसा गुरू विद्यार्थियों को पढ़ाता है, इसी प्रकार से लड़के रोटी खाते हैं; औरतें नहाती हैं इत्यादि वाक्यों में जानो ॥ अप्रधान कर्ता का वर्णन, तृतीया के वर्णन में करेंगे ॥ एकनाम वा सर्वनाम दो अथवा अधिक क्रियापदों का कर्ता होवे तो वह केवल प्रथम क्रियापद के पूर्व आता है, और शेष क्रिया पदों के साथ उसका अध्याहार करते हैं; जैसा मैं अपने मालिक के पास जाऊंगा और कहूंगा कि महाराज मुझ से यह अपराध हुआ है कृपा करके क्षमा कीजिये ॥

कर्म—कर्मवाचक शब्द से प्रथमा विभक्ति होती है; जैसा देवदत्त ने पोथी लिखी है, सुन्दर लाल ने किताब बेंची, लक्ष्मी ने कपड़े धोये इत्यादि; यहां लिखना बेंचना धोना आदि व्यापारों का फल पोथी किताब कपड़ों पर है इसी से वे कर्म हैं और प्रथमा विभक्ति में हैं ॥

विधेय—नाम वा सर्वनाम को उद्देश्य करके उसके विषय में किसी एक अर्थ का विधान किया जावे, तो उस विधेयवाचक नाम से प्रथमा होती है; जैसा हीरा लाल ब्राह्मण है, वज़ीरा मुसलमान है, यहां हीरा लाल वा वज़ीरा का उद्देश्य करके ब्राह्मणत्व और मुसलमानी का विधान किया है इसलिये ब्राह्मण और मुसलमान विधेयार्थ में प्रथमा हैं ॥

कई एक अकर्मक, कर्मवाच्य क्रियापद, होना, दिखाना, कहाना आदि अर्थ वाचक के साथ प्रथमान्त नाम विधेयका अर्थ पूरा करने के लिये आता है; जैसा पत्थर, लोहा, खड़िया, कोयला, नोन, आदि सब धातु विशेषहैं, जो झाड़ होता है उसमें जड़सेही अनेक डालियां फूटती हैं, भाषण से वह बड़ा पण्डित दीखता है, प्रथम जीवधारी जो अपने आप हिल चल सकते हैं वे जीव जंतु कहाते हैं॥

अवधि—काल वा अन्तर की मर्यादा बतलाना होतो तद्वाचक नाम से प्रथमा होती है; जैसा दो महीने वह यहां रहेगा, नागपुर सागर से एक सौ पैंतीस कोस दूर है॥

परिमाण—किसी वस्तुके परिमाण का बोध करना हो, तो परिमाण वाचक से प्रथमा होती है; जैसा दोसेर सुपारी, पांचपसेरी गेंहूं +॥

द्वितीयादि विभक्ति का वर्णन॥

प्र० द्वितीया विभक्ति किससे होती है ?

उ० जो क्रिया का कर्म है उससे द्वितीया विभक्ति होती है; जैसा गुरु लड़कों को पढ़ाता है, जब कर्म को निश्चित करना हो, तब द्वितीया का प्रत्यय को लगाते हैं; जैसा किताब को लाव॥

अप्राणि वाचक नाम कर्म होवे तो प्राय: उनसे द्वितीया के प्रत्यय का योग नहीं करते; जैसा ख़त लिखो, कईएक शब्द ऐसे हैं कि वे निश्चित हों तोभी उनको प्रत्यय लगाना चाहिये; व्यक्तिवाचक अर्थात् विशेषनाम, अधिकारिवाचक, और व्यापारकर्तृवाचक इत्यादि शब्दों से को प्रत्यय का योग करना चाहिये जैसा विष्णु को भेजो, न्यायाधीश को बुलाओ इत्यादि॥ जब वाक्य में कर्म और संप्रदान दोनों आवें तो कर्म प्राय: प्रथमा में रखते हैं और संप्रदान वाचक से चतुर्थी होती है, संप्रदानार्थक शब्द नाम वा सर्वनाम होवे और कर्म द्वितीयान्त होवे तो नामके आगे को और सर्व नाम के

\+ "दोमहीने यहां रहेगा" दोसेर सुपारी,, ऐसे वाक्यों में क्रमसे तक और भर शब्दों का अध्याहार करके कोई २ लोग महीने और सेर इनको सप्तम्यन्त रूप मानलेते हैं॥

आगे ए अथवा एं प्रत्यय लगाते हैं; जैसा मर्दको कपड़े इनाम दो, उसने अपने भाई के हिस्से को उसकी बेटीको दिया, मैंने अपनी लड़की को उसे सौंप दिया ॥

गत्यर्थ क्रियापदों के साथ स्थलवाचक नाम से अधिकरणार्थ में द्वितीया होती है ॥ इसीतरह क्रिया के होने का समय जिस नाम से बोधित हो उससे भी द्वितीया होती है ॥ जैसा गङ्गा को गया, दिल्ली को पहुंचा, देश और कालवाचक नाम से द्वितीया के प्रत्यय का लोप करते हैं, परन्तु उसके पीछे विशेषण या विशेषण तुल्य शब्द होवे तो उसका सामान्य रूप होता है; जैसा उस दिन वह मेरे घर आया था, उसकाल मारू जो बजता था सो तो मेघसा गाजता था ॥

तृतीया विभक्ति ॥

प्र० तृतीया विभक्ति से कौन २ अर्थ बोधित होते हैं ?

उ० तृतीया के मुख्य अर्थ पांच हैं; कर्ता, करण, हेतु, अंग विकार, साहित्य ॥

कर्ता—तृतीया का प्रत्यय ने कर्ता से लगाते हैं, जब वाक्य में क्रियापद बोल धातुका गण छोड़ शेष सकर्मक धातु के भूतकाल वाचक विशेषण से बना होवे, ऐसे प्रयोग में कर्ता के अनुसार क्रियापद का लिंगवचन नहीं होता है, इसलिये उसे अप्रधान कर्ता कहते हैं; जैसा मैंने कुत्ता देखा ॥ तत्वत: बोलधातु का गण और अपूर्ण भूतकाल को छोड़कर सकर्मक धातुके भूतकाल में जो प्रयोग होते हैं, वहां कर्ता को तृतीया विभक्ति का प्रत्यय ने जोड़ते हैं; जब ऐसे वाक्य में कर्म प्रथमान्त होता है, तब उसके लिंग वचनानुसार क्रियापदका लिंग वचन होता है, वह कर्मणि प्रयोग जानो; जैसा हीरालाल ने पोथी लिखी, उसने घोड़े भेजे ॥ और जब कर्मसे को प्रत्यय का योग करते हैं, तब क्रियापद सामान्यत: पुंल्लिङ्ग तृतीय पुरुष एकवचन में होता है और उसे भावे प्रयोग कहते हैं; जैसा उसने कुत्तेको देखा, पारवती ने रोटी को खाया, सोमालाल ने बकरी को मारा, उस लड़के ने चूहेको पकड़ा, इत्यादि ॥ अप्रधान कर्ता कहां आता है यह विद्यार्थियों को ध्यानमें रखना चाहिये ॥

अकर्मक क्रियापद के साथ अप्रधान कर्ता कभी नहीं आता ॥ केवल शुद्ध धातु से और वर्तमान कालवाचक धातु साधित विशेषण से जो काल

और अर्थ बनते हैं उनके साथ नहीं आता है फिर वह धातु सकर्मक वा अकर्मक हो ॥ बोल भूल ला इत्यादि धातुओं के साथ नहीं आता है; जैसा, वह बोला, वह संदेसा लाया; उर्दू व्याकरण में लिखा है कि लाना का अर्थ ले आना, यहां अंत्यावयव आ धातु अकर्मक है, इससे यह नियम समझमें आता है कि जब संयुक्त क्रियापद का अंत्यावयव अकर्मक होवे और सब क्रियापद सकर्मक होवे, तोभी अप्रधान कर्ता की योजना नहीं करते हैं; जैसा वे फ़क़ीर खाना खागये हैं, मैं ख़त लिख चुका इत्यादि ॥ दो वाक्य और उभयान्वयी अव्यय से जोड़े गयेहों, उनका कर्ता एकही होवे, और पहिले वाक्य में क्रियापद अकर्मक होवे और दूसरे में क्रियापद सकर्मक होवे तोभी दूसरे वाक्य में अप्रधान कर्ता के कहने की कुछ आवश्यकता नहीं है, परन्तु वाक्य की रचना अप्रधान कर्ता के अनुसार होती है; जैसा वह झट फिर आई और कहा अर्थात् उसने कहा ॥

जिस वाक्यमें क्रियापद प्रयोजक वा कर्मवाच्य वा अकर्मक होवे, वहां कर्तृवाचक नामसे से प्रत्यय होता है; जैसा मैंने यह काम उससे करवाया, तुझसे रूखी रोटी क्योंकर खाई गई थी, वह मुझसे मारा गया या यह अपराध उससे हुआ, मुझसे लिखना नहीं बनता है ॥

करण—क्रिया के होने के लिये जो साधन वा जिसके द्वारा क्रिया हो उसको क्रिया के अन्वय से करण कहते हैं; करण वाचकसे तृतीया का प्रत्यय लगाते हैं; जैसा सिपाही ने तलवार से चीते को मारा, यहां मारने की क्रिया तलवार के द्वारा हुई इसलिये तलवार करण है और उससे तृतीया का प्रत्यय से हुआ; ऐसेही क़लम से लिखा, हाथसे उठाया, पांवसे रगड़ा, इत्यादि जानो ॥

हेतु—कोई क्रिया होने के वा करने के लिये जो कारणहो उसे हेतु कहते हैं, तद्वाचक शब्दसे तृतीया का से प्रत्यय होता है; जैसा आपकी दवासे आराम हुआ, तुम्हारे आने से मेरा काम हुआ, गायन से संतोष होता है, यहां दवा आना गायन ये हेतु हैं, उनसे तृतीया हुई ॥

अंगविकार—जिस अंगावयव+ में विकार होवे उससे तृतीया होती है; जैसा आंखों से अंधा, पांवसे लंगड़ा, कानसे बहरा इत्यादि ॥

+ अंगावयव का अर्थ शरीर का भाग ॥

साहित्य—क्रिया करने में कर्ता के साथ जो रहे उसे साहित्य बोलते हैं और तद्वाचक से तृतीया होती है; जैसा हज़ारीमल्ल एक आदमी से आया, हरभान एक कपड़े से गया, राजा पचास हज़ार फौज़ से चढ़ आया है इत्यादि॥

मूल्यवाचक से भी तृतीया होती है; जैसा पांच रुपये से किताब मोल ली, इत्यादि ॥

कभी २ क्रिया करने का प्रकार वा रीति बताने के लिये नाम से तृतीया होती है, जैसा, उसको किसीने नहीं कहा पर अपनेही दिलसे सीखने लगा, अन्तःकरण से काम करो, मेरे तरफ क्रोधसे देखता है ॥

तृतीयाके प्रत्यय का कभी २ लोप होता है; जैसा मैंने उसके हाथ चिट्ठी भेजदी है, न आंखों देखा न कानों सुना, यहां हाथ से आंखों से कानों से जानों ॥ पूछ कह और तदर्थक धातुके साथ नाम वा सर्वनाम से को की जगह से आता है जैसा राजा से बिनती की, मैं उससे सच कहता था, मैंने आप से पूछा इत्यादि ॥

चतुर्थी का वर्णन ॥

प्र० संप्रदान किसको कहते हैं ?

उ० जिसको कुछ दिया जावे अथवा जिसके निमित्त कुछ किया होवे, उसे संप्रदान कहते हैं और उससे चतुर्थी होती है; जैसा वह ब्राह्मण को गाय देता है, उसने गोपाल को पोथी दी, गुरूजी स्नान को गये हैं, पीनेको पानी लाओ, वह नाटक देखने को गया है ॥

हो धातुके साथ धातु साधित भाववाचक नाम आकर आवश्यकता बतावे, तो उसके पूर्व कर्तृ वाचक शब्द से चतुर्थी होती है; जैसा हमें आज सभाको जाना है, उसको अभी पाठ सीखना है ॥

योग्यता आदि अर्थ बोधक विशेषण और उनके विरुद्ध शब्द वा नमस्कार वा कुशल आदि शब्दों के साथ नाम से चतुर्थी होती है; जैसा लड़कों को उचित है कि माता पिताका आदर करें; लोगोंको योग्य है कि सच्च बोलना, उदारता, दया, पराये दोष का ढकना, सहना, विवेक, उपकार करना, आदि अच्छी २ बातों को अंगीकार करें; बड़े आदमियों को उचित नहीं है कि कभी झूठ बोलें; आपको नमस्कार; आपको कुशल हो ॥

पंचमी का वर्णन ॥

प्र० अपादान का क्या अर्थ है और यह कारक किस विभक्ति से जाना जाता है ?

उ० किसी को अवधि मान कर उससे वियोग वा विभाग वा न्यूनाधिक भावादि अर्थका बोध होवे, तो वह अपादान कहाता है और उससे पंचमी होती है जैसा गांवसे आया है, घोड़े से गिरपड़ा, गोविंद से राम प्रसाद बड़ा है, उस घोड़े से यह घोड़ा छोटा है, आगरे से कलकत्ता पूर्व है इत्यादि ॥

अकर्मक क्रियापद के साथ उत्पत्ति स्थान वाचक से पंचमी होती है; जैसा ब्रह्माके मुख से ब्राह्मण पैदा हुए, हिमालय पर्वत से गंगा निकली है॥ कभी २ सप्तम्यंत से पंचमी होती है; जैसा बाज़ार में से लाया, घोड़े पैसे गिरपड़ा, इत्यादि ॥ वस्तुओं के समूहमें से कुछ अंश अलग करना होतो सप्तम्यन्त नाम से पंचमी होती है ॥ जैसा उनमें से चार बाक़ी रहगये, संदूक में पन्द्रह रुपये रखे हैं उनमें से पांचलो ॥

सप्तमी का वर्णन ॥

प्र० सप्तमी विभक्ति का अर्थ क्या है और किससे वह होती है ?

उ० क्रिया का अधिकरण अर्थात् आधार तद्वाचक शब्दसे सप्तमी के प्रत्यय में,पै, पर,—होते हैं; जैसा धनमें मन रखता है, घोड़े पै बैठा जाता है, तालाव में स्नान करता है, हाथी पर बैठा है, पढ़ने में ध्यान लगावे तो अच्छा है ॥

कभी २ आधेय वाचक से सप्तमी होती है; जैसा, पांव में जूता, उंगली में अंगूठी, इत्यादि ॥

बीच अनुसार विषयक आदि अर्थों में नामसे सप्तमी होती है; जैसा इन दोनों में कुछ भेद नहीं है, वह अपने जेठोंकी चाल पर चलेगा, इस बात पर तुम्हारा कहना क्या है ।

जिस बात में प्राणिवाचक वा अप्राणिवाचक नाम का गुण प्रकट करना हो तो तद्वाचक से सप्तमी होती है; जैसा सखारामभट्ट वेद विद्या में निपुण है, बोलने में कठोर पर हृदय में दयावान है ॥

कभी २ सप्तमी का लोप करते हैं; जैसा गङ्गा के तीर रहता है, घोड़े चढ़ आया पर गधे चढ़ जावेगा॥

भर यह शब्द नाम के आगे आकर नाम से बोधित वस्तु की समग्रता बताता है; जैसा दिन भर खेलता रहता है, सेर भर घी॥

सम्बोधन का वर्णन॥

प्र० संबोधन किसको कहते हैं ?

उ० किसी को चिता कर सम्मुख करना, इसे संबोधन कहते हैं और इसमें भी प्रथमा होती है उसका फल प्रवृत्ति वा निवृत्ति होता है; जैसा अय गोविन्द तू पाठशाला को जा, यहां गोविन्द संबोधन है उसे चिता कर पाठशाला को जाने में प्रवृत्त करता है; ऐसे और भी जानो॥ मोहनलाल, पढ़ने में ध्यान दे, गोपाल, खेलनाछोड़; हे राम, मेरा काम कर दे, इ०॥

षष्ठी का वर्णन॥

प्र० षष्ठी विभक्ति की योजना कहां की जाती है यह नहीं कहा सो, मुझे समझाइये ?

उ० जो दो वस्तुओं पर है और दोनों से भिन्न रूप है अर्थात् जो एक शब्द पर दूसरे शब्द का आश्रय बतावे उसे संबन्ध कहते हैं॥ उनमें एक संबन्धी है और दूसरा कृत संबन्धी, अर्थात् जिस पर दूसरे शब्द का संबन्ध है उसे सम्बन्धी कहते हैं, जिसका सम्बन्ध रहता है उसे कृत सम्बन्धी कहते हैं॥ का की के ये प्रत्यय कृतसम्बन्धी से होते हैं; और कृतसम्बन्धी सम्बन्धी की विशेष्यता बतलाता है, उसका अन्वय सम्बन्धी में है; इसी से उसे कारकत्व अर्थात् क्रियान्वयित्व नहीं है, और कारकों में नहीं गिना जाता॥ जैसा, राजा का घोड़ा, यहां कृतसम्बन्धी राजा उससे षष्ठी विभक्ति हुई राजा का सम्बन्ध घोड़े की तरफ़ है॥ सम्बन्धी पुँल्लिङ्ग प्रथमा के एक वचन में होवे, तो कृत सम्बन्धी से का और पुँल्लिङ्ग होकर बहुवचनान्त वा द्वितीयादि विभक्त्यन्त होवे वा शब्दयोगी अव्यय के संग आवे, तो कृत सम्बन्धी से के प्रत्यय होता है; जैसा राजा का घोड़ा, राजा के

घोड़े, राजा के घोड़े पर, राजा के घोड़ों का, राजा के घोड़ों पर इत्यादि ॥

संबंधी स्त्रीलिंग होवे, तो उक्तसंबंधी से की प्रत्यय होता है; जैसा राजा की घोड़ी राजा की घोड़ियां इत्यादि ॥ उक्त संबन्धी संबंधीके पूर्व बहुश: आता है॥ संबंध कई प्रकार का होता है ॥ बोध होने के लिये कुछ बताता हूं ॥

वाक्य	संबंध	वाक्य	संबंध
राजा की घोड़ी,	स्वस्वामिभाव	राजाकासिपाही	सेव्य सेवकभाव
तुलसीदासकीरामायण	कर्तृकर्मभाव	मनसारामकीलड़की	जन्यजनकभाव
चांदीकेतोड़े	द्रव्यजन्यभाव	हाथकीउंगली	अंगांगिभाव

कभी २ अधिकरण में षष्ठी होती है—रात का सोया है, दिनका थका हुआ है॥

कभी २ षष्ठी का अर्थ निमित्त होता है—वैद्य के यहां जाने की सामर्थ्य अबतक नहीं आई; क़ीमत, परिमाण, उमर, मुद्दत, शक्यता, समग्रता, योग्यता आदि अर्थों में षष्ठी की योजना की जाती है ॥ जैसा,

चारआनेकीचौमड़ी पांचरुपयेकागोटा	क़ीमत	पन्द्रहबरसकालड़का ... दस बरसकी लड़की ... यहपच्चीसबरसकाहालहै	उमर और मुद्दत
दो हाथ का कपड़ा तीनहाथ का सोटा	परिमाण	मैं आज ठहरने का नहीं	शक्यता
		खेतकाखेत, घरकाघर-	समग्रता अर्थात् सब खेत, सब घर

यह बात कहने के योग्य नहीं है—योग्यता ॥

शब्द योगी अव्यय नाम के साथ होवे तो षष्ठी का के प्रत्यय लगाते हैं; जैसा पत्थर के नीचे; कभी २ इस प्रत्यय का लोप भी होता है—पत्थर पर, तुम्हारी सहायता बिना यह काम नहीं होगा ॥

जब कोई पदार्थ दो अथवा अधिक मनुष्यों का है यह बतलाना हो तब अंत्य नाम से षष्ठी होती है; जैसा यह बग़ीचा मोहनलाल शिवप्रसाद और बेनीराम का है ॥ सादृश्य, समता, अनुसार, समीपता, योग्यता, आधीनता आदि गुण वाचक विशेषणों के पूर्व शब्द योगी अव्ययवत् नाम से षष्ठी होती है, जैसा, उस स्त्री का मुख चन्द्रमा के सदृश है, ज्ञान हीन

मनुष्य पशु के समान है, यह धर्मशास्त्र के अनुसार है, वह लड़का राजा के समीप रहता था, पतिव्रता स्त्री का यह धर्म है कि अपने पति के आधीन रहे, ऐसा हार राजा को नज़र करने के योग्य है ॥

---

५ पाठ ॥

सर्वनाम ॥

प्र० वाक्य में सर्वनाम की योजना किस रीति से होती है सो कहिये ?

उ० जिन पुरुष वाचक सर्वनामों के लिये क्रियापदों के पृथक् २ रूप हैं, उन रूपों के साथ सर्व नामों की योजना करना अवश्य नहीं; परन्तु जब विरोध अथवा विशिष्यता बतलाना हो तब उनकी योजना करते हैं, जैसा करता हूं, लिखते हो, यहां पहिले में प्रथम पुरुष वाचक सर्वनाम और दूसरे में द्वितीय पुरुष वाचक सर्वनाम का बोध होता है; इसलिये उनका स्पष्ट उच्चारण अवश्य नहीं; क्या तुम हो मैंने नहीं जाना ॥

पुरुष वाचक सर्वनामों के बहुवचनान्त रूप आदरार्थ में वा सामान्य संभाषण में एक वचन की जगह आते हैं-हमने तुमको एक बार कहदिया है कि ऐसी बात हमारे पास मत निकालो, हमने सुना कि तुम्हारे भाई आज बम्बई को जाएंगे कृपा करके उनसे कह दो कि हमारे लिये पांचसौ रुपये तक मोतियों की जोड़ी लावें ॥

जब बोलने वाला और जिसके साथ वह बोलता है वे दोनों समान पदवी के होवें तब प्रत्येक को अपने विषय में एकवचन बोलना चाहिये और दूसरे को बहुवचन में, बहुत बड़े पदवी का आदमी अपने विषय में बोले तो बहुवचन में बोलता है पर यह सभ्यरीति नहीं है और किसी को एक वचन में बोलना अच्छा नहीं है ॥

तीसरे के विषय में बोलना हो और वह अपने से बड़ा होवे तो बहु वचन में और हलका होवे तो एक वचन में बोलना चाहिये, पर समक्षमें बहुवचन में बोलना उचित है और वह अति श्रेष्ठ हो, तो आप इस सर्व-नाम की योजना करते हैं; बराबरी वाले को वा बड़े को समक्ष बोलना

हो, तो भी आप इस सर्वनाम की योजना करते हैं, आप जब कर्ता हो तो क्रियापद तृतीय पुरुष बहुवचन में चाहिये ॥

यथार्थ बहुत्व बताना होवे तो सर्व नामों के आगे लोग शब्द की योजना करते हैं; जैसा हम लोगों में यह चाल नहीं है, पर तुम लोगों में हो तो करो, आप लोगों को इससे बड़ा लाभ होगा ॥

ईश्वर की प्रार्थना करने में अति आदर बताने के लिये वा अतिनीच मनुष्य को बोलने में वा अत्यन्त स्नेह की जगह द्वितीय पुरुष एक वचन की योजना करते हैं; जैसा हे भगवान तू सब प्राणियों का पालन कर्ता है, तू ने सब सृष्टि उत्पन्न की इ० ॥ अरे तू कौन है ? बताव जल्द, क्यों यहां आयो; बेटा, यहां आ मुझे मुह चुम्बने दे ॥

भिन्न पुरुष वाचक सर्वनाम वाक्य में कर्ता होवें और उभयान्वयी अव्यय से पृथक् किये गये हों, तो प्रत्येक कर्ता के संग क्रियापद को बोलना चाहिये; जैसा तुम जाओ वा वे जावें, किसी तरह से काम करना चाहिये ॥ वाक्य में भिन्न पुरुष वाचक सर्वनाम कर्ता हो तो पहिले प्रथम पुरुष वाचक सर्वनाम पश्चात् द्वितीय और उसके पीछे तृतीय पुरुष वाचक सर्वनाम आते हैं; हम तुम क्या करसकेंगे, तुम और वे वहां जाकर बैठो और पाठ याद-करो ॥ सर्वनाम अन्य विभक्ति में आवें तो भी यह नियम जानो; जैसा हमसे और तुमसे कुछ नहीं कह सकते हैं ॥

प्रथम और द्वितीय पुरुष वाचक सर्वनाम क्रियापद के कर्म होते हैं, तब उनसे सदा द्वितीया विभक्ति होती है; जैसा वह मुझको वा मुझे मारता है, मैं तुझे वा तुझ को देता हूं ॥ जब तृतीय पुरुष वाचक सर्वनाम सकर्मक क्रियापद का कर्म होता है, तब सामान्यतः उस सर्वनाम से द्वितीया विभक्ति बहुधा होती है; जैसा उसको मारो, उनको बुला दो इ० ॥ मेरा तेरा तुम्हारा अपना आदि षष्ठ्यन्त रूपों की योजना जिन रूपों में का की के प्रत्यय किये जाते हैं उनके सदृश होती है; जैसा मेरी भूमि, मेरा हाथ, अपने भाइयों से झगड़ा कभी न करना ॥

कर्ता और क्रिया को छोड़ जो वाक्यांश उसमें कर्तृ संबंधी षष्ठ्यन्त सर्व-नाम की जगह अपना इस सर्वनाम का प्रयोग करते हैं; जैसा वह अपना काम

करता था अपना = उसका । तुमने अपना नयाघर देखा है, अपना= तुम्हारा । मैं यह बात अपने बाप से कहूंगा अपने = मेरे; हम और हमारे बाप अपने देश को जायंगे; यहां जाने का कर्ता बाप और हम हैं, इस कारण से अपना की योजना नहीं हुई ॥

और पृथक्ता कहना हो तो कभी २ द्विरुक्ति होती है जैसा वे अपने २ घर को गये ॥ आप अर्थात् निजका वाचक सामान्य सर्वनाम का प्रयोग आदरार्थक आप शब्द से भिन्न है, और उसकी योजना तीनों पुरुष और दोनों वचनों में होती है; जैसा मैं आप करूंगा तुम्हारी सहायता न चाहिये; तुम आप क्यों न गये; तुम कुछ मत बोलो, वे आप जायंगे; इन्द्रियों की विद्या में अभ्यास करेंगे तो उन्हें देखने और प्रकाश और प्रतिबिम्ब का भेद आप से आप खुल जायगा ॥

पूर्व भाग में कह आये हैं कि सर्वनाम का वचन नाम के वचन के अनुसार होता है फिर वह नाम प्रत्यक्ष हो वा अध्याहृत हो ॥ सर्वनाम नाम के पूर्व विशेषण सा आवे और नामसे द्वितीयादि विभक्ति का योग करना हो वा उसके संग शब्द योगी अव्यय जोड़ना हो, तो सर्वनाम के सामान्य रूप मात्रकी योजना करना चाहिये अर्थात् प्रत्ययों का योग नहीं होता जैसा आप ऐसे धर्मज्ञ जो मुझ अतिथि को मारने को उठे; तुम भले आदमी को झूठ बोलना उचित नहीं है; कदाचित् कोई इस बात का संदेह करे; पृथ्वी जल और वायु इन तीनों में जीव रहते हैं; उन जीवों में मुख्य दो भेद हैं; जिस धरती में अन्न और तरकारी उपजते हैं उसे खेत कहते हैं सब पुस्तकें हाथसेही लिखी जाती हैं वा और किसी प्रकार से भी होती हैं; किस मनुष्य को बुलाते हो ॥ क्या सर्वनाम का सामान्य रूप काहे नाम के पीछे विशेषणवत् कभी नहीं आता; जैसा काहे के लिये बुलाते हैं, काहे की घड़ी बनी है ॥

प्रथम और द्वितीय पुरुष वाचक सर्वनाम से सादृश्यार्थक सा सी से प्रत्यय जोड़े जांय तो उनके सामान्य रूपसे जोड़ते हैं; जैसा तुझसा चतुर दूसरा नहीं ।

कभी २ यह और वह इन एकवचन रूपों की बहुवचन में योजना करते हैं; जैसा यह दोनों भाई न्यायाधीश के पास गये, वह दान धर्ममें कुछ पैसा देते हैं ॥

संबंधी सर्वनाम जो वा जौन और तदर्थ वाचक सो वा तौन वा वह अपने २ वाक्य में बहुधा सब से पहिले आते हैं॥ पूर्व वाक्य में जो सर्वनाम का प्रयोग किया जावे, तो उत्तर वाक्य में सो वा वह सर्वनाम की योजना करनी चाहिये॥ और जिस वाक्य में संबंधी सर्वनाम होवे वह प्रायः पहिले आता है॥ उनसे साधित शब्द अर्थात् जैसा, तैसा, जितना, आदि शब्दों की योजना पूर्वोक्त प्रकार से होती है; जैसा जो घोड़े तुमने भेजे राजा ने बहुत पसंद किये, जो यत्न करता है सो फल पाता है, जो तुम ने कहा सो सब सच है, जहां धन तहां डर, जैसा दोगे वैसा पाओगे, जितना चाहिये तितना लो, चौकस वह आदमी है जोकि काम से पहिले परिणाम को सोचै॥

प्रथम और द्वितीय पुरुष वाचक सर्वनामों के संग जो संबंधि सर्वनाम आवे, तो उनके पश्चात् आता है; जैसा तुम जो ग़रीब हो, इतना घमंड क्यों करतेहो, मैं जो आज दश बरस से पढ़ता हूं क्या कुछ नहीं जानता हूं॥

कभी २ बिना नाम के जो की योजना सामान्य अर्थ में करते हैं; जैसा जो ऐसा काम करेगा सो दण्ड पावेगा॥ कि यह शब्द जो के साथ बारम्बार आता है परन्तु अर्थ की विशेषता नहीं होती; जैसा जो दुःख कि हम को पहुंचा है दिल में न लावें॥

जो यह संबंधी सर्वनाम जो उभयान्वयी अव्यय अर्थात् यदि से भिन्न है और उसका ज्ञान वाक्य में पूर्वा पर संबंध से होता है; जैसा जो आप आजावें तो मैं उसे पकड़ लाऊं॥

कौन कोई क्या कुछ इनकी योजना की रीति सर्वनाम प्रकरण में बताई है॥ उनके उदाहरण यहां लिखे जाते हैं जैसा कौन है अर्थात् कौन मनुष्य है, क्या है अर्थात् क्या चीज़ है, कोई उस घर में रहता है, उस ठेकी में कुछ नहीं है, इसठेक में कुछ है, किसी बन में एक सियार था, राजा से किसी को अधिकार मिलता वा किसी कारण से प्रतिष्ठा बढ़ाई जाती है; कोई सेठ, कोई कंगाल, कोई राज सेवक होते हैं परन्तु जहां जंगली लोग रहते हैं वहां राजा का कुछ प्रबन्ध नहीं होता; कुछ लोग वहां जमा हुए थे, क्या निर्बुद्धि आदमी है, वा क्या बात है॥

नाना प्रकार बतलाने के लिये क्या शब्द की द्विरुक्ति करते हैं जैसा क्या २ चीज़ें आई हैं, क्या २ लोग जमा हुए हैं ॥

कभी २ क्या उभयान्वयी भी होता है; जैसा खेत में क्या बाग़ में हुआ यहां क्या शब्द का अर्थ अथवा है ॥

तुल्यता के अभाव में कहां शब्द की योजना करते हैं; जैसा कहां सूर्य्य कहां खद्योत, कहां राजा भोज कहां गंगातेली ॥

निषेधार्थक वा संदेह बोधक अर्थात् जहां प्रश्न सूचित हो ऐसे वाक्य में संबंधी सर्वनाम की जगह कौन और क्या प्रश्नार्थक सर्वनाम आते हैं, जैसा मैं नहीं जानता हूं कि वह किस जगह गया है, मुझे स्मरण नहीं कि कौन २ आये थे और कौन २ नहीं, वह जानता है कि तुम्हें क्या २ चाहिये अर्थात् तुम्हें जो जो चाहिये सो सब वह जानता है ॥ इसी तरह से उनसे साधित क्रिया विशेषणादिकों की योजना होती है; जैसा न जाने वह कब आवेगा ॥

---

६ पाठ

क्रियापद का अधिकार ॥

प्र० वाक्य में शब्दों पर क्रियापद का अधिकार रहता है इसका अर्थ मैंने नहीं समझा कृपा करके बतलाइये ?

उ० कोई २ क्रियापद ऐसे होते हैं कि उनके साथ दूसरे शब्द अर्थात् नाम वा सर्वनाम किसी एक निश्चित रूप से सदा आते हैं; तुम जानते हो कि सकर्मक क्रियापद होवे तो कर्म अवश्य चाहिये और कभी २ संप्रदानार्थक शब्द की योजना करनी चाहिये; जैसा मैंने उसको किताब दी, मैं पलंग पर सोता हूं, मैं रोटी खाता हूं, दूसरे वाक्य में सोता हूं इस क्रियापद के संग पलंग शब्द आया है और अर्थानुरोध से उस नाम से सप्तमी विभक्ति का प्रत्यय जोड़ा गया दूसरी विभक्ति का नहीं, तीसरे वाक्य में खाता हूं इस क्रियापद के साथ रोटी इस नाम को कहना अवश्य है

नहीं तो अर्थ पूरा न होगा और वह कर्म रूप से आया है अन्य विभक्ति अर्थात् तृतीयादिकों के प्रत्यय नहीं जोड़े गए इससे स्पष्ट है कि क्रियापद के अनुरोध से कारकों की योजना होती है ॥

प्र० वाक्य में नाम वा सर्वनाम पर क्रियापद का किसी एक प्रकार का अधिकार होता है यह मैं समझा, अब किस क्रियापद के संग नाम वा सर्वनाम किस रूप से आते हैं यह समझाइये ?

उ० पूर्व में कह आये हैं कि होना दिखाना कहाना आदि अर्थ बोधक अकर्मक और कर्मवाच्य क्रियापद के साथ नाम विधानार्थ प्रथमा में आता है; जैसा रामलाल अब बड़ा महाजन हुआ, जो पुत्र अपने माता पिता की आज्ञा को मानते हैं वे सुपुत्र कहाते हैं ॥

सकर्मक क्रियापद के कर्म के स्थान में नाम अथवा सर्वनाम आता है तब पूर्व नियम से प्रथमा वा द्वितीया विभक्ति होती है; जैसा ऐसे बली यदुकुल में कौन उपजे जिन्होंने सब असुरों समेत महाबली कंस को मारा मेरी बेटियों को रांड़ किया, परन्तु आप का यह पुत्र है जो वेश्याओं के संग आपकी संपत्ति खागया है, जोंही आया तोंही आपने उसके लिये बछड़ू मारा है ॥

प्रयोजक क्रियापद और बतलाना, दिखाना, पहराना, आदि सकर्मक क्रियापद के संग दोकारक अर्थात् कर्म और संप्रदान अवश्य आते हैं, उनमें से कर्म प्राय: प्रथमान्त आता है जैसा लड़की को खाना खिलाकर घरको जाओ, उसे यह कपड़ा पहनाओ, उसको एक रुपया दो, तब उसने उनको अपनी संपत्ति बांटदी ॥

बोलना के साथ नाम से चतुर्थी होती है और कहना के संग उससे तृतीया का से प्रत्यय जोड़ा जाता है-- मैं उठके पिता के पास जाऊंगा, और उनसे कहूंगा हे पिता मैंने स्वर्ग के बिरुद्ध आपके सामने पाप किया; इस नियम का अपवाद भी कई एक स्थान में देख पड़ता है, जब वह उनके सामने आया तब उनसे एक बात बोल न सका ॥ किसी की स्थिति वा गुण वा मनो विकार बतलाना हो और वह नाम वा सर्वनाम अकर्मक धातु जैसा आना बनाना भाना चाहना पड़ना पहुंचना रहना सोचना

लगना मिलना और होना इनके साथ जब आवे तब उससे चतुर्थी विभक्ति होती है; जैसा मुझे नींद आती है; मुझे इस बात में संदेह है; उसे देख नहीं पड़ता; न उन्हें नींद आती थी, न भूख प्यास लगती थी; हम को चाहिये कि वहां जावें; यहां और दूसरे स्थान में चाहिये का अर्थ योग्य है, ऐसा है योग्यार्थक चाहिये के योग में चतुर्थी पुरुष वाचक से होती है; जैसा हमको जाना चाहिये, तुमको जाना चाहिये, जब चाहिये का कर्ता वाक्य होता है तब उस वाक्य में क्रियापद विध्यर्थ में आता है; जैसा मुझे चाहिये कि बहुत परिश्रम करूं न कुछ वे लेगये न हम ले जायंगे इस लिये सभों को ऐसा काम करना चाहिये कि परलोक में जाकर भी उजले रहें ॥

भीति, छिपाना, लजाना, वियोग, भिन्नता, सावधानी, आदि अर्थ बोधक क्रियापदों के साथ नाम से पंचमी होती है; जैसा वह तुम से डरता है, यह बात मुझसे मत छिपाओ, वह अपनी दशा से लजाता है, मैं जीते जी तुम से अलग कभी न हूंगी, चौकस मनुष्य दुर्गों से सावधान रहता है ॥

गत्यर्थ क्रियापद के साथ नाम से सप्तमी भी होती है, किस समय, स्थान, वा स्थिति में क्रिया होती है यह बोध जिस नाम से होवे उससे सप्तमी का योग होता है; जैसा वे नगर में चले, दो दिन में वह वहां पहुंचेगा, तुम किस घर में रहते हो, वह पलंग पर सोता है, धोखे में मुझसे यह अपराध हुआ ॥

---

७ पाठ ॥

धातु साधित भाव वाचक नाम ॥

प्र० धातु साधित भाव वाचक की योजना वाक्य में किस प्रकार से करनी चाहिये ?

३० धातु को ना जोड़ने से भाव वाचक नाम होता है और वह क्रिया का व्यापार वा स्थिति बतलाता है; धातु साधित भाववाचक नाम से शब्द योगी अव्यय और विभक्त्यादिकों का योग करना हो, तो आकारान्त पुँल्लिङ्ग नाम के समान होता है; पर इस मे तृतीया का ने प्रत्यय और सम्बोधन नहीं होता और भाववाचक सकर्मक धातु से बना हो, तो उसके सङ्ग कर्म आता है; जैसा उसका जाना उचित नहीं है, वह घर देखने को आया है, सहायता करने का समय यही है; पढ़ने के लिये आपके पास आया हूं ॥

निश्चयार्थ में धातु साधित भाव वाचक को का की के ये षष्ठी के प्रत्यय जोड़ कर उस रूप की विशेषणवत् योजना करते हैं; जैसा यह होने का नहीं, मैं नहीं मानने का, कभी २ संप्रदानार्थ में धातु साधित भाववाचक नाम से षष्ठी विभक्ति होती है; जैसा वहां जाने की आज्ञा दीजिये ॥

गत्यर्थ क्रिया पद के साथ संप्रदानार्थ में भाव वाचक नाम आवे तो उसके को प्रत्यय का लोप कभी २ करते हैं; जैसा वे खेलने वा खेलने को गये, यह घर देखने को आया है, मैं कल हाट में कई चीजें मोल लेने और बेचने जाऊंगा ॥

धातु साधित भाव वाचक नाम वाक्य का उद्देश्य वा विधेय होता है॥ उद्देश्य वा विधेय के संग धातु साधित भाव वाचक का रूप आवे तो कभी कभी उसकी योजना विशेषणवत् की जाती है, और विशेष्य के अनुसार लिङ्ग वचन होता है ॥ जैसा, लड़के को कमीनों की सोहबत में रखना ख़राब करना है, बोलना सहज है पर करना कठिन है, तुम्हारी भाषा बोलनी मैंने नहीं सीखी, तलवार की धार पर उंगली रखनी कठिन है, और जो नलने निर्दयता का काम किया होता तो दमयन्ती को क्षमा करनी चाहिये ॥ आज्ञार्थ में धातु साधित भाव वाचक नाम की योजना कभी कभी करते हैं और मत वा न ये निषेधार्थक अव्यय भी उसके साथ आते हैं; जैसा इस बात को मत भूलना, वहां जाकर ऐसा काम न करना ॥

हो धातु के साथ जब भाववाचक का योग करते हैं, तब आवश्यकता

व योग्यताका का बोध होता है; जैसा निदान एक रोज़ मरना है सब कुछ छोड़ जाना है, तुम को जाना होगा उसको लिखना होगा ॥

भाववाचक नाम के सामान्य रूप के साथ लग दे पा धातुओं का योग क्रम से आरंभ अनुज्ञा देना और पाना इनअर्थों में होता है जैसा वह कहने लगा, वह लिखने लगा, हम को जाने दो, काम करने दो, वे नहीं आने पाते, मैं खेलने नहीं पाता ॥ शक्यर्थ का बोध करने में मुख्य धातु से सक धातु का योग करते हैं, पर निषेधार्थक अव्यय आवें तो उस धातु के स्थान में कभी २ भाव वाचक नाम का सामान्य रूप आता है ॥ जैसा वह काम कर सक्ता है, मैं चल न सक्ता था, मैं बोल नहीं सक्ता, मैं नहीं बोल सक्ता हूं ॥

---

८ पाठ ॥

धातु साधित विशेषण ॥

प्र० धातु साधित विशेषणों की योजना किस तरह से कीजाती है ?

उ० क्रियापद की साधना छोड़ शेष स्थलों में जब धातु साधित विशेषणों का प्रयोग विशेषणवत् किया जाता है, तब उनके रूपों के परे हुआ हुई हुए विशेष्य के अनुसार आते हैं; जैसा है कोई व्रज में मित्र हमारा जो चलते हुए गोपाल को रखे, बहुत से लड़के वहां खेलते हुए मैंने देखे, मेरी ब्याही हुई बहन ससुर के यहां आज गई ॥

जब धातु साधित विशेषण विशेष्य के परे आता है, तब सहाय रूप हुआ की योजना कभी २ नहीं करते हैं पर विशेष्य के अनुसार उसका रूप होता है; जैसा जितने गोकुल के गोप ग्वाल थे वेभी अपनी नारियों के शिर पर दहेंड़ियां लिवाये, भांति भांति के भेषबनाये, नाचते, गाते, नंदको बधाई देने आये ॥

कभी २ सकर्मक धातु साधित भूतकाल वाचक विशेषण विशेष्य के अनुसार नहीं रहता केवल उसका पुँल्लिङ्ग सामान्य रूप आता है ॥ पर अकर्मक

धातु साधित भूतकाल वाचक विशेषण लिंग वचन में विशेष्य के अनु रूप होता है ॥ जैसा, तिनके पीछे मूसल हाथ में लिये एक शूद्र मारता आता है, तुम्हारी लड़की छाता लिये अपने भाई के घर जाती थी, स्त्रियां रंगबरंग वस्त्र पहिने हुए नाचती थीं, वहां किवाड़ खुले पाये भीतर घुस के देखे तो सब सोए पड़े हैं, वह दिक्क हुआ घर आया है, रानी का सिङ्गार बिगड़ा देख एक सहेली बोलउठी ॥

वर्तमान काल वाचक धातु साधित विशेषण के पुंल्लिङ्ग सामान्य रूप की योजना कभी २ नामवत् और कभी २ क्रिया विशेषण वत् करते हैं, और यह रूप सकर्मक धातु से बना होवे तो कर्म भी उसके साथ आता है; जैसा मेरे रहते किसी की इतनी सामर्थ्य नहीं जो तुम्हें दुःख दे, इस बात के सुनतेही, यह बात सुनतेही, भोर होतेही, शरद्दतु जातेही ॥ पुंल्लिङ्ग वर्तमान काल वाचक धातु साधित विशेषण के सामान्य रूप की द्विरुक्ति सातत्य बतलाती है, जैसा हमारा काम होते होते हुआ, जाते जाते एक तालाब के पास पहुंचे ॥

---

९ पाठ

अव्यय विचार ॥

धातु साधित अव्यय ॥

प्र० धातु साधित अव्ययोंकी योजना कहां और किस प्रकार से होती है ?

उ० समुच्चयार्थक धातु साधित अव्यय के पांच प्रकार हैं, वे पूर्व में बतलाए गये हैं ॥

वाक्य में इन अव्ययों का बहुत प्रयोजन पड़ता है क्योंकि उनकी योजना करने से वाक्य के अवयवोंका मिलाप होता है और उभयान्वयी अव्ययों का प्रयोग करना नहीं पड़ता ॥

उनके रूप से प्रधान क्रिया के पूर्वकाल का बोध होता है इसलिये उन्हें भूतकाल वाचक धातु साधित अव्यय कहने में कुछ दोष नहीं है ॥ उनका

संबंध बहुधा कर्ता की तरफ़ और कभी २ कर्म की तरफ रहता है; जैसा आज वहां जाकर हमारी किताब लेकर फिर आओ, वह बात सब के मुख से सुन कर बादशाह ने बीरबल से कहा ॥

तत्काल बोधक धातु साधित अव्यय बनाने की रीति पूर्व में बतलायी है, इस अव्यय में गर्भित जो व्यापार वह प्रधान क्रिया के साथही हुआ यह ज्ञान होता है, इसका अर्थ साधारण रूप से भूतकाल वाचक धातु साधित अव्यय के अर्थ के समान है परन्तु इससे अधिक उद्युक्तता वा जल्दी बूझी जाती है ॥ पूर्व में कह आये हैं कि इस अव्यय की योजना किंचित् नाम के सदृश होती है, जैसा सुनतेही जरासंध अति क्रोध कर सभा में आया और लगा कहने, इतनी बात के सुनतेही हरि कुछ सोच विचार करने लगे, इतनी बात को सुनतेही वह उठ कर चलागया ॥

क्रिया विशेषण, शब्द योगी अव्यय, और उभया न्वयी अव्यय ॥

प्र० क्रिया विशेषण, शब्द योगी अव्यय, और उभया न्वयी अव्ययों को वाक्य में कहां रखना चाहिये ?

उ० क्रिया विशेषण की योजना वाक्य में जहां चाहिये तहां करते हैं, परन्तु साधारण नियम यह है कि जिस शब्द का गुण वह बताता है उसके पहिले योजना करनी ठीक है ॥

सर्वनाम जो वा जौन और तौन से साधित क्रिया विशेषणों की योजना उन सर्वनामों की योजना के समान होती है अर्थात् पूर्व वाक्य में जब, जहां, जैसा इत्यादि आवें तो अनुक्रम से उत्तर वाक्य में तब तहां तैसा इत्यादि आते हैं; जैसा जब सत् संग से रहित होगे तब दुर्जनों की संगति में पड़ोगे, जैसा अबमरे तैसा तबमरे, जो पानी में पैठा तो इसने चतुराई से वे रुपये किसी के हाथ अपने घर भेज दिये ॥

जब तक जबलों आदि संयुक्त क्रिया विशेषण बहुधा भूत वा भविष्य कालिक क्रियापद के साथ आते हैं और उस क्रियापद के पूर्व प्राय: निषेधार्थक अव्यय लाते हैं; जैसा जब तक कि मैं न आऊं तब तक वह ठहरे तो तुझे क्या, जब तक मैं ने उनसे रुपये की बात नहीं निकाली तब तक वे

हररोज़ हमारे यहां आया करते थे, शब्द योगी अव्यय साधारणतः षष्ठ्यन्त नाम वा सर्वनाम के पश्चात् रखते हैं, परन्तु कभी २ उर्दू भाषा की पद्धति के अनुसार उसके पहिले आते हैं; जैसा आगेवर के, तरफ़ शहरके, उभयान्वयी अव्यय कि पूर्व शब्द वा वाक्य का बयान करता है; जैसा उनमें से एक ने रुपये वाले से कहा कि अजी क्यों झगड़ते हो लेखा क्यों नहीं सुनते ॥

पूर्व वाक्य में संकेतार्थ अव्यय जो आवे तो उत्तर वाक्य में तो लाना चाहिये; जैसा, जो आप फिर कभी ऐसा वचन कहियेगा, तो मैं अपना प्राण तज दूंगी ॥ जो तू इसे छोड़ दे तो मैं तुझे एक मोती दूं ॥

---

१० पाठ

द्विरुक्ति विचार ॥

प्र० शब्द को दो बार कहने से क्या समझा जाता है ?

उ० विभाग वा पृथक्ता बताने के लिये संख्या वाचक दो बार लाते हैं; जैसा सब कंगालों को दो दो पैसे दो ॥

भूतकाल वाचक विशेषण की द्विरुक्ति से परस्पर क्रिया का बोध होता है और उसमें उत्तर पद बहुधा स्त्रीलिंगी रहता है; जैसा मारा मारी, ताना तानी, दाबा दाबी, इत्यादि ॥

द्विरुक्ति से कभी २ आधिक्यता बूझी जाती है; जैसा वहां बड़े २ वृक्ष हैं, वह धीरे धीरे चलता है, तुम तो बड़े बड़े दांत निकालते हो ॥

व्याकरण से वाक्य का पदच्छेद ॥

किसी वाक्य के आरम्भ से अंत तक हर एक शब्द के रूप की व्याकरण रीति से व्याख्या अर्थात् लिङ्ग वचन विभक्ति आदि कहना और उस वाक्य में उनका परस्पर संबंध कैसा है यह कथन करना उसे व्याकरण पदच्छेद कहते हैं ॥ इस से वाक्य का यथार्थ ज्ञान होता है; जैसा, (हरिने सिंहमारा) हरिने - इकारान्त पुंलिङ्ग विशेषण नाम की तृतीया का एकवचन - कर्तरि

तृतीया-मारा इस क्रियापदका कर्ता—शेर यह सामान्य नाम अकारान्त पुँल्लिङ्ग प्रथमा का एकवचन-कर्मणि प्रथमा-मारा इस क्रियापद का कर्म मारा यह क्रियापद मार इस सकर्मक धातु का स्वार्थ सामान्य भूतकाल पुँल्लिङ्ग तृतीय पुरुष का एकवचन-इस वाक्य में हरिने-कर्ता शेर-कर्म मारा-क्रियापद-कर्मणि प्रयोग ॥

रामने भाई को बुलाया है ॥

रामने - अकारान्त विशेष नाम पुँल्लिङ्ग तृतीया का एकवचन - बुलाया है इस क्रिया का कर्ता ॥

भाई को—ईकारान्त सामान्य नाम पुँल्लिङ्ग द्वितीया का एक वचन कर्म बुलाया है क्रियापद का ॥

बुलाया है—बुला इस सकर्मक धातु का स्वार्थ - आसन्न भूतकाल पुँल्लिङ्ग तृतीय पुरुष एकवचन ॥

रामने—कर्ता-भाई को-कर्म-बुलाया है- क्रियापद- भावे प्रयोग ॥

मैं उठ के अपने पिता के पास जाऊंगा ॥

मैं—प्रथम पुरुष वाचक सर्वनाम पुँल्लिङ्ग प्रथमा का एक वचन कर्तरि प्रथमा जाऊंगा इस क्रियापद का कर्ता ॥

उठके—समुच्चयार्थक पूर्वकाल वाचक धातु साधित अव्यय ॥

अपने—यह सामान्य सर्वनाम षष्ठी का सामान्य रूप पास इस शब्द योगी अव्यय के योग से—पास - शब्द योगी अव्यय ॥

जाऊंगा—यह क्रियापद जा इस अकर्मक धातु का स्वार्थ भविष्य काल पुँल्लिङ्ग प्रथम पुरुष का एकवचन ॥

मैं—कर्ता, जाऊंगा- क्रियापद, अकर्मक कर्तरि प्रयोग ॥

इतना कह उसने + तुरन्तही चारों ओरों के राजाओं को ख़त लिखे कि तुम अपना दल ले ले हमारे पास आओ ॥

+ जरासन्ध ने ॥

इतना—दर्शक सर्वनाम पुँल्लिङ्ग प्रथमा का एकवचन अर्थ कर्म कह धातु साधित अव्यय का ॥

कह—समुच्चयार्थक धातु साधित अव्यय ॥

उसने—तृ०पुरुष वाचक सर्वनाम पुँल्लिङ्ग तृतीया का एक वचन लिखे क्रिया का कर्ता ॥

तुरन्तही—काल वाचक क्रिया विशेषण अव्यय ॥

चारों संख्या वाचक विशेषण ओरों का ॥

ओरोंके सा०ना०अकारान्त स्त्री० बहुवचन षष्ठी का सामान्य रूप राजा शब्द से विभक्ति का योग होने से ॥

राजाओं को—सा०ना०आकारान्त पुँ० चतुर्थीका बहुवचन, अर्थ संप्रदान ॥

ख़त—सा०ना०अकारान्त पुँल्लिङ्ग प्रथमा का बहुवचन अर्थ कर्म ॥

लिखे—लिख धा० सकर्मक स्वार्थ सामान्य भूतकाल- पुँ० तृ० पु० बहुवचन ॥

उसने—कर्ता, ख़त-कर्म, लिखे-क्रियापद ॥ कर्मणि प्रयोग ॥

कि—स्वरूप बोधक उभया न्वयी अव्यय ॥

तुम—द्वि० पु० स० पुँल्लिङ्ग- प्रथमा का बहुवचन आओ क्रियापद का कर्ता ॥

अपना—सामान्यस०षष्ठी का बहुवचन संबंध दल शब्द की तरफ़, वा सर्वनाम वाचक विशेषण दल शब्द का ॥

दल—सामान्य नाम अकारान्त पुँल्लिङ्ग प्रथमा का एकवचन अर्थ कर्म ले धातु साधित अव्यय का ॥

लेले—समुच्चयार्थक धातु साधित अव्यय ॥

हमारे—प्रथम पुरुष सर्वनाम पुँल्लिङ्ग बहुवचन षष्ठी का सामान्य रूप पास इस शब्द योगी अव्यय के योग से पास शब्द योगी अव्यय ॥

आओ—आ धातु अकर्मक आज्ञार्थ वर्तमान काल द्वितीय पुरुष बहुवचन तुम कर्ता आओ क्रियापद- अकर्मक कर्तरि प्रयोग ॥

---

१ पाठ ॥

छन्दो विचार ॥

प्र० छन्दो बोध का भी वर्णन कीजिये ?

उ० छन्दस्तो अनन्त हैं उन सबों का वर्णन कहां हो सक्ता है पर थोड़े प्रसिद्ध २ जो कि बहुधा भाषामें देख पड़ते हैं उनका वर्णन करता हूं सुनो छन्दः पद्य वृत्त वृत्ति ये पद्य के नाम हैं ये मात्रा और वर्ण के भेद से दो प्रकार के होते हैं जिन में मात्राओं की गणना होती है उन्हें मात्रा वृत्त और जिनमें वर्ण अर्त्थात् अक्षरों की गणना होती है उन्हें वर्णवृत्त कहते हैं ॥

मात्रा वृत्त का उदाहरण ॥

ज्ञानी तापस शूर कवि कोविद गुण आगार ।
केहि की लोभ विडम्बना कीन्हन यहि संसार ॥ १ ॥

वर्ण वृत्त का उदाहरण ॥

नमामीशमीशाननिर्व्वाणरूपंविभुं व्यापकम् ब्रह्मवेदस्वरूपम् ।
अजन्निर्गुणन्निर्व्विकल्पन्निरीहंचिदाकाशमाकाशवासम्भजेऽहम् ॥ २ ॥

ह्रस्व और दीर्घ स्वर के भेद से तीन २ अक्षरके ८ गण मगण नगण भगण जगण सगण यगण रगण तगण बनतेहैं लघुका चिन्ह (।) औरगुरुका (ऽ) यहहै ॥

आदि मध्य अव सान में भजस होहिं गुरु जानु ।
यरत होहिं लघु क्रमहिं सों मन गुरु लघु सब मानु ॥ ३ ॥
मय भनये सुख देत हैं रस तज ये दुख देत ।
सुखद धरत त्यागत दुखद प्रथमहिं लोग सचेत ॥ ४ ॥

मगण (ऽ ऽ ऽ)	श्रीगङ्गा	सुख	पद्य के आदि में आने से जो
यगण (। ऽ ऽ)	भवानी	सुख	सुखद हैं सो वे सुख और जो
रगण (ऽ । ऽ)	कालिका	दुःख	दुःखद हैं वे दुःख देते हैं
सगण (। । ऽ)	मथुरा	दुःख	
तगण (ऽ ऽ ।)	श्रीसाम	दुःख	
जगण (। ऽ ।)	मुरारि	दुःख	
भगण (ऽ । ।)	बामन	सुख	
नगण (। । ।)	कलम	सुख	

२ पाठ ॥

प्र० मात्रा वृत्त के भेद और भी कहिये ?

उ० दोहा १ सोरठा २ पादाकुलक ३ चौपैया ४ पद्मावती ५ रोला-वृत्त ६ कुण्डलिका ७ बरवा ८ लवायी ९ हरिगीतिका १० आदि मात्रा वृत्त के भेद अनन्त हैं सोदाहरण लिखता हूं ॥

प्र० १—दोहा का लक्षण कहिये ?

उ० दोहा—छन्दस् के प्रथम और तृतीय चरण में तेरह २ और द्वितीय चतुर्थ में ग्यारह २ मात्रा होती हैं ॥

यथा ॥

श्रीमद वक्र न कीन्ह केहि प्रभुता बधिर न काहि ।
मृग नयनी के नयन शर के अस लागि न जाहि ॥ ५ ॥

प्र० २—सोरठा का लक्षण कहिये ?

उ० सोरठा—वृत्त के प्रथम तृतीय पाद में ग्यारह २ और द्वितीय चतुर्थ में तेरह २ मात्रा होती हैं ॥

यथा ॥

आयोरी घनश्याम एक सखी औचक कह्यो ।
विहसत निकसी बाम देखत दुख दूनों भयो ॥ ६ ॥

प्र० ३ पादाकुलक—पादाकुलक का लक्षण कहिये ?

उ० पादा कुलक के कि जिसे भाषामें चौपाई कहते हैं प्रत्येक पद में सोलह २ मात्रा होती हैं ॥

यथा ॥

जब ते राम व्याहि घर आये । नित नव मङ्गल मोद बधाये ॥
भुवन चारि दश भूधर भारी । सुकृत मेघ बरषहिं सुख वारी ॥ ७ ॥

प्र० ४—चौपैया का लक्षण कहिये ?

उ० चौपैया—वृत्त के प्रति चरण में तीस २ मात्रा होती हैं ॥

यथा ॥

प्रेम परायन अति चित चायन मित्र भावहिय लेखे ।
ऐसे प्रीतिवन्त प्राणी को कल न परै विन देखे ॥

मन में स्वारथ मुख परमारथ कपट प्रेम दर सावै ।
ऐसे मूढ़ मीत की सूरति सपनेहु मोहिं न भावै ॥ ८ ॥

प्र० ५—पद्मावती किसे कहते हैं ?

उ० जिसके प्रत्येक चरण में बत्तीस २ मात्रा होती हैं उसे पद्मावती वृत्त कहते हैं ॥

यथा ॥

विनती प्रभु मोरी मैं मति भोरी नाथ न बर मागौं आना ।
पद पद्म परागा रस अनुरागा मम मन मधुप करै पाना ॥
जिहि पद सुर सरिता परम पुनीता प्रकट भई शिव शीसधरी ।
सोई पद पङ्कज जिहि पूजत अजमम शिर धरेउ कृपालु हरी ॥ ९ ॥

प्र० ६—रोलावृत्त किसे कहते हैं ?

उ० जिसके प्रत्येक चरण में चौबीस २ मात्रा और ११ तेरह पर विश्राम अर्थात् ठहरने का स्थान होता है उसे रोला वृत्त कहते हैं ॥

यथा ॥

हे सीतेश दिनेश वंश पाथोज दिवा कर ।
प्रणत पाल नय पाल दीन बन्धो करुणा कर ॥
अज शङ्करनुत चरण शरण मागत मपि मामव ।
बानर धीवर शवर योषि दवने महिमा तव ॥ १० ॥

प्र० ७—कुण्डलिका किसे कहते हैं ?

उ० जिस वृत्तमें प्रथम १ दोहा फिर १ रोला औ सब १४४ मात्रा होती हैं उसे कुण्डलिका कहते हैं ॥

यथा ॥

विना विचारे जो करै सो पीछे पछि ताय ।
काम बिगारै आपनो जगमें होत हसाय ॥
जगमें होत हसाय चित्त में चैन न आवै ।
खान पान सम्मान राग रंग मन नहिं भावै ॥
कहि गिरिधर कवि राय दुःख कछु टरत नटारे ।
खटकत है दिन रात्रि कियो जो विना विचारे ॥ ११ ॥

प्र० ८—बरवाछन्दस् का क्या लक्षण है ?

उ० जिसके प्रथम और तृतीय पद में बारह २ और द्वितीय चतुर्त्थ में सात २ मात्रा होती हैं उसे बरवा छन्दस् कहते हैं ॥

यथा ॥

भज रघुपति पद पङ्कज त्यज सब काम ।
नित रोचन भय मोचन जाकर नाम ॥ १२ ॥

प्र० ९—लवाग्रीवृत्त किसे कहते हैं ?

उ० जिसके प्रत्येक चरण में अट्ठाईस २ मात्रा और अन्त्य वर्ण गुरु होते हैं उसे लवायी वृत्त कहते हैं ॥

यथा ॥

जेचरण शिव अज पूज्य रज शुभपरशि मुनि पतिनी तरी ।
नख निर्गता सुरवन्दिता त्रैलोक्य पावन सुर सरी ॥
ध्वज कुलिश अङ्कुश कञ्ज युत बन फिरत कण्टक किन्हलहे ।
पद कञ्ज द्वन्द्व मुकुन्द राम रमेश नित्य भजा महे ॥ १३ ॥

प्र० १०—हरिगीतिका का क्या लक्षण है ?

उ० जिसके प्रत्येक पाद में अट्ठाईस २ मात्रा और १६ बारह मात्रा पर विश्राम और चारों पदों के अन्त में एक २ रगण होता है उसे हरि गीतिका वृत्त कहते हैं ॥

यथा ॥

नन्दलाल हित नरबाल तुलसी आल बाल सु लोपहीं ।
पुनि दीपबारि संवारि आश्विक मास कार्त्तिक दीपहीं ॥
मन पूतकरि जन द्यूत खेलि जगाय माधव गावहीं ।
सखि कूबरी फंद फन्दि कै ब्रजचन्द्र काह्यक आवहीं ॥ १४ ॥

---

३ पाठ ॥

वर्ण वृत्त ॥

प्र० वर्णवृत्त के भी कुछ भेद छपाकर समझाइये ?

उ० चामरवृत्त १ पञ्चचामर २ तोटकवृत्त ३ भुजङ्गप्रयात ४ आदि अनेक हैं सोदाहरण लिखता हूं ॥

प्र० १—चामरवृत्त का लक्षण कहिये ?

उ० जिसमें गुरु लघु के क्रमसे सोलह २ अक्षर का चरण होता है उसे चामर वृत्त कहतेहैं ॥

यथा ॥

नाम कर्म्म मात मोहिं देहु ते नमस्सदा ।
सो सुनी कहीतहीं गहो स्वनाम अर्त्थदा ॥
काल राचि है तुहीं तुहीं अडोल बालिका ।
नाम तोर जे कहैं तिन्हैं करो स्वकालिका ॥ १५ ॥

प्र० २—पञ्चचामर का क्या लक्षण है ?

उ० इसके विपरीत अर्त्थात् लघु गुरु के क्रम से इतनेहीं वर्णों का पञ्च-चामर छन्दस् होता है ॥

यथा ॥

नमामि भक्त वत्सल कृपालु शील कोमलम् ।
भजामि ते पदा म्बुजं अकामिनां स्वधामदम् ॥
निकाम श्याम सुन्दर भवाम्बु नाथ मन्दरम् ।
प्रफुल्ल कञ्ज लोचन म्मदादि दोष मोचनम् ॥ १६ ॥

प्र० ३—तोटकवृत्त का लक्षण कहिये ?

उ० जिसके प्रत्येक पाद में चार २ सगण होते हैं उसे तोटक वृत्त कहते हैं ॥

यथा ॥

जय राम रमा रमणं शमन भवताप भया कुल पाहि जनम् ।
अव धेश सुरेश रमेश विभो शरणा गत मागत पाहि प्रभो ॥ १७ ॥

प्र० ४—भुजङ्गप्रयात किसे कहते हैं ?

उ० जिसके प्रत्येक चरणमें चार २ यगण होते हैं उसे भुजङ्ग प्रयात वृत्त कहते हैं ॥

यथा ॥

निराकार मोङ्कार मूलन्तुरीय ङ्गिरा ज्ञान गोतीत मीश ङ्गिरीशम् ।
करालम्महा काल कालङ्कृपालुम् गुणागार संसार पारन्न तोऽहम् ॥ १८

अधिक भेद और उदाहरण ग्रन्थ की बहुलता से नहीं लिखे ॥

इति



कठिन शब्दोंका कोष ॥



ना० = नाम, वि० ना० = विशेष नाम-, पुँ० = पुँल्लिङ्ग, स्त्री० = स्त्रीलिंग, वि० = विशेषण अ० = अव्यय, स० ना० = सर्वनाम ॥

अ

अंक ना० पुँ० चिन्ह निशानी संख्या ...

अंगांगिभाव ना० पुँ० शरीरके अवयवों [का संबंध

अंत्य वि० अन्तका ...

अंत्याक्षर- ना० पुँ० अंतका अक्षर ...

अकारान्त वि० जिस शब्द के अंत में [अकार है

अज् झल ना० पुँ० अच् और हल् [अर्थात् स्वर और व्यंजन

अदर्शन ना० पुँ० नहीं देख पड़ना ...

अधिकार ना० पुँ० एक शब्द का संबंध दूसरे शब्दकी तरफ़ होकर एक केरूप में विकार करने की सामर्थ्य [दूसरेमें रहतीहै वह सामर्थ्य

अध्याहार ना० पुँ० वाक्यको पूराकरने [केलिये बाहरसे शब्द लाना

अध्याहृत-वि० जिसशब्दकाअध्याहार [किया है

अनिश्चितता ना० स्त्री० जिसकानिश्चय [नहींहै उसकी स्थितिअनिर्णीतपन

अनुकरण ना० पुँ० नक़ल ...

अनुनासिक वि० नाकसे जिन अक्षरों [का उच्चारण होता है

अनुभव ना० पुँ० मानस ज्ञान ...

अनुयायी ना० पुँ० पीछेजानेवाला, सेवक

अनुरोध ना० पुँ० अनुरूपहोना, वाकरना

अनुसार ना० पुँ० अनुरूपहोना, अथवा [अनुरूप

अनेकवर्णात्मक वि० जिसशब्दमेंएकसे [अधिकवर्ण हैं

अन्य वि० दूसरा कोई ...

अन्वय ना० ० वाक्यकेशब्दोंका परस्पर [संबंध

अपभ्रंश ना० पुँ० अपशब्द अशुद्धशब्द

अपवाद ना० पुँ० नियमसे बाहरहोने [वालेशब्द इ०

अब्ज ना० पुँ० कमल ...

अब्भरण ना० पुँ० पानीका भरना ...

अभाव ना० पुँ० नहोना ...

अर्थानुरोध ना० पुँ० अर्थकेअनुरूपहोना

अर्पण ना० पुँ० देना ...

अवयव ना० पुँ० अंग वा शरीर का भाग

अवशिष्ट वि० बाकी

अवश्य वि० जो चाहिये ...
अव्यय जिनशब्दोंका कारकत्व नहींहै

आ

आकारान्त वि०जिसकेअंतमेंआकार है
आकृति ना०स्त्री० आकार, सूरत ...
आकृष्ट वि० खींचा हुआ ...
आच्छादन ना० पुँ० वस्त्र, ढकना ...
आज्ञार्थ वि० आज्ञाकाबोध जिससे [होता है
आदरार्थवि०जिसमेंप्रतिष्ठापाईजातीहै
आदेश—जो एक अक्षर के स्थान में [दूसरा अक्षर होजावे
आदान ना० पुँ० लेना ...
आद्य वि० आदिका ...
आवृत्ति ना० स्त्री० दोहराना ...
आशंसार्थ वि० जिससे इच्छाका बोध [होता है
आश्रय ना० पुँ० आसरा, समीपता ...
आसन्न वि० नज़दीक का ...

इ

इकारान्त वि० जिसकेअंतमेंइकारहै ...
इन्द्र ना० पुँ० इन्द्र, मालिक, राजा,

ई

ईकारांत वि० जिसशब्दके अंतमेंई है
ईर्षा ना० स्त्री डाह द्वेष ...

उ

उकारांत वि० जिसकेअंतमें उकार है
उक्त वि० कहा हुआ ...
उड्डीन ना० स्त्री० उडान (संस्कृतमें-नपुंसक है)
उत्कर्ष ना० पुँ० बढ़ती ...
उत्साह ना० पुँ० आनंद खुशी ...
उद्गारवाची वि० हर्षदुःखादि भाव [बताने वाला
उपनाम ना० पुँ० कुटुम्बका नाम ...
उपमान ना०पुँ० जिसकी तुल्यताकही [जाय
उपमेय ना० वा०वि० पुँ० जो तुल्यहो
उपांत्य ना०पुँ० अंत्यं अक्षरकापूर्ववर्ण

ऊ

ऊकारांत वि० जिसकेअन्तमें ऊ होवे
ऊर्ध्व अ० ऊपर ...
ऊर्मिला ना० स्त्री० विशेषनाम ...

ऋ

ऋकारांत वि० जिसकेअन्तमेंऋकारहै

ए

एकवर्णात्मक वि० जिस शब्दमें एक [अक्षर है
एकारांत वि० जिसकेअंतमेंएकार है
एकैक वि० प्रत्येक ...
एतच्चंद्रमण्डल ना०पुँ० यहचांदकाघेरा [वा गेला

ऐ

ऐकारांतवि०जिसशब्दकेअंतमेंऐकारहै
ऐश्वर्य ना०पुँ० विभव,माहात्म्य, संपदा

ओ

ओकारांत वि० जिसशब्द के अन्त में [ओकार है
ओष्ठ ना० पुँ० ओंठ ...

ओ

ओकारांत वि० जिसशब्द के अन्तमें [ओकार है

औदार्य ना० पुँ० दातापन ...

क

कंठ ना० पुँ० कंठा ...

करी ना०पुँ० छाती ...

कर्तृकर्मभाव ना०पुँ० करनेवाला और [कियाहुआ काम इनका संबंध

कर्मवाच्य वि० जिस क्रिया पदका कर्म [उद्देश्य होताहै

कविता ना० स्त्री० पद्य श्लोक ...

काना ना० पुँ० अक्षर की खड़ी लकीर [जैसा ा

कारण ना० पुँ० निमित्त ...

कृति ना०स्त्री० काम, करना ...

केवल अ० मात्र ...

कोष्ठक ना० पुँ० तख़्ता ...

क्रियान्वयित्व ना०पुँ० क्रियापदकेतरफ़ [संबंधरखना

ख

खद्योत ना० पुँ० जुगनू ...

ग

गत्यर्थ वि० जिसकाअर्थगतिहै वा जिस [मेगतिकाअर्थ पायाजाताहै

गद्य ना०पुँ० छंदविनावाक्य ...

गर्भित वि० गर्भ अर्थात्पेटमेंरहनेवाला

गुणाधिकार ना० पुँ० गुणकाअधिकपन

गौरव ना०पुँ० बड़ापन, दृढ़ता ...

च

चक्रपाणि ना०पुँ० जिसके हाथमेंचक्र है [अर्थात् विष्णु

चिन्ह ना०पुँ निशानी ...

ज

जगदादि ना०पुँ० पृथ्वीकाआरम्भ ...

जन्यजनकभाव ना० पुँ० उत्पन्न करने वाला और उत्पन्न कीहुई चीज़ इनका [संबंध

जातिगुणविशिष्टव्यक्ति ना०स्त्री० जात का गुण जिसव्यक्ति में पायाजाता है [वहव्यक्ति

ड

डमरू ना० पुँ० वाद्यविशेष ...

डाह ना०पुँ० द्वेष ...

ढ

ढव ना० पुँ० चाल, डौल ...

त

तच्छरीर ना० पुँ० उसकी देह ...

तट्टीका ना० पुँ० उसकाटीका ...

तत्तद्वर्णांत वि० वह२वर्णजिसकेअंतमें [हैं

तदंतर्गत वि०उसकेभीतरगयाहुआ ...

तद्गत वि० उसमेंगयाहुआ ...

तद्गुणविशिष्ट वि० वहगुणजिसमेंहै ...

तद्धवि ना० पुँ० उसकेयज्ञकाद्रव्य ...

तद्भय ना० पुँ० उससेडर ...

तद्भावबोधक वि० उसभावकाबोधक- [रनेवाला

तन्नेत्र ना० पुँ० उसकी आंख ...
तन्मय वि० उससे भराहुआ ...
तन्मात्र अ० केवल वह ...
तल्लीला ना० स्त्री० उसकाखेल ...
तवत्कार ना० पुँ० तेरा (लिखाहुआ) [त्वकार
तुलना ना० स्त्री० तुला करना, समा- [नता देखना
तृतीयांत वि० जिसके अंतमें तृतीया [का प्रत्यय है
तेजोमय वि०तेज वाप्रकाशसेभराहुआ

द

दिग्भाग ना०पुँ० दिशाकाभाग, देश...
दीर्घ वि० लम्बा ...
दुर्नीति ना० स्त्री० बुरीचाल ...
दृढ़ वि० बलवान् जिसमेंजोर होवे...
देवेंद्र ना० पुँ० देवोंकाइन्द्र ...
देव्याश्रय ना०पुँ० देवीकीसहायता...
द्रव्यजन्यभाव ना०पुँ० चीजऔरउससे [बनाहुआपदार्थ इनकासंबंध
द्व्यक्षर वि० जिसमें दो अक्षर हैं ...
द्वितीयांत वि० जिसके अंतमें द्वितीया [का प्रत्यय है

ध

धर्मा[illegible] ना०स्त्री० धर्मकी आज्ञा ...
[illegible]त वि० धातुसेबना हुआ ...
[illegible] ना०पुँ० दौड़नेवाला खर्गोश
[illegible]० धातुमेइतर वा अन्य

धिक् अ० तुच्छतावा तिरस्कारबोधक [वा तिरस्कार
ध्वनि ना०पुँ०स्त्री० आवाज ...

न

नायक ना०पुँ० मुख्य, मालिक ...
नासिका ना० स्त्री० नाक ...
निकट अ० नजदीक ...
निकृष्ट अ० वि० खराब ...
नियम ना० पुँ० कायदा ...
निर्णय ना० पुँ० निश्चय इनसाफ़ ...
निर्विकार वि० जिसमें कुछ फेरफार [नहीं हुआ
निवृत्ति ना०स्त्री० रोकना ...
निःशंक वि०निःसंदेह ...
निःषठ वि० अतिमूर्ख ...
नीरस वि० निरस, फीका ये दोनों [शब्द हिन्दीमें ह्रस्व नि से लिखतेहैं
नीरोगी वि० चंगा ...
न्यूनता ना०स्त्री० } घटती
न्यूनत्व ना० पुँ० }

प

पंक्ति ना० स्त्री० पांति ...
पंचम्यंत वि० जिसके अंतमें पंचमीका [प्रत्ययहै
परस्पर अ० आपसमें ...
परिगणन ना०पुँ० } मापना
परमिति ना०स्त्री० }
पश्चात् अ० पीछेसे ...
पारिभाषिक वि० शास्त्रमें आसानीके [लिये जो संज्ञामानलीहै

पावक नाo पुँo आग ...
पितृऋण नाo पुँo पिताका क़र्ज़ ...
पित्राज्ञा नाo स्त्रीo बापकी आज्ञा ...
पीताम्बर नाo पुँo जिसका वस्त्र पीला
[है अर्थात् विष्णु
पूर्णता नाo स्त्रीo पूरापन ...
पूर्ववत् अo पहिले के समान ...
पूर्वोक्त विo पहिले कहा हुआ ...
पृथक्करण नाo पुँo अलग २ करना ...
प्रकरण नाo पुँo वर्णन ...
प्रकृति नाo स्त्रीo मूलरूप जिससे वि-
[भक्त्यादि कार्य होता है
प्रचार नाo पुँo व्यवहार-चाल- ...
प्रतिबिम्ब नाo पुँo परछाया ...
प्रतिष्ठा नाo स्त्रीo सन्मान ...
प्रत्येक सo नाo हर एक ...
प्रथमांत विo जो नाम वा सर्वनाम
[प्रथमा विभक्तिमें है
प्रयोजन नाo पुँo काम उपयोग ...
प्रयोग नाo पुँo योजना ...
प्रवृत्ति नाo स्त्रीo किसी काममें लगना
[वा लगाना वा यत्न
प्रांत नाo पुँo देशका भाग ...
प्राय: अo बहुधा अक्सर ...
प्रेरक नाo पुँo कराने वाला ...
प्रौढ़ विo सभ्य-विद्वान लोगोंका ...

ब

बहुधा } अo बारबार
बहुश: }

बहुत्व } नाo पुँo बहुपन
बाहुल्य }

भ

भरण नाo पुँo भरना ...
भवद्दर्शन नाo पुँo आपका दर्शन ...
भाग नाo पुँo हिस्सह अंश ...
भानु नाo पुँo सूरज ...
भाव नाo पुँo भेद उद्देश ...
भू नाo स्त्रीo पृथ्वी ...
भेद नाo पुँo प्रकार ...

म

मध्य नाo पुँo बीच विo बीचका ...
मनोभाव नाo पुँo मनकी अवस्थाइच्छा
मन्वंतर नाo पुँo दो मनुओं के बीच
[का काल वा अन्तर
मर्यादा नाo स्त्रीo हद्द ...
महद्भाग्य नाo पुँo बड़ा नसीब ...
महर्षि नाo पुँo बड़ाऋषि ...
महैश्वर्य नाo पुँo बड़ी संपत् ...
माहात्म्य नाo पुँo मनका बड़ापन ...
मिश्रित विo दूसरे से मिला हुआ ...
मूलस्थिति नाoस्त्रीo पहली स्थिति ...
मृत्युंजय नाo पुँo महादेव ...

य

यथाक्रम अo जैसाक्रमहै वैसेक्रमसे ...
यथायोग्य अo जैसा चाहिये वैसा ...
युक्त विo जुड़ा हुआ उचित ...
योग नाo पुँo जोड़ना ...
योग्यता नाo स्त्रीo उचितता ...

र

रमेश ना० स्त्री० लक्ष्मी का पतिविष्णु

रूपांतर ना० पुँ० दूसरा रूप ...

ल

लक्षण ना० पुँ० व्याख्या, बयान, वर्णन

लाकृति ना० स्त्री० आकार रूप ...

व

वत् अ० समान ...

वक्ष्यमाण वि० जो कहा जायगा ...

वस्तुतः अ० तत्वतः ...

वागीश ना० पुँ० अच्छा बोलने वाला [बृहस्पति

वाग्घरि ना० पुँ० (वाचा और हरि) वाचा [को हरण करने वाला

वाङ्मन ना० पुँ० वाचा और मन ...

विकार ना० पुँ० फ़र्क़ बदल ...

विकृति वि० बदला हुआ ...

विकीर्ण वि० फैलाया हुआ ...

विजातीय वि० भिन्न जातका ...

विधवा ना० पुँ० जिसकापतिनहींरांड

विधेयार्थपूरक ना० पुँ० वा वि० विधेय [का अर्थ पूरा करने वाला

विधेयार्थवर्धक ना०पुँ० वि० विधेय का [अर्थ बढ़ाने वाला

विभक्त्यन्त वि० जिसनाम वा सर्वनामके अंत में विभक्ति का प्रत्यय होवे

विवक्षित वि० इष्ट ...

विवेचन ना० पुँ० विचार ...

विषय ना० पुँ० बात ...

विस्मयादि बोधक वि० आश्चर्यादि- [मनोभावों का वाचक

वृत्ति ना० स्त्री० आचरण स्वभाव, धंदा

वैयाकरणलोग वि-ब-व व्याकरणजानने [वाले लोग

व्यतिरिक्त वि० अन्य ...

व्यापकता ना० स्त्री० फैलाव ...

व्यापारार्थ वि० जिसका अर्थ व्यापारहै

व्युत्पत्ति ना० स्त्री० उत्पत्ति ...

श

शक्यता ना० स्त्री० होने और करने की [योग्यता वा संभव

शयन ना० पुँ० सोना० वा बिछौना ...

शालक ना० पुँ० साला ...

शेष वि० बाक़ी ...

श्रुत वि० सुनाहुआ

ष

षड्हृदय ना० पुँ० छह हृदय ...

षण्मास ना० पुँ० छः मास ...

षष्ठ वि० छठवां ...

षष्ठ्यन्त वि०जिसके अंतमें षष्ठीका प्रत्यय [होवे

स

संकेत ना० पुँ० शर्त ...

संपात ना० पुँ० गिरना ...

संयुक्त वि० जुड़ाहुआ ...

संयोग ना० पुँ० जोड़ ...

संशय ना० पुँ० सन्देह ...

संस्कृतानभिज्ञ वि० संस्कृत भाषा न [जानने वाले लोग

सजातीय वि० एक जातका ...

सच्छास्त्र ना० पुँ० अच्छाशास्त्र ...